साहित्य सृजन की अनमोल धरोहर

सर्व संभाव्यते त्वयि

उपलब्धि

तुममें सब संभव है !

अक्टूबर 2025 | अंक 25

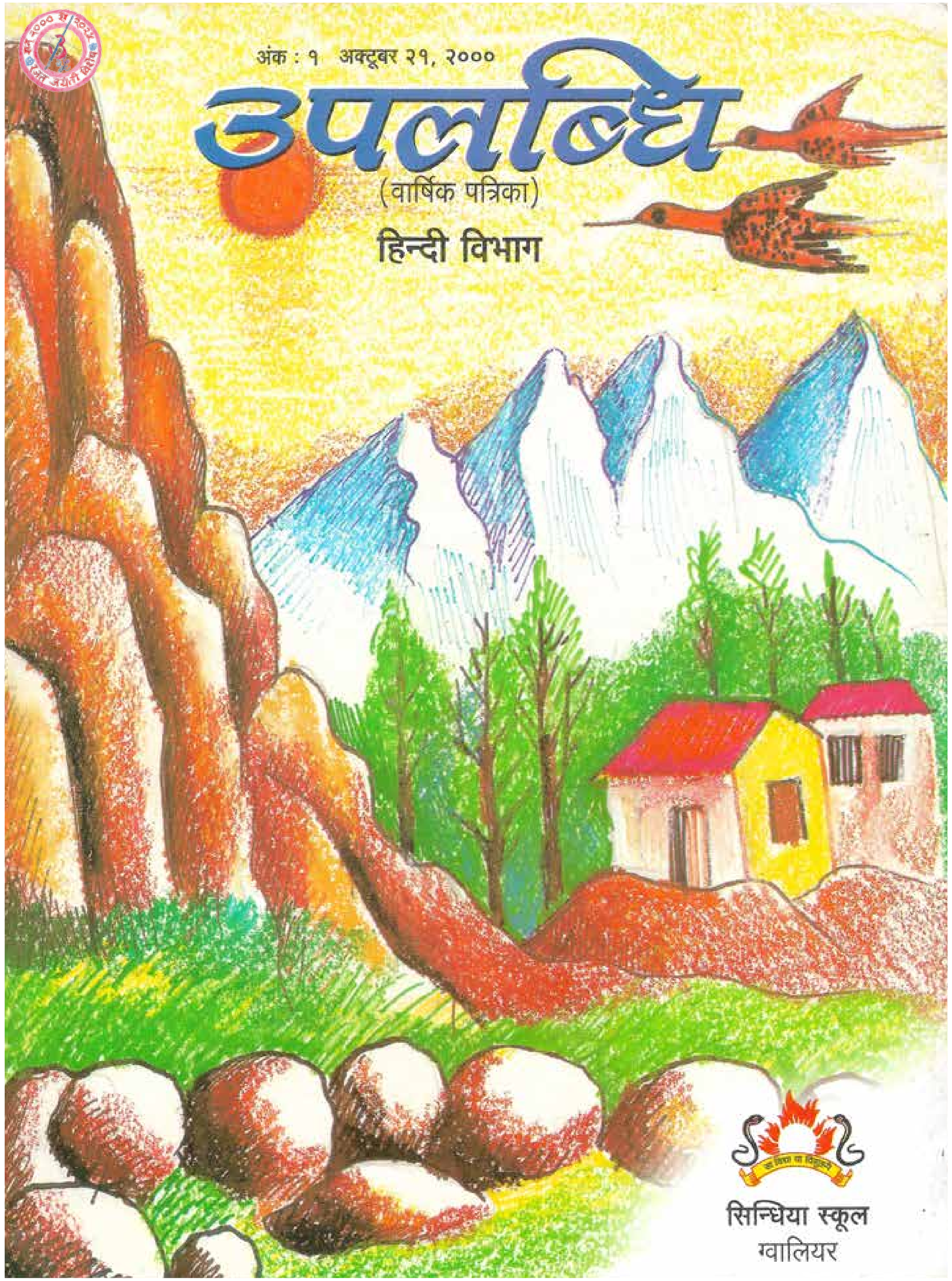

संरक्षक :
श्री एन.के. तेवारी
प्राचार्य

प्रधान संपादक :
डॉ. बी.एस. भाकुनी

संपादक-मंडल :
नन्द किशोर अग्रवाल
जुगल चनाना
सिद्धार्थ किलेदार
शाश्वत पाण्डेय
निखिल शरण

तकनीकी-सहयोग :
जितेन्द्र जावले

श्री एन.के. तेवारी

शुभकामना-सन्देश

हिन्दी विभाग द्वारा प्रकाशित वार्षिक पत्रिका 'उपलब्धि' एक मौलिक एवं उपयोगी पत्रिका है। जिसमें छात्रों ने सामाजिक, धार्मिक, राष्ट्रीय एवं शैक्षिक रचनाओं का सृजन कर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है, जो हमारे लिए एक गौरव का विषय है।

हिन्दी विभाग का यह प्रथम प्रयास सराहनीय है। यह विभाग का एक अनुपम योगदान है। मैं इस पत्रिका के संपादक मण्डल को भी साधुवाद प्रदान करता हूँ जिनके अथक परिश्रम एवं संयम से यह कार्य सम्पन्न हुआ। अतः मेरी यही शुभ कामना है कि भविष्य में भी यह पत्रिका सुचारु रूप से प्रकाशित होकर छात्रों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

एन.के. तेवारी
प्राचार्य

सम्पादक मंडल

बायें से : जुगल चनाना, निखिल शरण, डॉ. बी.एस. भाकुनी (प्रधान संपादक), नन्द किशोर (उप-संपादक), शाश्वत पाण्डेय, सिद्धार्थ किलेदार

श्री बी.एस. सक्सेना

संदेश

परम हर्ष का विषय है कि सिन्धिया स्कूल का हिन्दी विभाग इस वर्ष वार्षिक पत्रिका 'उपलब्धि' का प्रकाशन करने जा रहा है। मुझे आशा है कि यह पत्रिका शिक्षारत छात्रों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी। भूतपूर्व छात्रों एवं अभिभावकों के लिए प्रेरणा स्रोत होगी। मैं पत्रिका की सफलता की कामना करता हूँ तथा सम्पादक महोदय को इस अति उत्तम प्रयास हेतु अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ। सधन्यवाद !

बी.एस. सक्सेना
विभागाध्यक्ष
हिन्दी-विभाग

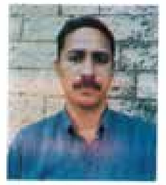

डॉ. बी.एस. भाकुनी

सम्पादकीय

सिंधिया स्कूल हिन्दी विभाग की यह वार्षिक पत्रिका 'उपलब्धि' छात्रों की सृजनात्मक प्रतिभा के प्रकाशन का महत्वपूर्ण अंग है। उनकी सृजनात्मक प्रतिभाओं को अंकुरित, पोषित एवं पल्लवित करने के लिए हमारा यह प्रयास, 'उपलब्धि' के रूप में आपके सम्मुख है।

साहित्य सर्जना अपने आप में कठिन साधना है और प्रतिभा साधना सृजन की अनन्य सहयोगिनी है। साधना के बिना प्रतिभाओं के विकास को समुचित परिक्षेत्र और सही दिशा नहीं मिल पाती है। अस्तु, इस 'उपलब्धि' के माध्यम से छात्रों में छिपा सृजनात्मक प्रतिभा के प्रकाशन का अवसर है, वह स्वयंमेव इसकी उपयोगिता सिद्ध करता है।

जहाँ तक प्रस्तुत 'पत्रिका' का प्रश्न है यह हमारे नवोदित एवं भावी रचनाकारों का अल्प प्रयास मात्र है, जो उनकी अभिव्यक्ति क्षमता को प्रदर्शित करता है। सम्पादन की प्रक्रिया में भी रचना के मूल रूप को सुरक्षित रखने का प्रयास किया गया है। एक विद्यालयीय पत्रिका होने के नाते हमारी अपनी कुछ परिसीमाएँ, जिनसे हम प्रतिबद्ध हैं, अतः आशा है कि आप इस तथ्य को ध्यान में रखकर इसका मूल्यांकन करेंगे। तो ये हैं उपलब्धि रूपी उद्यान के विकसित कुछ पुष्प ......

डॉ. बी.एस. भाकुनी
प्रधान सम्पादक

अनुक्रम

				पृष्ठ
१.	सपने	--	नन्द किशोर	१
२.	आजादी के पुतले	--	अनन्त कौशिक	२
३.	परिवर्तन	--	अभिषेक अनत	४
४.	जीवन और शिक्षा	--	श्रीमती विनीता श्रीवास्तव	५
५.	प्रेम	--	कुमार उत्कर्ष	७
६.	एक साक्षात्कार	--	संपादक मंडल	८
७.	समझ नहीं आता	--	सिद्धार्थ किलेदार	११
८.	हिन्दुस्तानी	--	श्री जितेन्द्र जावले	१३
९.	जिन्दगी	--	श्री ओ.एन. दीक्षित	१५
१०.	प्रणाम	--	शाश्वत पाण्डेय	१६
११.	शुभकामना	--	डॉ. बी.एस. भाकुनी	१७
१२.	कर्मण्येवाधिकारस्ते	--	श्री वी.एस. सक्सेना	१८
१३.	मनुष्य तथा प्रकृति	--	आर्यमन टण्डन	१९
१४.	नियति	--	अपूर्व	२०
१५.	जागो पाठक	--	आदित्य शर्मा	२२
१६.	हिन्दी क्षेत्र में पुस्तक और पाठक समस्या	--	श्री मनोज मिश्रा	२४
१७.	हिन्दुस्तान हमारा है	--	वर्चस्व पाण्डेय	२८
१८.	अच्छी संगति का महत्व	--	रोहित वर्धन	२८
१९.	मानव और प्रकृति	--	श्रीमती रक्षा सीरिया	२९
२०.	मुझे मौत चाहिये क्यों ?	--	हनित सिंह टुटेजा	३०
२१.	तुलसी - एक अनमोल वनस्पति	--	श्री ए.एन. जायसवाल	३१
२२.	फर्ज	--	सौरभ कुमार शाह	३२
२३.	कर्तव्य के प्रति बढ़ती उदासीनता	--	अविनाश कुमार	३३
२४.	शिक्षा और हमारी संस्था	--	डॉ. बी.एस. भाकुनी	३४
२५.	हिन्दी विभाग - क्रिया कलाप			३७

एक साक्षात्कार

(पूर्व प्राचार्य, श्री ए.एन.दर)

प्र. आप सिंधिया स्कूल के पूर्व छात्र हैं। जब कि आवासीय विद्यालय के बहुत कम छात्र शिक्षक बनना चाहते हैं। आपके मन में शिक्षक बनने की इच्छा क्यों उत्पन्न हुई ?

उ. सिंधिया स्कूल में शिक्षक को एक विशेष आदर दिया जाता है। शिक्षक के प्रति छात्रों एवं अभिभावकों की विशेष आस्था रहती है। मेरे पिता स्व. श्री जे.एन. दर जी को बहुत आदर - सम्मान मिला, जिससे वे हमेशा सन्तुष्ट रहते थे। उन्हीं से मैंने शिक्षक बनने की प्रेरणा ली।

प्र. आप अंग्रेजी के शिक्षक रहे फिर भी हिन्दी के प्रति आपका प्रेम अधिक क्यों है ?

उ. अंग्रेजी का शिक्षक बनना मेरे लिये मजबूरी थी क्योंकि मैंने देखा, पब्लिक स्कूलों में अंग्रेजी शिक्षक को अधिक मान-सम्मान मिलता था और वे आसानी से प्राचार्य का पद प्राप्त कर लेते हैं इसके साथ ही मैंने अपने शिक्षक जीवन में यह भी अनुभव किया कि, पब्लिक स्कूल में हिन्दी के शिक्षक कुछ हीन भावना से ग्रसित रहते थे। खैर मैं भाग्यशाली था, मुझे छात्र जीवन में दो हिन्दी शिक्षकों ने श्री देवेन्द्र नारायण वर्मा और श्री स्वामी शरण श्रीवास्तव ने अधिक प्रेरित किया और हिन्दी के प्रति मेरी

रुचि बढ़ती गई। मैं यही कहूँगा अपनी इस भाषा से हम अपनी संस्कृति और सभ्यता का आदर कर सकते हैं तथा स्वयं में संस्कारित हो सकते हैं।

प्र. आवासीय विद्यालयों में हिन्दी उपेक्षित होती है। आप के दृष्टिकोण से क्या यह उचित है ?

उ. मैं इस प्रश्न से सहमत नहीं हूँ, मैंने हिन्दी को कभी भी उपेक्षित नहीं समझा। मैं पहले ही कह चुका हूँ, हमारी भाषा हमें सभ्य और संस्कारित बनाती है और इस विद्यालय में जो कुछ भी मैंने सीखा है वह सब कुछ मेरे हिन्दी विभाग की ही प्रेरणा है।

प्र. आप के जीवन की सबसे बड़ी खुशी क्या है ?

उ. मेरी संस्था के छात्रों का स्वर्णिम भविष्य।

प्र. आपके जीवन का सबसे बुरा दिन कौन सा रहा है ?

उ. अभी तक के मेरे जीवन में कोई भी बुरा दिन नहीं रहा है।

प्र. आप ने हिन्दी विभाग को वार्षिक पत्रिका प्रकाशित करने के लिये प्रेरित किया, इसके पीछे

मुख्य कारण क्या है ?

उ. मैंने देखा इस संस्था में हिन्दी के प्रति लोगों की अधिक आस्था है और उसके लेखों की गहराई अंग्रेजी भाषा के लेखों से अधिक है। मैंने इस संस्था के 'रिव्यू' में कई हिन्दी के लेख पढ़े, उनसे मैं प्रेरित हुआ और प्रेरित हो कर हिन्दी-विभाग के समक्ष एक वार्षिक पत्रिका प्रकाशित करने का सुझाव रखा।

प्र. सिंधिया स्कूल के कार्यकाल में आपकी सबसे बड़ी उपलब्धि क्या रही ?

उ. शान्तिमय एवं गौरवपूर्ण जीवन।

प्र. परिश्रमी एवं ईमानदार व्यक्ति आज के समय की कसौटी पर खरा नहीं उतरता है, आप के विचार से क्या यह सच है ?

उ. यह प्रश्न मेरे दृष्टिकोण से सही नहीं है। वास्तव में परिश्रमी और निष्ठावान व्यक्ति कभी भी असफल नहीं हो सकता है। अगर आप ईमानदारी को धन की कसौटी पर कसना चाहते हैं तो यह उचित नहीं है क्योंकि परिश्रमी और ईमानदार व्यक्ति के लिये धन का कोई औचित्य ही नहीं होता है। उसे तो धन से भी अधिक सम्मान और आदर उसके अपने गुणों से मिलता है।

प्र. जयपुर में आपकी देखरेख में एक नई संस्था का जन्म हो रहा है। वहाँ पर आपकी पहली प्राथमिकता क्या होगी ?

उ. जीवन में विश्वास।

सम्पादक मंडल

"अध्यापक राष्ट्र की संस्कृति के चतुर माली होते हैं। वे संस्कारों की जड़ों में खाद देते हैं और अपने श्रम से उन्हें सींच-सींच कर महाप्राण शक्तियाँ बनाते हैं।"
-महर्षि अरविन्द

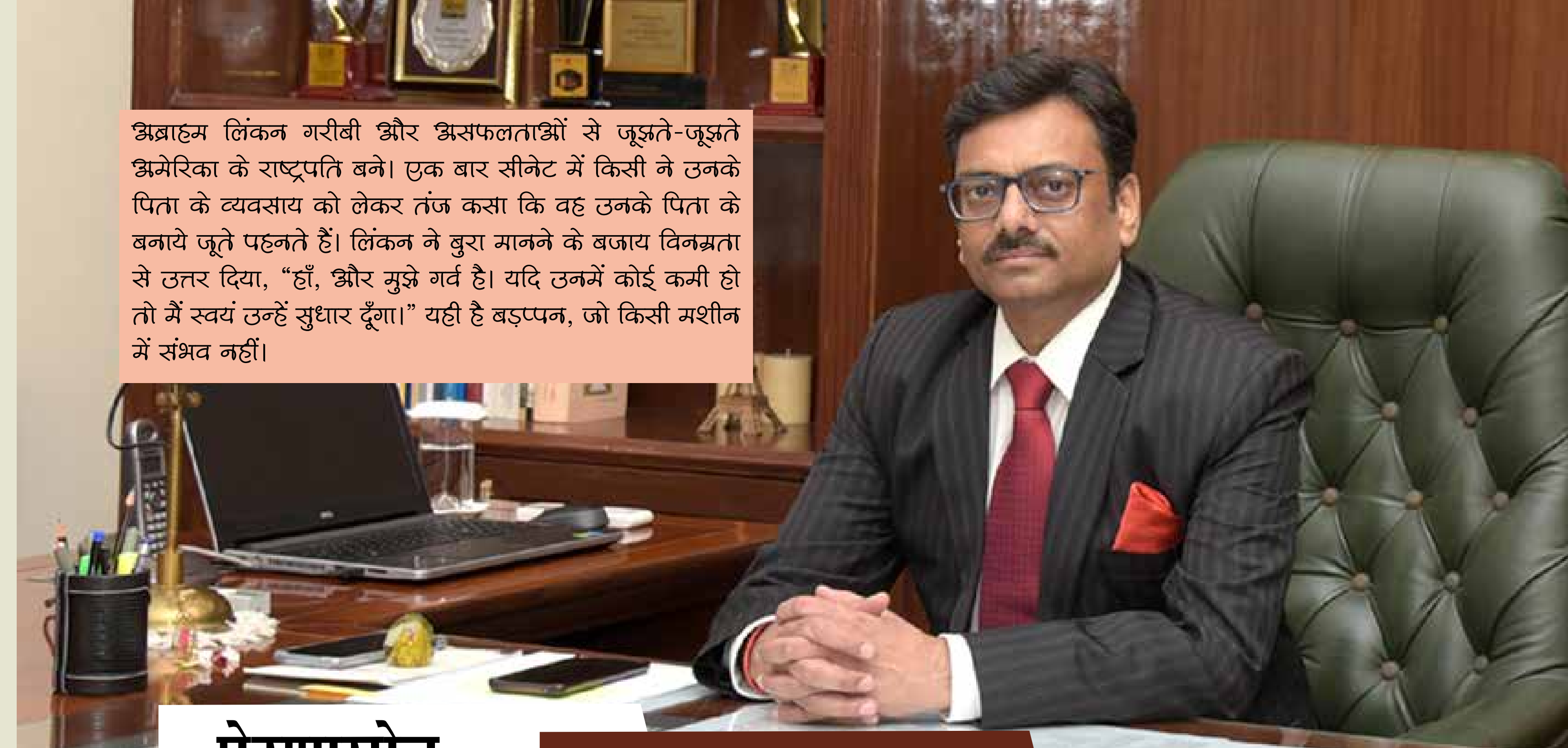

अब्राहम लिंकन गरीबी और असफलताओं से जूझते-जूझते अमेरिका के राष्ट्रपति बने। एक बार सीनेट में किसी ने उनके पिता के व्यवसाय को लेकर तंज कसा कि वह उनके पिता के बनाये जूते पहनते हैं। लिंकन ने बुरा मानने के बजाय विनम्रता से उत्तर दिया, "हाँ, और मुझे गर्व है। यदि उनमें कोई कमी हो तो मैं स्वयं उन्हें सुधार दूँगा।" यही है बड़प्पन, जो किसी मशीन में संभव नहीं।

प्रेरणास्रोत

श्री अजय सिंह, प्राचार्य

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) ने हमारे चारों ओर अपनी उपस्थिति दर्ज कर दी है। एक क्लिक पर जटिल उत्तर, एक पल में असंभव से लगने वाले काम संभव है। परंतु इस चमक-दमक के बीच एक प्रश्न मन को कुरेदता है। क्या मशीनें वास्तव में मनुष्य की जगह ले सकती हैं? शायद नहीं! क्योंकि मनुष्य केवल बुद्धि नहीं है, वह संवेदना भी है। मनुष्य केवल गणना नहीं करता, वह संबंध बनाता है, करुणा दिखाता है, अपमान में भी गरिमा बनाए रखता है। यही अंतर है ह्यूमन इंटेलिजेंस और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में।

एक बार की बात है कि एक जहाज में खराबी आ गई और उसे किनारे पर लगा दिया गया। कितनों ने कितनी ही कोशिशें कर लीं, मगर जहाज टस से मस नहीं हुआ। तब एक मामूली-सा यंत्री आया। जहाज के अलग-अलग हिस्सों में हथौड़ा चलाया। फिर एक खास जगह हथौड़े को सधे हाथ से ठोका और बोला, "जहाज चलाओ!" जहाज चल गया। यंत्री ने दस हजार का बिल थमा दिया। कप्तान ने आपत्ति लेते हुए कहा, "एक हथौड़ा चलाने के दस हजार?" तब यंत्री ने विनम्रता से कहा, "जी नहीं, एक हथौड़ा चलाने के तो कुछ सौ रुपये ही बनते हैं, मगर हथौड़ा कहाँ और कितना बल देकर मारना है, इस बात के बाकी रुपये!" यह कहानी भी बताती है कि ज्ञान का मूल्य केवल क्रिया में नहीं, बल्कि विवेक में है। यही अनुभव और यही कुशलता ह्यूमन इंटेलिजेंस को महान बनाती है।

और यहीं से एक बड़ा प्रश्न उठता है- हम समाज को किस दिशा में ले जाना चाहते हैं? यदि हम संवेदना खो देंगे, यदि हम बराबरी और सम्मान को भूल जाएँगे, तो मशीनें भले ही हमें सुविधा देंगी, पर समाज में सामंजस्य नहीं ला पाएँगी। हमें यह समझना होगा कि न कोई ऊपर है, न कोई नीचे। सब समान हैं। यही विचार हमें जोड़ता है, यही हमें महान बनाता है। इन्हीं मानवीय मूल्यों को जीवित रखने का एक प्रयास है 'उपलब्धि'। यह केवल विद्यालयीन पत्रिका नहीं, बल्कि विद्यार्थियों की चेतना का दर्पण है। इसमें उनकी रचनाएँ, कविताएँ, अनुभूतियाँ और विचार मिलकर एक जीवंत कोलाज बनाते हैं। और यह भी प्रमाणित करते हैं कि हमारा विद्यालय हिंदी भाषा को उतनी ही गरिमा देता है जितनी अन्य भाषाओं को।

इस वर्ष उपलब्धि २५ वर्ष की यात्रा पूरी कर रही है। यह केवल सिल्वर जुबली नहीं, बल्कि एक सिल्वर माइलस्टोन है। इस यात्रा में असंख्य छात्रों की आवाजें गूँजती रही हैं। इस अंक में विशेष रूप से हमने उन भैया-दीदी के अनुभव शामिल किए हैं जो २५-३० वर्षों से विद्यालय के साथ जुड़े हैं। उनका सफर बताता है कि विद्यालय की नींव केवल शिक्षकों या विद्यार्थियों पर नहीं, बल्कि उन प्रत्येक सहयोगियों पर टिकी है जिन्होंने अपनी जिंदगी का बड़ा हिस्सा विद्यालय को समर्पित किया है।

आगे की राह स्पष्ट है। उपलब्धि को केवल साहित्यिक रचनाओं तक सीमित न रखते हुए हमें वैज्ञानिक लेख, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय विमर्श और समसामयिक प्रश्नों को भी हिंदी में प्रस्तुत करना है। जब विद्यार्थी इन विषयों पर हिंदी में लिखेंगे, तब हमारी भाषा केवल भावनाओं की नहीं, ज्ञान और विज्ञान की भाषा भी बनेगी।

आज की सबसे बड़ी चुनौती यही है कि हम तकनीक की सुविधा के बीच अपने मानवीय मूल्य न खोयें। मशीनें हमारे काम तेज कर सकती हैं, परंतु जीवन में गरिमा, करुणा और स्नेह केवल मनुष्य ही ला सकता है। यही है सच्ची उपलब्धि है।

मार्गदर्शन

सुश्री स्मिता चतुर्वेदी, उप प्राचार्या

प्रिय छात्रो!

आज के युग में, जहाँ कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित कर रही है, वहाँ मनुष्य की सबसे बड़ी शक्ति वे गुण हैं जिन्हें मशीन कभी नहीं अपना सकती। अनुकूलन की क्षमता, सहानुभूति और अंत:करण। तकनीकी ज्ञान बहुत कुछ दिला सकता है, लेकिन वास्तविक सफलता तभी मिलती है जब हम बदलते हालात को स्वीकारें, अपने कौशल को निखारें और दूसरों की भावनाओं का आदर करें।

भारतीय शिक्षा गुरु-शिष्य परंपरा पर आधारित है, पर आजकल बाहर की संस्कृति हमारी मूल्य आधारित व्यवस्था में आती जा रही है। मैं चाहूँगी कि इसमें बदलाव लाया जाए और हम अपने 'इंडियन एथोस' को 'ग्लोबल पर्सपेक्टिव' के साथ जोड़कर चलें। हमारी गुरु-शिष्य परंपरा ने हमें विनम्रता सिखाई है। यह नींव कभी कमजोर नहीं होनी चाहिए।

अनुशासन और समय की पाबंदी ने मुझे गढ़ा है। मैंने अपने बड़ों से सीखा है कि कभी-कभी कठोर निर्णय भी जरूरी होते हैं। आज के विद्यार्थियों को मिली स्वतंत्रता मूल्यवान है, परंतु यह हमेशा बड़ों और गुरुजनों के प्रति सम्मान के साथ संतुलित होनी चाहिए।

चाहे हम कितनी भी ऊँचाई पर क्यों न पहुँच जायँ या कितना भी बड़ा काम क्यों न कर रहे हों, हमें अपनी जड़ों को कभी नहीं भूलना चाहिए। हमारे विद्यार्थियों को प्रतिस्पर्धा करनी चाहिए, परंतु इसका अर्थ कटु प्रतिद्वंद्विता नहीं होना चाहिए। दूसरों को नीचे गिराकर मिली जीत खोखली होती है। सच्ची उपलब्धि वही है जिसमें आप स्वयं आगे बढ़ें और दूसरों को भी ऊपर उठने का अवसर दें। सहानुभूति एवं संवेदना के बिना प्रतियोगिता केवल 'जंग' बनकर रह जाती है, और मैं इसके पूरी तरह खिलाफ हूँ। मेरी कामना है कि हर विद्यार्थी अपने मूल्यों में दृढ़ रहकर बड़े सपने देखे और ऊँचाइयों को छुए।

हमारा विद्यालय "भारतीय संस्कारों के साथ वैश्विक दृष्टिकोण" पर जोर देता है। उपलब्धि, जो २५ वर्ष पूरे कर रही है, इस दिशा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। यह बच्चों को हिंदी में लिखने और भारतीय संस्कृति को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित करती है। मैं चाहती हूँ कि यह लगातार हमारी मातृभाषा और संस्कृति का प्रचार-प्रसार करती रहे।

प्रोत्साहन

श्री धीरेन्द्र शर्मा, अधिष्ठाता (शैक्षणिक एवं साँस्कृतिक गतिविधि)

प्रिय छात्रो!

'उपलब्धि' प्रकाशित करने का मुख्य उद्देश्य था कि हमारे ज़माने में बच्चे हिंदी में बहुत लिखते थे और उनकी रचनाओं को जगह देने और उनका प्रोत्साहन बढ़ाने के लिए हमने 'उपलब्धि' को बनाया।

मेरा मानना यह है कि पढ़ना बहुत महत्वपूर्ण है। कौन-से विषय पढ़ना है, क्या पढ़ना है, वह छात्रों के ऊपर है। कभी हम कोई पुस्तक पढ़ते हैं तो उसके दो पहलू होते है। पहला, हम अपने आपके साथ समय बिता सकते है। दूसरा, कि किताबें हमारी सबसे अच्छी दोस्त होती हैं। यदि कभी आपके दोस्त आपके पास नहीं हैं, तो आप किताबें पढ़कर समय बिता सकते हैं।

मुझे प्रसन्नता है कि 'उपलब्धि' में इस बार रोमांचक यात्राओं के बारे में काफी रचनाएँ आई हैं। हमारा स्कूल हमेशा से ही रोमांचक एवं पर्वतीय यात्राओं के लिए छात्रों को उत्साहित करता रहा है। बिना रोमांचक यात्रा के जीवन बिलकुल नीरस हो जाता है और नीरस व्यक्ति के आसपास कोई भी व्यक्ति आना पसंद नहीं करता और इस कारण से उसकी जिन्दगी बहुत अकेली हो जाती है। इन यात्राओं से अनुभव इतने सारे हो जाते हैं कि फिर और अनुभव आपको नया नहीं लगता है। हर बदलाव में एक नया अनुभव मिलता है और यादें बनती हैं।

उपलब्धि का यह पच्चीसवाँ वर्ष है। यह स्वयं उपलब्धि है कि छात्र लगातार हिन्दी में अच्छा और मौलिक लिख रहे हैं। एक नियमित पत्रिका का होना वरदान है। इसका महत्त्व यह है कि यह हमारी मातृभाषा हिंदी को संवर्द्धित करती है। यह साल-दर-साल बढ़ती रहे और स्वर्ण जयंती, हीरक जयंती व शताब्दी वर्ष मनाये! ये अपने नाम की सार्थकता को बनाये रखे और अपने स्तर को लगातार उँचा करती रहे!

कौशल संवर्द्धन

श्री राज कुमार कपूर, डीन-आईसीटी

छात्रो !

इस वर्ष उपलब्धि अपने २५वें संस्करण का उत्सव मना रही है, और यह पूरे सिंधिया परिवार के लिए गर्व का क्षण है। इसकी यात्रा हमारे सामूहिक समर्पण, परिश्रम और निरंतर नवाचार का प्रतीक है। यह मील का पत्थर न केवल हमारी परंपरा को सुदृढ़ करता है बल्कि आने वाली पीढ़ियों को भी प्रेरित करता है।

हिंदी भाषा के संदर्भ में भी ए.आई. की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। स्वचालित अनुवाद, व्याकरण सुधार और प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण जैसे साधन हिन्दी-साहित्य और शिक्षण-सामग्री को और समृद्ध बनाएँगे। यह न केवल हिंदी की वैश्विक उपस्थिति को मजबूत करेगा बल्कि विद्यार्थियों के लिए सीखना भी अधिक सहज और रोचक बनाएगा।

सूचना-प्रौद्योगिकी और कृत्रिम-बुद्धिमत्ता प्रकाशनों के क्षेत्र में भी नई दिशा प्रदान कर रहे हैं। एआई आधारित टूल्स संपादन, भाषा-सुधार और डिजाइन को सरल और प्रभावी बनाते हैं। इससे हमारी पत्रिकाएँ अधिक सटीक, आकर्षक और व्यापक पहुँच वाली बनेंगी।

उपलब्धि की इस गौरवशाली यात्रा में शामिल सभी विद्यार्थियों और शिक्षकों को हार्दिक बधाई। यह परंपरा हमें भविष्य में और ऊँचाइयों तक ले जाएगी।

मनोज कुमार मिश्रा, विभागाध्यक्ष, हिंदी-विभाग

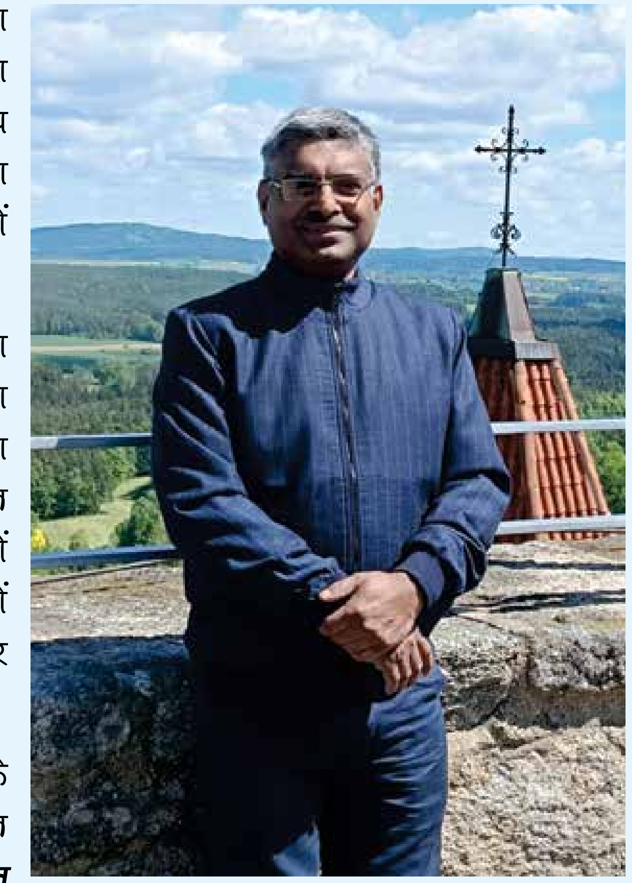

सिंधिया स्कूल के हिंदी-विभाग की वार्षिक पत्रिका "उपलब्धि" की २५ वर्षों की यात्रा न केवल हमारे विभाग बल्कि पूरे विद्यालय के लिए एक गर्व और आत्मसंतोष की बात है। हम कह सकते हैं कि यह एक केवल पत्रिका ही नहीं है बल्कि समस्त विद्यार्थियों और सहृदय शिक्षकों के सामूहिक प्रयासों की "उपलब्धि" है।

सन् २००० के संस्थापना दिवस के अवसर पर इस पत्रिका का पहला संस्करण प्रकाशित हुआ। २५ वर्षों से इस पत्रिका के सतत् विकास का मैं स्वयं साक्षी रहा हूँ। यह पत्रिका प्रत्येक वर्ष और अधिक समृद्ध होती चली गई है। केवल छात्रों व शिक्षकों ने ही नहीं बल्कि पूर्व छात्रों, अभिभावकों और विद्यालय परिवार के अन्य सदस्यों के सतत् प्रयासों से यह पत्रिका लगातार अपनी नई-नई मंजिलें तय कर रही है।

इस यात्रा की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि जिस सोच के साथ विभाग ने इसकी शुरुआत की थी। वह सोच धरातल पर साकार होती दिखती है। ***'उपलब्धि' के प्रकाशन के पीछे यह सोच थी कि नई पीढ़ी को रचनात्मक अभिव्यक्ति का एक मंच मिले।*** अच्छी बात यह है कि इस मंच पर छात्र अपनी उसी साहित्यिक, साँस्कृतिक और रचनात्मक ऊर्जा को इस मंच पर प्रकाशित कर रहे हैं और इससे उनके लेखन को एक दिशा तो मिल ही रही है।

यह पत्रिका हिंदी-विभाग की पहचान है और साहित्यिक समाज के लिए यह प्रेरणा और मनोरंजन का एक स्रोत है। इसके प्रकाशन से हमारे विद्यार्थी संपादन, चिंतन, शोध, चित्रकला और छाया-चित्रांकन और पत्रकारिता की ओर प्रेरित होते हैं। यह पत्रिका शिष्यों को गुरु के साथ-साथ समाज के अन्य वर्गों से जोड़ती है।

'उपलब्धि' केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि आपके सपनों और विचारों का आईना है। बहुत सालों बाद जब आप विद्यालय आते हैं और लेख, कविता या आपके द्वारा लिखी गई कोई अन्य विधा को आप पढ़ते हैं तो आपके समक्ष वह समय जीवंत तो उठता है। कई बार तो आपको बहुत भावुक कर देता है,वह आपके भीतर के आनंद को जागृत कर देता है और आपका हृदय स्वच्छ कर देता है। इसलिए लेखन से जुड़े रहिए क्योंकि इससे आपकी सोचने की शक्ति, समझने की शक्ति और विचारों के मंथन की शक्ति को बल मिलता है।

संपादकीय

कृतज्ञता!

गन्तुं दूरं प्रव्रजेत्सम्भूय,
दूर तक जाना है तो साथ चलो!

कृतज्ञता!... ये एक शब्द आज, बारम्बार जेहन में आता है, जबकि कुछ लिखने बैठा हूँ। बार-बार धन्यवाद उनको, जिन्होंने इस सफर की शुरूआत की थी, यह सोचकर कि छात्र कुछ लिखेंगे-पढ़ेंगे तो उनको अभिव्यक्ति का मंच मिलेगा। उनमें से कुछ किताबों की दुनिया में जायेंगे, तो कुछ छात्रों में साहित्य की समझ बढ़ेगी। और जो कुछ खास नहीं भी करेंगे, तो उनके हृदय में नन्हा कवि ताउम्र जिंदा रहेगा। अपने दोस्तों को, अपने रिश्तेदारों को 'उपलब्धि' बार-बार दिखाते रहेंगे कि मैंने कविता-कहानी लिखी थी! "ये देखो, इसमें छपी थी!" आप जब 'उपलब्धि' के इस पच्चीसवें संस्करण को हाथ में लेंगे तो आपको बरबस अपने-अपने समय के अंक याद आ जायेंगे। सन् २००० में प्रकाशित, पहले अंक से लेकर, अब तक के सभी अंकों की खास बातें सहेजी गई हैं, आप रोमांच से भर उठेंगे।

'उपलब्धि' के अब तक के सफर में जो भी यात्री शामिल रहे, उन्हें 'साधुवाद!' उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ कि उन्होंने इतनी मजबूत नींव रखी कि आज की 'उपलब्धि' चमक रही है। विशेष धन्यवाद श्री संजीव जी सराफ का, जिन्होंने कीमती समय देकर उपलब्धि के नाम एक भावपूर्ण पत्र लिखा! धन्यवाद रणवीर चौहान एवं सार्थक अग्रवाल का, इस उपलब्धि को मूर्त रूप देने के लिए।

इस अंक में आप मौलिक कहानी एवं कविताएँ पढ़ेंगे और सिंधिया स्कूल के इन भावी कर्णधारों की रचनात्मकता और भाषा-शैली से देखकर दाँतों तले उँगली दबा लेंगे।

जयतु सिंधिया! जयतु साहित्य!!

संरक्षक
श्री अजय सिंह (प्राचार्य)

विभागाध्यक्ष
श्री मनोज कुमार मिश्रा

संपादक
श्री गणपत स्वरूप पाठक

मुख्य संपादक - रणवीर चौहान

कार्यकारी संपादक - सार्थक अग्रवाल

सह संपादक - प्रत्यूष अग्रवाल

कला संपादक - शौर्य अवस्थी, शौर्य अग्रवाल

संपादक - देवम गर्ग, श्लोक शर्मा, नैतिक मोर, सहर्ष सिंह, खुश टोड़ी, अनंत गुप्ता, गर्वित अग्रवाल, भावनी जैन

आवरण - श्री आलोक घोष

रचनात्मक सहयोग - श्री त्रिदिब देव चौधरी, श्री जगदीश जोशी, श्री जितेन्द्र जावले, श्री अखिल लक्ष्यण

विशेष सहयोग - श्रीमती ऋतु स्वामी (अभिलेखा गार प्रभारी)

प्रकाशक
सिंधिया स्कूल, दुर्ग ग्वालियर-४७४००८

मुद्रक
गैलेक्सी प्रिन्टर्स, ग्वालियर मो. ९८२६२१४६४४

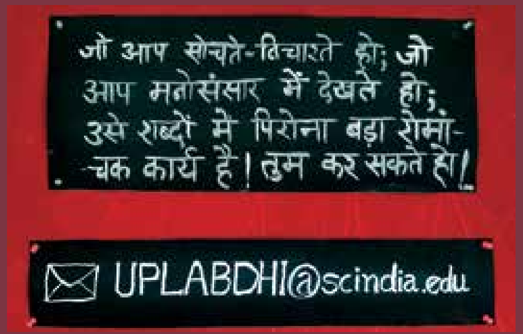

अपने सुझाव एवं रचनाएँ हमसे साझा करें :-
ईमेल : uplabdhi@scindia.edu

अनुक्रम

ताकि सनद रहे	श्री संजीव सराफ	१
स्वयं की खोज	खुश टोड़ी	३
सिंधिया के मैदान में	श्री अभिनव अंशु	५

सैर–सपाटा एवं रोमांच

नेहरू पर्वतारोहण संस्थान	हृदय खजूरिया	७
सिंधिया स्कूल में अब तक	हृदय खजूरिया	७
केरल: ईश्वर की भूमि	वेदान्त सुनील बहेटी	८
सोशल मीडिया: मन पर असर	वेदान्त सुनील बहेटी	८
गर्मियों में हिमाचल	रुशिल गुप्ता	८
पर्वतारोहण का रोमांच	श्री पुष्पेश पाण्डे	२७

पाठ तथा सीख

बड़े भाई साहब	निधान पवैया, दीया शर्मा	९
मैं नहिं पीज़ा खायो	श्री गणपत एस पाठक	१२
ऊँचाई की परेशानियाँ	अंजुम निशाद	१२
नाट्य भ्रमण भोपाल	प्रभात बाजपेयी	१३
आज तक हिन्दी वाद-विवाद	युवराज सेठिया	१४
पहाड़ों पर मेरा मन	विश्वजीत सिंह	१४
हॉकी से जुड़ा नाता	चर्चित कृष्णा	१४
ब्रास बैंड की गूँज	खुश टोड़ी	१५
यदि मैं प्रधानाचार्य होता	अगस्त्य सिन्म्हार	३२
प्रश्न ४ रचनात्मक लेखन	विवान गुप्ता, विवान उन्हारिया, दिव्यांश नेवटिया, सार्थक अग्रवाल, मेधांश गुप्ता	

रजत जयंती वर्ष विशेष

असफल बहाना	देवांश भूटानी	१७
मंगलमय रविवार	मानविक नागा	१७
फिटनैस नहीं जाऊँगा	गर्वित अग्रवाल	१८
किस्सा बनकर रह जानी है	अभिषेक शिवहरे	१८
एक सुंदर चित्र	हंशिता मानकर	३५
सपनों की उड़ान	मानविक नागा	३५
नम्बर एक स्कूल	अर्जुन कोठारी	३५
अच्छाई के लिए प्रयास	श्री शिव कुमार शर्मा	३६
कक्षा में लड़की	छवि चावला	३७
छात्रवास का जीवन	अनंत गुप्ता	३७
असफल बहाना	राहत पनवर	३८

दुर्ग जैव–मण्डल

सो रहा है पेड़	श्री गोपाल चतुर्वेदी	१०
प्रकृति का सम्मान करें	श्री गोपाल चतुर्वेदी	११
प्रकृति का संदेश	आरव कंसल	१२
पेड़-पक्षियों संग जीवन	रुद्राक्ष जिंदल	१९
अपना परिवार है	विक्रमादित्य	२०
पेड़ों की छाया	दीया शर्मा	२०
श्री टेंगशे का पर्यावरण-प्रेम	श्री जितेंद्र जावले	३१
चिड़िया का घोंसला	श्रीमती रक्षा सीरिया	४०

हमारे सहायक: हमारे कर्णधार

संकल्प और धरोहर की कहानी	रणवीर चौहान	२१
अनुभव की आवाज	रणवीर चौहान	२२
३६ वर्षों की वो बातें	रणवीर चौहान	२३
आत्मा से संवाद	रणवीर चौहान	२५
बच्चों के बीच २२ वर्ष	रणवीर चौहान	३२

विविधा

बैन और सिमरजोत की बातचीत	सिमरजोत सिंह मल्ली	२९
माधव अवॉर्ड : ज्योतिपुंज	विवेक शर्मा (पूर्व छात्र)	३०
लिखा, फिर अभिनय	श्लोक शर्मा, अनय गुप्ता	३३
समझदार	जैद इंसाफ	३४
युवराज की पहल	रणवीर चौहान	३९
लौहकर्म अभिरुचि	श्री अरुण कुमार शर्मा	४१
सफलता की कुंजी	श्लोक शर्मा	४२

उपलब्धि विशेष

रू-ब-रू रौशनी से	प्रत्यूष अग्रवाल	४३
आपकी कहानी चित्रों की जुबानी	सार्थक अग्रवाल	४७
उपलब्धि: अब तक का सफर	श्री गणपत एस पाठक	५१
हिन्दी साहित्य सभा की	गर्वित अग्रवाल	५७
श्री आत्माराम शर्मा स्मृति	नैतिक मोर	३४

...ताकि सनद रहे!

सुप्रसिद्ध उद्यमी, 'रेख़्ता' के संस्थापक, पूर्व छात्र श्री संजीव सराफ़ का पत्र, 'उपलब्धि' संपादक के नाम

प्रिय गणपत स्वरूप पाठक जी,
संपादक, 'उपलब्धि'

मान्यवर, आपने अपनी पत्रिका के २५वें अंक के लिए मुझसे एक ऐसे लेख की माँग की है, जिसमें 'रेख़्ता' [rekhta.org] की जन्म-कथा बताने का आग्रह है, साथ ही इसमें हिंदी के प्रति भी मेरी रुचि की वजह आपने जाननी चाही है।

मैं इस पर अर्ज़ यह करना चाहूँगा कि ***सारी शुरुआतें किसी न किसी स्वप्न का अंश होती हैं।*** स्वप्न जिसे हम पहले देखते हैं, फिर जीते हैं। वहीं किसी काम की ज़मीनी शुरुआत सबसे पहले विचारों में होती हैं। 'रेख़्ता' भी मेरा एक ऐसा ही स्वप्न और विचार है। स्वप्न जिसे उर्दू में अपनी गहरी रुचि की वजह से मैंने देखा और विचार जिसे मैंने अपने जुनून की वजह से विस्तार दिया।

दरअसल, मुझे बचपन से ही ग़ज़ल की सोहबत मिल गई। कॉलेज तक आते-आते यह सोहबत दीवानगी में बदल गई, हालाँकि उर्दू लिपि सीखना मैंने काफी देर में शुरू किया। यह कुछ-कुछ वैसा ही जैसे प्यार होने के बाद आप प्यार को समझना शुरू करते हैं। उर्दू साहित्य और उसकी शाइरी से मुझे आज भी बहुत प्यार है और रहेगा। उर्दू शाइरी मूलतः प्रेम का ही पैग़ाम है। उससे जुड़कर उसके प्रेम में पड़ जाने से खुद को रोकना बहुत मुश्किल है।

इस प्रेम में एक रोज़ मैंने पाया कि उर्दू भाषा और कविता की समृद्ध विरासत को समझने और पाने के लिए ऑनलाइन कोई रास्ता नहीं है। इससे मैं काफी दुखी हुआ, लेकिन निराश नहीं। यह तब की बात है जब डिजिटल माध्यमों पर उर्दू कवियों और उनकी कविता का स्थान और सहज उपलब्धता बहुत सीमित थी। मुझे अपने अध्ययन-कक्ष से दूर या सफर में अगर कोई शेर या गज़ल याद आए और मुझे जानना हो कि वह किसकी है या वह सही है या नहीं तो मेरे पास कोई विकल्प नहीं था। कहने का अर्थ यह है कि उर्दू अदब से जुड़ी हुई बेहतर और प्रामाणिक सामग्री इंटरनेट पर ढूँढना बेहद मुश्किल था।

मैं अपने इस निजी तजुर्बे से प्रेरित होकर साल २०१३ में रेख़्ता फाउंडेशन की स्थापना की और 'रेख़्ता' [rekhta.org] वेबसाइट लॉच की। इस मंच का मक़सद था - उर्दू साहित्य को संसार भर के उर्दू-प्रेमी पाठकों के लिए डिजिटल रूप में संरक्षित करना, बेहतरीन शाइरी, गज़लें, नज़्में, कहानियाँ और ई-बुक्स को एक स्थान पर निःशुल्क उपलब्ध कराना, उर्दू लिपि (नस्त'लीक) के साथ-साथ देवनागरी और रोमन लिपि में भी कंटेंट देना, ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग उर्दू अदब और इसकी शाइरी से जुड़ सकें।

हमने २०१३ में केवल ४०-५० उर्दू-कवियों की रचनाएँ लेकर 'रेख़्ता' की शुरुआत की थी, बाद में यह संख्या हजारों तक पहुँच गई। स्कैनिंग, डिजिटालाइजेशन और ट्रिलिंगुअल

डिक्शनरी जैसे फीचर्स ने 'रेख़्ता' को सबसे अलग पहचान दी और कुछ आगे चलकर हमारे सालाना जलसे 'जश्न-ए-रेख़्ता' ने, जिसमें बहुत बड़ी संख्या में युवा और गैर-मुस्लिम समुदाय भी बड़ी तादाद में शामिल होता है, ने हमारी उस आशंका का पूरी तरह शमन कर दिया कि उर्दू महोत्सव केवल एक विशेष समूह तक सीमित होगा और उर्दू सिर्फ एक विशेष वर्ग की भाषा है।

यह सब कुछ किसी व्यावसायिक योजना के अंतर्गत नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक मिशन के तौर पर शुरू हुआ। ***कहना न होगा कि आज 'रेख़्ता' उर्दू साहित्य से संबंधित संसार का सबसे विशाल डिजिटल प्लेटफॉर्म बन चुका है-30 मिलियन उपयोगकर्ताओं के साथ।*** इसमें हज़ारों किताबें, लाखों शेर और सैकड़ों शाइरों की रचनाएँ मौजूद हैं। यह सब करते हुए इस बात का सबसे ज्यादा संतोष है कि नई पीढ़ी ने हमारी कोशिशों को बराबर सराहा है और हमसे बड़ी संख्या में राब्ता किया है।

उर्दू के बाद मेरे मन में ***हिंदी भाषा के लिए भी 'रेख़्ता' जैसी वेबसाइट बनाने का उत्साह था। वह सपना साल २०२० में 'हिन्दवी'*** [hindwi.org] ***के रूप में साकार हुआ।*** यों हमने भाषा और साहित्य के संसार को कुछ और व्यापक किया।

'हिन्दवी' के शुभारंभ के पूर्व हिंदी साहित्य के लिए और भी कई वेबसाइट्स उपलब्ध थीं, लेकिन मुझे इसमें कोई भी पर्याप्त और प्रमाणिक नहीं प्रतीत हुई। 'रेख़्ता' वेबसाइट में जो गुणवत्ता, विशेष कार्य क्षमता और पाठ-पाठकीय अनुभव हैं, वे अन्य भारतीय भाषाओं की वेबसाइट्स में अब तक उपलब्ध नहीं हैं। इस वजह से साहित्य के पाठक जो उच्चतम साधनों के हकदार हैं, उन्हें साधारण और सामान्य पाठ-अनुभवों से काम चलाना पड़ता है।

हमने जो 'रेख़्ता' में सीखा, उसका उपयोग हमने 'हिन्दवी' की वेबसाइट में किया। मेरा मानना है कि न केवल हिंदी के लिए, बल्कि हमारे देश की हर भाषा के लिए इस प्रकार की एक वेबसाइट की ज़रूरत है। इसलिए ही इस सिलसिले में ***'रेख़्ता फाउंडेशन' से 'हिन्दवी' के बाद वर्ष २०२२ में 'राजस्थानी' के लिए 'अंजस' [anjas.org] और २०२४ में गुजराती के लिए 'रेख़्ता गुजराती' [rekhtagujarati.org] की शुरुआत हुई।*** इस कड़ी में आगे और भी कई आरंभ हैं, हम सतत् यत्नशील और सक्रिय हैं।

आज हम एक ऐसे दौर और दुनिया में जी रहे हैं, जहाँ जड़ों और ज़ुबान से दूरी एक अनिवार्य सच बन चुकी है। नई पीढ़ी विदेशी भाषाओं और संस्कृतियों से भलीभाँति परिचित प्रतीत होती है, लेकिन अपनी भाषा-बोली-संस्कृति की सुंदरता और महत्त्व से अपरिचित है।

भाषाएँ केवल संवाद का माध्यम नहीं होतीं, वे सभ्यता की आत्मा होती हैं। हमारी भाषा हमारे सोचने का तरीका तय करती है। वह हमारे भावों को अभिव्यक्त करने का माध्यम बनती है और हमारी सांस्कृतिक जड़ों को सींचती है।

मुझे लगता है कि हमें अपना साहित्य, अपने लोकगीत, अपनी कहावतें, अपनी ऐतिहासिक परंपराएँ... सबसे नई से नई तकनीक और माध्यम में बचा और सँजो लेनी चाहिए, ताकि सनद रहे! यह समय की पुकार है। हमारी परंपरा में अपार ज्ञान है, हमारी भाषा में अनंत सौंदर्य है और हमारी संस्कृति में जीवन का गहन दर्शन है।

मुझे यकीन है कि भारत की हरेक भाषा में 'रेख़्ता' जैसी वेबसाइट और कोशिशें संभव हैं।

शेष फिर,

शुभकामनाओं सहित,

आपका
संजीव सराफ़

स्वयं की खोज

लद्दाख सेवा परियोजना एवं ट्रेकिंग अभियान २०२५

“जब लाखों लोग छोटे-छोटे काम एक साथ करते हैं, तो दुनिया बदलने लगती है।” - हॉवर्ड

यह उक्ति उस अनुभव की सटीक व्याख्या करती है, जिसे हमने लद्दाख की पवित्र भूमि पर जीया। यह यात्रा केवल एक परियोजना नहीं थी, यह एक यात्रा थी सेवा की, संस्कृति की, चुनौती की और सब से बढ़कर, स्वयं की खोज।

लद्दाख सेवा परियोजना एवं ट्रेकिंग अभियान २०२४ का आयोजन सिंधिया स्कूल, फोर्ट ग्वालियर और मॉडर्न स्कूल, बाराखंभा रोड, नई दिल्ली के संयुक्त प्रयास से किया गया। २६ जून से ११ जुलाई तक चले इस अभियान में कुल १४ छात्र और तीन शिक्षक सहभागी बने जिनमें सुश्री रक्षा सीरिया (प्रोजेक्ट लीडर), श्री अनिल पठानिया और श्री सुमित बेरवाल का मार्गदर्शन उल्लेखनीय रहा।

यात्रा की शुरुआत लेह से हुई, जहाँ छात्रों को उच्च हिमालयी क्षेत्र के वातावरण में स्वयं को ढालने के लिए कुछ समय दिया गया। शांति स्तूप, लेह पैलेस और स्थानीय बाजारों की सैर न केवल साँस्कृतिक दृष्टिकोण से समृद्ध रही, बल्कि यह दोनों विद्यालयों के छात्रों के बीच मित्रता की कड़ी भी बनी।

२८ जून को टीम ने खरदुंगला दर्रे को पार करते हुए नुब्रा घाटी के सुमूर गाँव स्थित लैमडन मॉडल सीनियर सेकेंडरी स्कूल में प्रवेश किया । वहाँ बच्चों ने ताली बजाकर और पारंपरिक अंदाज में हमारा स्वागत किया एक ऐसा क्षण जो सभी के मन में गहराई तक बस गया। हमारा उद्देश्य था यूकेजी कक्षा के लिए एक स्थायी कक्ष का निर्माण। इस कार्य में ईंटें उठाना, लकड़ियाँ ढोना, टालस पत्थर एकत्र करना, मिट्टी-बालू मिलाना और छत के लिए बीम तैयार करना शामिल था। यह कार्य केवल शारीरिक रूप से कठिन नहीं था, बल्कि धैर्य, समन्वय और संकल्प की परीक्षा भी थी। इन कामों के बीच छात्रों ने विद्यालय के बच्चों के साथ समय बिताया क्रिकेट खेला, पढ़ाई में सहायता की, और स्थानीय भाषा के कुछ शब्द भी सीखे। यह छोटे-छोटे संवाद गहरी मानवीय अनुभूतियों में बदल गए। इस सेवा यात्रा के दौरान हमें सिल्क रूट साँस्कृतिक महोत्सव में भाग लेने का अवसर मिला। रेत के टीलों के बीच बर्फ से ढँकी चोटियों की छाया में लद्दाखी संगीत और नृत्य का अनुभव अविस्मरणीय रहा।

हमारी टीम को मिस्टर टोनी हाइड से मिलने का सौभाग्य भी मिला - जो अंतर्राष्ट्रीय राउंड स्क्वायर संगठन के पूर्व प्रमुख रहे हैं। उनके साथ संवाद से हमें सेवा के वैश्विक महत्व का बोध हुआ। इसके अतिरिक्त, हम सियाचिन वॉर मेमोरियल, ओपी बाबा मंदिर, यार बत्सो झील और एक प्राकृतिक गर्म जल-स्रोत सभी पहुँचे। इन स्थलों पर बिताए क्षणों में श्रद्धा, शांति और आत्म-मंथन का गहरा स्पर्श था।

५ जुलाई को सेवा कार्य की औपचारिक समाप्ति हुई। इस अवसर पर स्कूल द्वारा एक भावनात्मक विदाई समारोह आयोजित किया गया, जिसमें छात्रों ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दीं। हमारे छात्रों ने भी अपनी भावनाएँ साझा कीं, कुछ ने कविता पाठ किया, तो कुछ ने नृत्य के माध्यम से अपनी अनुभूति व्यक्त की।

“हम दीवारें बनाने आए थे, लेकिन दिलों के पुल बनाकर लौट रहे हैं।”

६ जुलाई को सेवा से अध्यात्मिक संतोष लेकर हमने शारीरिक सहन-शक्ति की यात्रा शुरू की वारीला पास की ओर। यह पर्वतीय यात्रा केवल ऊँचाई की यात्रा नहीं थी, बल्कि एक आंतरिक चढ़ाई भी थी। भय पर, थकावट पर, और अपनी सीमाओं पर विजय पाने की।

१७,४१९ फीट की ऊँचाई तक का ट्रेक बर्फ, वर्षा, कठिन चढ़ाई और अस्थिर रास्तों से भरा रहा। हालाँकि कुछ हिस्से खराब मौसम के चलते वाहन से तय करने पड़े, लेकिन टीम के कुछ सदस्यों ने पैदल चोटी तक पहुँचकर संकल्प की मिसाल पेश की।

इस साहसिक यात्रा के अंतिम चरण में हमने पैंगोंग झील और थिकसे मठ का भ्रमण किया दोनों ही स्थान शांति और सौंदर्य की जीवंत मिसाल थी। यात्रा का औपचारिक समापन श्री सोनम वांगचुक द्वारा आयोजित एक सांस्कृतिक संध्या से हुआ, जिसमें लद्दाखी रंगों की छटा और आत्मीयता की मिठास घुली हुई थी। यह यात्रा केवल एक अभियान नहीं थी बल्कि यह सिखाने, सेवा करने, और स्वयं को पहचानने की प्रक्रिया थी। ***हमने सीखा कि नेतृत्व केवल दिशा देना नहीं होता, बल्कि साथ चलना होता है। सेवा केवल देना नहीं होती वह दो तरफा होती है, जिसमें हमें भी उतना ही मिलता है जितना हम दूसरों को देते हैं।***

हमने केवल एक कक्षा नहीं बनाई, हमने संपर्क, संवेदना और समझदारी की नींव रखी।

और जब हम वापस लौटे, तो केवल थकान और स्मृतियाँ नहीं लाए हम लाए एक नई दृष्टि, एक गहरी विनम्रता, और एक अटल विश्वास कि दुनिया को बदलने के लिए बड़े कामों की जरूरत नहीं बस एक सच्चे मन और संकल्प की जरूरत है।

“हमने हिमालय पार किए, लेकिन जो सबसे बड़ा पर्वत पार किया वह था अपने भीतर का संदेह। हम लौटे हैं, लेकिन अब पहले जैसे नहीं हैं।”

खुश टोड़ी, ग्यारहवीं, शिवाजी

सिंधिया के मैदान में...

बीसवीं महाराजा माधवराव सिंधिया स्मृति क्रिकेट प्रतियोगिता - २०२५ को सादर समर्पित एक गीत के सृजन की रचनात्मक दास्तान।

सर्दियों की शाम थी। माधव पवेलियन की बालकनी में बैठकर हम तीन लोग - मैं, मंदार सर और बेटू भैया। मैदान की ओर देख रहे थे । मैदान में धूप ढल रही थी, खिलाड़ियों की परछाइयाँ लंबी हो रही थीं, और हर तरफ एक ठहराव-सा महसूस हो रहा था। चाय के कप में उठती भाप के बीच हम हल्की-फुल्की बातें कर रहे थे- टूर्नामेंट, टीम्स, तैयारियाँ।

मंदार सर ने मुस्कराते हुए कहा, “इस बार टूर्नामेंट में कुछ एक्स्ट्रा होना चाहिए।”

मैंने पूछा, “मतलब?”

बेटू भैया बोले, “IPL की तरह थीम साँग बना लेते हैं। सिंधिया के मैदान का अपना एंथम!”

हम तीनों एक पल को चुप हुए, फिर अचानक सब हँस दिए। लेकिन वह हँसी महज मजाक नहीं थी। उसमें एक बीज था। एक आइडिया जो धीरे-धीरे गंभीर होता गया।

रात होते-होते हम तीनों फिर मिले। अब यह कोई मजाक नहीं, एक मिशन बन चुका था। सिंधिया स्कूल की क्रिकेट भावना को शब्दों, सुरों और धड़कनों में पिरोना।

अब सबसे बड़ी चुनौती थी: कहाँ से शुरू करें ?

गीत लिखना, संगीत बनाना, मिक्सिंग, वीडियो- ये सब प्रोफेशनल काम हैं। लेकिन फिर मैंने कहा- क्यों न हम आज की सब से क्रांतिकारी शक्ति को साथ लें, AI (कृत्रिम बुद्धिमत्ता)।

मैंने Chat GPT को खोला। वही टूल जो अब दुनियाभर के रचनात्मक लोगों का साथी बन चुका है। कुछ की-वर्ड्स डाले। सिंधिया, क्रिकेट, टूर्नामेंट, शौर्य, माधवराव सिंधिया जी की प्रेरणा और एक ड्राफ्ट गीत तैयार हो गया।

लेकिन काम वहीं नहीं रुका। हर पंक्ति को फिर महसूस किया गया, उसे दुबारा लिखा, उसमें सिंधिया की आत्मा डाली गई। उसका गौरव, उसका इतिहास, और उसकी रगों में दौड़ती खेल भावना। मैं, मंदार सर और बेटू भैया। तीनों मिलकर एक-एक शब्द पर चर्चा करते रहे। हमने न केवल एक गीत लिखा, बल्कि एक अनुभव रचा।

अब बारी थी संगीत की। यहाँ आया Suno AI । एक एआई आधारित म्यूजिक कंपोजर। गीत के मूड के अनुसार इसे निर्देश दिए। “उत्साह, गरिमा, और जोश”। और कुछ ही मिनटों में हमारे पास एक धुन थी। बिल्कुल वैसी, जैसी मैदान की गूँज बन सके।

फिर उसकी मिक्सिंग और फाइनल साउंड क्वालिटी के लिए हमने इस्तेमाल किया Landr- एक AI म्यूजिक मास्टरिंग टूल। पूरी रचना अब प्रोफेशनल साउंड कर रही थी, बिना किसी स्टूडियो गए।

अंत में एक छोटा-सा वीडियो, स्कूल की क्लिप्स, पुराने टूर्नामेंट के विजुअल्स, और खिलाड़ियों की भावनाएँ; सबको जोड़कर हमने बनाया In Shot से एक वीडियो, सीधा और सच्चा।

और इस तरह, एक विचार। एक गीत बन गया। पर असली बात ये नहीं कि हमने एक थीम साँग बनाया। असली बात ये है कि हमने देखा कैसे एक छात्र एक शिक्षक, और एक मित्र मंडली। सीमित संसाधनों से, लेकिन असीम उत्साह और आज की तकनीक के सहारे। कुछ ऐसा बना सकती है जो सैकड़ों दिलों को छू जाए।

AI सिर्फ एक औजार नहीं है। यह रचनात्मकता का विस्तार है। इससे लेखन, संगीत, वीडियो या कोई भी प्रोजेक्ट करके, हर छात्र का सपना साकार हो सकता है।

हमारे गीत ने मैदान में गूँज पैदा की। और अब वह गूँज पत्रिका के इन पन्नों तक आ पहुँची है।

श्री अभिनव अंशु
अध्यापक, सामाजिक विज्ञान

फोर्ट के साये में, बॉल चमक रही,
बैट की धड़कनों से धरती धक रही।
बादल भी रुकेंगे, हवा भी गुन गुनाएगी,
सिंधिया के शेर अब क्रिकेट का राग सुनाएगी !

हल्ला बोल! हल्ला बोल !
सिंधिया के शेर, गरजे ढोल !
विकेट गिरी तो शोर मचा,
शॉट उड़ा तो दिल नाचा!
मानिक हो या मोहाली, सबका एक इरादा,
सिंधिया के मैदान में जीत का वादा !

मानिक पब्लिक आये, एमएनएसएस भी तैयार,
मोहाली, पटियाला, सबका दिल है शिकार!
जैनैसिस का जुनून, राजकोट का जज्बा,
बिशप कॉटन भी लाए क्रिकेट का ताजमा!
एक-एक रन पे, धड़कन चलेगी,
सिंधिया की धरती, कहानी लिखेगी!

माधवराव जी का सपना सजेगा,
क्रिकेट का सूरज यहाँ से निकलेगा।
मैदान है मंदिर, बॉल एक प्रसाद,
खेलेंगे दिल से, जीत होगी याद!

हल्ला बोल! हल्ला बोल!
सिंधिया के शेर, गरजे ढोल!
जैनैसिस हो या राय, राजकोट हो या कॉटन,
सिंधिया के रंग में, क्रिकेट है बॉटम!
शॉट लगाएँगे, धूम मचाएँगे,
सिंधिया का नाम, दुनिया सुनाएँगे!

एक शॉट, एक बॉल, एक पल की कहानी,
मैदान का राजा है सिर्फ मेहनत कश सिपाही!
आज खेलेंगे, कल याद रहेंगे,
सिंधिया के शेर, दुनिया चमकेंगे !

यह गीत सिर्फ एक टूर्नामेंट का हिस्सा नहीं। यह एक प्रेरणा है कि कैसे थोड़ी कल्पना, थोड़ी मेहनत और थोड़ी तकनीक, किसी भी सपने को हकीकत में बदल सकती है। अब आपकी बारी है। क्या आप अगली रचना, अगला विचार, अगला प्रयोग शुरू करेंगे ? क्योंकि सिंधिया में, हम सपनों को जीते हैं।

नेहरू पर्वतारोहण संस्थान

तीन महीने पहले मैं गर्मियों की छुट्टी में अपने विद्यालय के कुछ साथियों के साथ नेहरू पर्वतारोहण संस्थान-उत्तरकाशी

गया था। देहरादून से टैक्सी में बैठकर अपनी यात्रा को प्रारंभ किया। रास्ता टेढ़ा-मेढ़ा था। दो-तीन बार तो मुझे उल्टी हो ही गई। हमारे टैक्सी ड्राइवर ने एक टोटका बताया। उसने कहा कि अपने पुट्ठे के नीचे अखबार रखो तो उल्टी की समस्या नहीं होगी। और हकीकत में ऐसा ही हुआ। उल्टी आनी बंद हो गई। इस तरह, हमें एक नई चीज सीखने को मिली।

वहाँ पहुँचकर हमने खूब मजे किये। हमने सीखा कि कैसे अलग-अलग प्रकार की गाँठें बाँधते हैं। वहाँ हमें अपने बर्तन खुद ही धोने पड़ते थे। वहाँ शौचालय नहीं होता था तो खुले मैदान में ही हमें शौच आदि से निवृत्त होना पड़ता था। वहाँ पर भालू भी घूमते थे तो रात के समय भालू आने का भी डर बना रहता था।

फिर एक दिन सोते-सोते जैसे ही मैंने करवट बदली, वैसे ही मुझे कुछ गर्म-गर्म और नर्म-नर्म सा महसूस हुआ। मैं डर गया। मुझे लगा भालू है। मैं चीखा-चिल्लाया। फिर बाद में पता चला कि वह तो सिर्फ एक कुत्ता था।

सिंधिया स्कूल में अब तक

सिंधिया एक बहुत अच्छा और प्राचीन विद्यालय है। इस विद्यालय में करीबन ८०० बच्चे पढ़ते हैं और सबके लिए बहुत सारी सुविधाएँ हैं।

यहाँ रहकर मैंने बहुत नई चीजें सीखीं। इतनी कि आधी भी याद करो तो घंटे लग जाएँगे। सर्वप्रथम, मैंने यह सीखा कि अपने समय की बचत कैसे-कैसे करें। और जो मिला है, उसे कैसे बर्बाद न करें।

हमारे यहाँ तो खाना खाने का भी नियम है। हम यहाँ सिर्फ काँटा-चम्मच से ही खाना खा सकते हैं और मुँह बंद करके ही चबाना होता है। यहाँ हमें बड़ों का आदर करना भी सीखते हैं। अगर आपसे बड़ा डाँट खा रहा हो तो हमें अपनी नजर झुका लेनी चाहिए।

यहाँ हमें अपना कमरा और अलमारी भी साफ रखनी होती है। हमेशा अपनी स्कूल यूनिफार्म इस्त्री की हुई ही पहननी पड़ती है और वह बिल्कुल साफ भी होना चाहिए।

ऐसा विद्यालय ही हमें अच्छा, आज्ञाकारी, आदर करने वाला और एक जागरूक व्यक्ति बनाता है।

हृदय खजूरिया, नौवीं, जयाजी

केरल

ईश्वर की भूमि

केरल जिसे 'ईश्वर की भूमि' कहा जाता है, यह प्रकृति, संस्कृति और रोमांच का अद्भुत मिश्रण प्रस्तुत करता है।

मेरी यात्रा की शुरुआत अल्पूझा के बैकवाटर्स से हुई, जहाँ एक शांत हाउसबोट क्रूज हमें शानदार दृश्य दिखाता है। पहले कोच्चि की उपनिवेशीय आकर्षणों की खोज की, फिर मुन्नार के ठंडे पहाड़ी क्षेत्रों और बाद में चाय बागानों में गए। वर्कला के सुंदर समुद्र तट विश्राम के लिए आदर्श है, जबकि तिरुवनंतपुरम में पद्मनाभस्वामी मंदिर जैसे साँस्कृतिक खजाने हैं।

हमने केरल के शानदार और स्वादिष्ट व्यंजनों का स्वाद लिया। जैसे समुद्री भोजन और प्रसिद्ध केरल साध्य। अंत में, पेरियार वनजीव अभयारण्य में प्रकृति का आनंद लिया।

विविध अनुभवों के साथ केरल एक अविस्मरणीय यात्रा थी। और जब मैं वापस आया, तब मैंने अपने सारे दोस्तों को केरल के बारे में बताया। उधर का खाना, माहौल, संस्कृति और लोगों के बारे में सुनकर उन्हें भी केरल जाने का मन हुआ।

सोशल मीडिया

मन पर असर

सोशल मीडिया हमारे जीवन का अहम हिस्सा बन चुका है। यह हमें एक दूसरे से जुड़ने, अपनी रचनात्मकताओं को अभिव्यक्त करने का मौका देता है। यह हमें समाज में एकाकी होने से बचाता है।

आजकल एक अलग ही कहानी चल पड़ी है। अनेक लोग कहने लगे हैं कि सोशल मीडिया के विभिन्न डिजिटल चौपालों का हमारे मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ने लगा है। हालाँकि ये हमें दूरदराज के अलग-अलग देशों व प्रांतों के लोगों से जुड़ने का अवसर देता है। जीवन में उमंग भर देता है। मगर इसके मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव भी होता है।

सोशल मीडिया पर आदर्श जीवन और छवियों को देखकर खुद से तुलना करना आत्मसम्मान को प्रभावित करता है। अधिक समय बिताना मानसिक थकावट, अकेलापन और चिंता का कारण बन सकता है। साथ ही साइबरबुलिंग और ट्रोलिंग जैसे मुद्दे भी लगातार बढ़ते जा रहे हैं। इनसे निबटने के सरकारी उपाय पर्याप्त नहीं हैं।

इसका समाधान संयमित और सजगतापूर्ण उपयोग, डिजिटल और सकारात्मक सामग्री का पालन करना हो सकता है। अत: मैं यह कहना चाहता

हूँ कि हमें कम से कम सोशल मीडिया का उपयोग करना चाहिए और उससे अत्यधिक प्रभावित नहीं होना चाहिए।

वेदांत सुनील बहेटी, नौवीं, जयाजी

गर्मियों में हिमाचल

तीन दिनों का रोमांच

गर्मियों की छुट्टियों में, मैं और मेरे तीन दोस्तों ने हिमाचल जाने का प्लान बनाया। दिल्ली से हम धर्मशाला पहुँचे, जहाँ ठंडी हवा और खूबसूरत पहाड़ों ने हमारा स्वागत किया।

अगले दिन हम मैक्लोडगंज गए। यहाँ तिब्बती मठ और दलाई लामा के मंदिर में अभूतपूर्व शांति का अनुभव किया।

फिर हमने त्रियुन्द ट्रैक किया। यहाँ से हिमालय की बर्फीली चोटियों का दृश्य देखकर, सब हैरान रह गए।

तीसरे दिन, हम काँगड़ा फोर्ट और बाजार घूमे। तीन दिन दोस्तों के साथ बिताये वह पल हमेशा याद रहेंगे। गर्मियों में हिमाचल यात्रा बहुत बेहतरीन अनुभव साबित हुआ।

रुशिल गुप्ता, नौवीं, जयाजी

बड़े भाई साहब

अँग्रेजी विषय में हमने पढ़ी कहानी 'बिग ब्रदर!' उसी दिन हमारी कक्षा में संयोग से गणपत सर दस मिनिट पहले आ गये और अँग्रेजी अध्यापक से अनुमति लेकर बैठ गये। फिर पता नहीं कब कहानी की बातचीत में गणपत महोदय भी शामिल हो गये। प्रेमचंद जी की 'ईदगाह' कहानी की भी बात हुई। बड़ा मज़ा आया। जब हिन्दी की कक्षा हुई तो हमने ज़िद की कि हमें हिन्दी में 'बड़े भाई साहब' कहानी' सुनाइए। अब, बच्चों की ज़िद के आगे अध्यापक की क्या चलती। अपना पाठ छोड़कर अध्यापक जी ने 'हिन्दी समय' अंतर्जाल से निकालकर कहानी सुनायी और फिर हमें भी काम दे दिया कि कहानी के आखिरी दृश्य में जो बड़े भाई साहब कटी पतंग को पकड़ने भाग रहे हैं, छोटा भाई पीछे-पीछे.. वह दृश्य चित्रांकित करके लाओ। वही बात हुई कि अध्यापक जी के आगे बच्चों के बहाने भी नहीं चलते! बनाना पड़ा!

-निधान पवैया
सातवीं 'अ', जनकोजी

यह चित्र बड़े भाई साहब पाठ से लिया गया है। हालाँकि, यह पाठ हमारी पाठ्यपुस्तक में नहीं है, लेकिन हमने कक्षा में पढ़ा था। यह पाठ श्री मुंशी प्रेमचंद द्वारा लिखा गया है।

अब मैं आपको बताती हूँ कि हम इस पाठ को कक्षा में कैसे लाये। पहले हमने इसे अँग्रेजी में पढ़ा। फिर हमने सोचा क्यों न इसे हिंदी में भी पढ़ा जाए, तो हमने अपने हिंदी शिक्षक श्री गणपत सर से पूछा तो उन्होंने कर दी, हाँ!

फिर अगले दिन हमने इसे हिंदी में पढ़ा और मजा भी आया। इस पाठ में बड़े भाई साहब बताये तो पढ़ाकू हैं, लेकिन है नहीं। रात-दिन पढ़-पढ़कर फेल हुए जा रहे हैं, बताओ क्या फायदा पढ़ाकू होने का?

वहीं दूजी ओर छोटा भाई बिलकुल भी पढ़ने वाला नहीं है, और पास हुए जा रहा है, बल्कि फर्स्ट रैंक ला रहा है। धीरे-धीरे छोटा भाई हवा में उड़ने लगा और उसे बड़े भाई साहब से डाँट भी पड़ती थी। एक दिन छोटा भाई आस-पास के लड़कों के साथ एक पंतग के पीछे लगा हुआ था। सामने से आ रहे थे, बड़े भाई साहब और हो गई दोनों की टक्कर। हो गया सत्यानाश! बड़े भाई साहब से छोटे भाई को बहुत डाँट पड़ी। अंत में छोटे भाई ने माफी माँगी। और बड़े भाई साहब ने ऊपर से पंतग पकड़ी और उनके हॉस्टल की तरफ भागने लगे। छोटा भाई भी बड़े के पीछे मुस्कुराते हुए भागने लगा।

-दीया शर्मा
सातवीं 'अ', कनेरखेड़

Die Bäumeschlafen... सो रहा है पेड़!

Heute stand ich sehrfrüh
am Morgen auf und beobachtete
den dicken Baum des Dorfes.
Da gab es keineBewegung,
die Blätter standen still.
Es scheint mir,
alsob der Baum
nichtaufstehen will.
Er wolltenicht die Umgebungstören.
Als die Glocke der Kirche läutete,
tanzten die Blätter mit
einer Feststimmung.
Mit dem Tanz der Blätter ist
das Leben ins Dorf zurückgekehrt.

आज सुबह
मैं बहुत पहले जागा
और खिड़की से बाहर झाँका
देखा कि एक मोटा पेड़
है गाँव में, बीचोंबीच
कोई हलचल नहीं
स्थिर थीं सभी पत्तियाँ!

मुझे लगा कि वह पेड़
जागना नहीं चाहता था
इतनी जल्दी और न ही
डालना चाहता था खलल
अपने आसपास

तभी दूर कहीं
गिरजाघर का घण्टा
घन्न्न्न घनघनाया
पत्तियाँ नाच उठीं उत्साह से
छमछम करती पत्तियों से
लौट आया जीवन फिर गाँव का!

श्री गोपाल चतुर्वेदी, जर्मन अध्यापक

प्रकृति का सम्मान करें!

सभी जीवों को पृथ्वी पर आशियाना बनाने का अधिकार है। मनुष्य होने के नाते, हम अपना जीवन आसान बनाना चाहते हैं और पृथ्वी पर रहने वाले अन्य प्राणियों की परवाह नहीं करते। यह सुनिश्चित करना हमारा कर्तव्य होना चाहिए कि इस धरा पर अन्य प्राणियों का भी सम्मान हो। लेकिन किसी ने भी इस बारे में नहीं सोचा।

धरती पर वास करने वाले अन्य प्राणियों की रक्षा कौन कर सकता है? इसका उत्तर है प्रकृति और वह इस बारे में मौन है। प्रकृति शब्दों से कुछ नहीं अभिव्यक्त करती बल्कि विविध प्राकृतिक आपदाओं के रूप में अपना विरोध जताती है, जैसे- बाढ़, भूस्खलन, अवर्षा आदि।

मनुष्य होने के नाते, हमें आत्मा से प्रकृति को समझना चाहिए और उसका सम्मान करना चाहिए। हमारा शरीर प्रकृति से प्राप्त पाँच प्राकृतिक तत्वों से बना है। ये पाँच तत्व हैं- पृथ्वी, आकाश, जल, अग्नि और वायु। ये पाँच मूलभूत तत्व हैं जो पृथ्वी पर प्राणियों के जीवन को संभव बनाते हैं। इन पाँच मूल पदार्थों का सम्मान किया जाना चाहिए।

प्रकृति मौन है और मनुष्यों के कार्यों को देखती रहती है। जहाँ प्रकृति का अत्यधिक दोहन होता है, वहाँ प्राकृतिक आपदाएँ भी आती हैं। लोग अक्सर शिकायत करते हैं कि हमारे साथ ऐसा क्यों होता है? हमने अपनी प्रकृति के विरुद्ध कुछ नहीं किया है! लेकिन यह सच नहीं है।

व्यक्ति को दिनभर में अपने द्वारा किए जाने वाले सभी छोटे-छोटे कार्यों पर ध्यान देना चाहिए। लोगों को न केवल गरीबों की मदद करनी चाहिए, बल्कि पृथ्वी पर रहने वाले छोटे जीवों को भी अपना मित्र मानकर उनका सम्मान करना चाहिए। अगर हम पृथ्वी पर आने वाले और प्राणियों का सम्मान करें जोकि अल्प समय में अपनी आयु पूरी कर लेते हैं, तो हमारा पारिस्थितिकी तंत्र अपने आप संतुलित हो जाएगा। पक्षी, मछलियाँ, कीड़े-मकोड़े और वनस्पति जगत, ये सभी पारिस्थितिक तंत्र का हिस्सा हैं। मैं एक इंसान के रूप में आपसे प्रकृति का सम्मान करने का नम्र आग्रह करता हूँ।

श्री गोपाल चतुर्वेदी
जर्मन अध्यापक

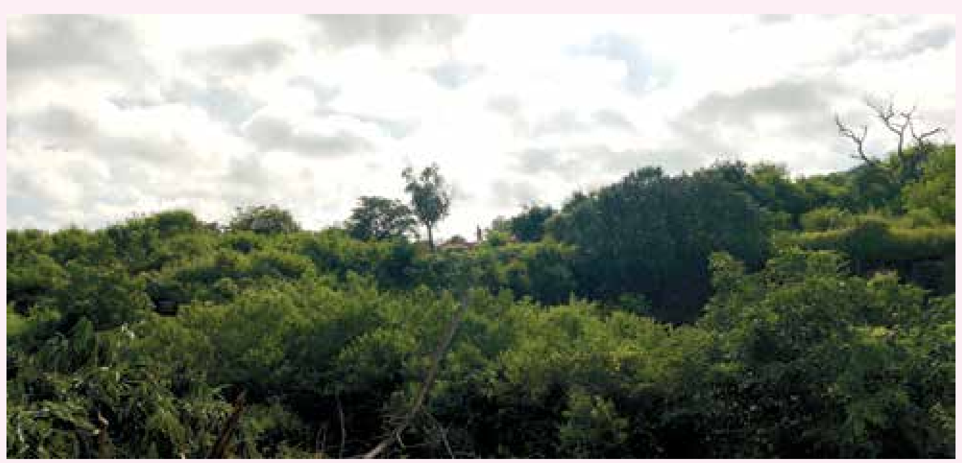

भयं क्षणिकं पश्चाताप: सदा ।। डर अस्थायी है पर अफसोस सदा रहता है।

मैं नहिं पीजा खायो!

(एक सदन में अस्ताचल से ठीक पहले, मसला हो गया। नीली कमीज वाले भाई साहब की अलमारी से, भूलवश, अनजाने में किसी नये रँगरूट ने पीजा उड़ा लिया। पीजा बड़े जतन से सहेजकर रखा गया था, सायंकाल के जलपान हेतु। अलमारी खोली तो होश फाख्ता! होश के साथ, दिमाग की सारी ठंडाई उड़न-छू! फिर भी अपने सभी संचार-साधनों का तुरंत प्रभाव से इस्तेमाल करने पर, नटखट माखनचोर पकड़ आ गया। मगर वह इतना ही भोला था कि कुबूल ही नहीं कर रहा था। और बहानों की फेहरिश्त इतनी लंबी कि बस सुनते जाइए। आप भी सुनिये इसे मधुर आवाज में।)

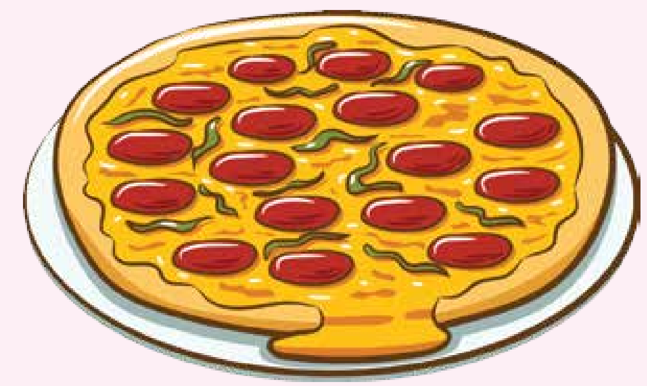

ओ भैया मोरे!
मैं नहिं पीजा खायो।
सुबह उठौ, बेबस, बेचारौ, मॉर्निंग
फिटनेस धायौ।

भैया मोरे!
कोई और ने खायौ।
फिटनेस करकै, न्हायौ धोयौ,
लाइन में चलौ आयौ।

भैया मोरे !
मैं नहिं पीजा खायौ।
मैस गयौ, कालू-भालू संग,
दूध-बिरेड उड़ायौ।
मेरी न मानौ तो तुम,
श्योपुर से पूछौ!
इसकौ बटर चुरायौ।

भैया मोरे!
मैं नहिं पीजा खायौ।
मैं मन कौ छोरो अति भोलौ!!

भोला - भैया!
मेरा नाम भोला है!!
भाई साहब - अच्छा भोला!!
सच कह दे!!
कोई सजा नहीं दूँगा!!!

मैं मन कौ छोरो अति भोलौ,
बस थोड़ौ सौ खायौ!!
बाकी, बैच वालों ने उड़ायौ।
भैया मोरे!
मैं ने ही पीजा खायो!!

भाई साहब- स्कूल रूल चालू!!
अभी से! समझे!!

-गणपत स्वरूप पाठक
हिन्दी अध्यापक

ऊँचाई की परेशानियाँ

ऊँचाई मेरी सबसे बड़ी बात,
पर सिर टकराये दिन में सात।
पंखा चलता सर के पास,
बैठ नहीं पाऊँ मैं हर क्लास।
झुक झुक के चप्पल पहनूँ,
सब फोटो में बाहर रहूँ।
बस में सिर छत से टकराये,
सब कुर्ते छोटे पड़ जायँ।
सब कहते, "वाह! क्या कद है!"
पर दर्द वही समझे जो खुद है।

-अंजुम निशाद, जीवाजी

आकल्पन - देवम गर्ग, ग्यारहवीं, शिवाजी

प्रकृति का संदेश

हरी-भरी धरती प्यारी,
फूलों की रंगीन क्यारी।
नदियाँ बहती गीत सुनायें,
पेड़ों की छाँव हमें छुपायें।
सूरज की सुनहरी किरणें,
खुशियों की सौगात लायें।
चिड़ियों की चहचहाहट में,
जीवन की मिठास पायें।
आओ हम सब मिलकर कहें,
प्रकृति का सम्मान करें।
धरती माँ का रखें मान,
सब मिलकर बढ़ायें प्यार।

आरव कंसल, नौवीं, जयप्पा

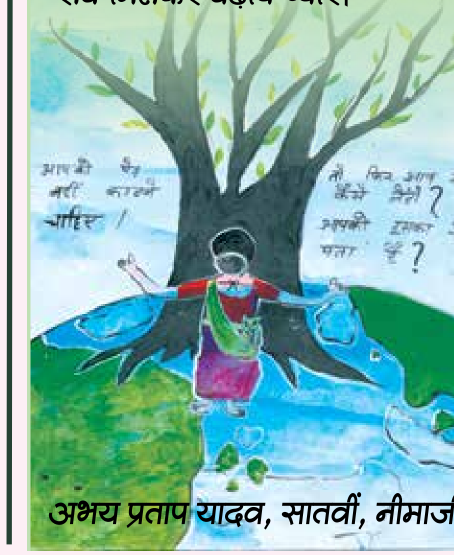

अभय प्रताप यादव, सातवीं, नीमाजी

त्वं यत्र देव: इच्छति तत्र असि ।। आप वहीं है जहाँ ईश्वर चाहता है कि आपर हैं ।

सर! सर! सरला !!

यह मात्र एक दिन का सफर था, जहाँ हम ६९ बच्चे एक भव्य नाटक देखने भोपाल गए थे। नाटक का नाम था- सर सर सरला!

तो सफर की शुरुआत सुबह ६.३० बजे हुई थी। जहाँ हम सब दो बसों में बाँटे गए थे। एक में स्कूल का ब्रास बैण्ड और दूसरी बस में हिन्दी साहित्य सभा के ड्रमैटिक सोसाइटी के छात्र जो विशेष तौर पर नाटक देखने जा रहे थे।

सारा समय जोड़कर हमें कुछ आठ घंटे लगे भोपाल पहुँचने में। भोपाल पहुँचते ही हमने सबसे पहले प्रस्थान किया रवींद्र भवन में जो कि काफी बड़े क्षेत्र में बना हुआ है। हमने वहाँ जाकर थोड़ी पेट-पूजा की और फिर नाटक प्रदर्शन से पूर्व 'नाट्यवार्ता' सुनने एक सभागार में दाखिल हुए। थिएटर-टॉक बहुत अच्छे तरीके से हुआ था। वहाँ पर कुछ बड़े कवि और बड़े बुजुर्ग बैठे थे और एक-दूसरे से सवाल पूछ रहे थे।

उसके बाद हम बाहर निकले। मुक्ताकाशी मंच सजा था। वहाँ संस्कार वैली के बच्चों द्वारा प्रस्तुत गानों को सुना, जिन्हें सुनकर हम भी गुनगुना उठे।

फिर वो क्षण आया जब सिंधिया स्कूल ब्रास बैंड आया। वहाँ हुजूम लग गया। आसपास खड़े-बतियाते लोग भागकर उधर आने लगे, जिधर हमारा ब्रास-बैंड मधुर और जोशीली धुनें सुना रहा था। सभी हैरत और उत्सुकता से सुन रहे थे। वहाँ के लोग बता रहे थे कि उनके तो जैसे रोंगटे खड़े गए, जब हमारे स्कूल के बैंड ने 'जय हो' बजाना शुरु किया ।

सबसे बड़ी बात यह थी कि बहुत बड़े रंगकर्मी, निर्देशक-अभिनेता मकरंद देशपाण्डे ग्रीन रूम में साज-सज्जा में व्यस्त थे। जब उनके कानों में ब्रास-बैंड की धुन पड़ी, वे भागकर बाहर आ गये और बड़े भाव-विभोर होकर उन्होंने पूरी प्रस्तुति देखी। फिर उन्होंने हमारे सभी नौजवानों को सम्मानित किया। यह पल हम सभी को गौरवान्वित करने वाला था।

अब वो पल आया, जब हम सब उनका नाटक 'सर सर सरला' देखने पहुँचे। वह करीबन ३ घंटे का नाटक जो कि बहुत अद्भुत था। इस नाटक में हँसी-मजाक भी था और दुख भी। एक क्षण तो लगा था- आज तो मैं रो ही दूँगा। इसमें गुरु और शिष्य के एक अटूट रिश्ते की बात की गई थी। मुझे लगता है इसका उद्देश्य यही था कि हमें हमारे गुरु की सदैव इज़्ज़त करनी चाहिए।

फिर क्या था, हम चल पड़े अपने स्कूल वापस! और वही कुछ सुबह साढ़े आठ बजे लौट आये, सारी सीख लेकर!!

-प्रभात बाजपेयी, दसवीं, शिवाजी

Link for the video:-

https://www.instagram.com/reel/DG5OR_4hjbq/?igsh=dHJlcHV5cTJyeGI4

सर! सर! सरला!! नाटक इतना अच्छा था कि मैं यह भूल गया कि यह एक नाटक है। मुझे लग रहा था वह सब असली में हो रहा है।

-कृशिव अगरवाल, दसवीं, महादजी

संघर्षः भवतः सामर्थ्य वर्धयति ।। संघर्ष आपकी क्षमता बढ़ाता है ।

आज तक हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता

हमारे स्कूल के तीन विद्यार्थियों, युवराज सेठिया, अर्णव जोशी और अयान अग्रवाल ने "आज तक हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता" में अद्वितीय प्रदर्शन किया। इस प्रतिष्ठित प्रतियोगिता में कुल ३६ स्कूलों ने भाग लिया, और हमारे विद्यार्थियों ने पहले चरण में एक बेहतरीन शुरुआत करते हुए अपना स्थान शीर्ष पर सुनिश्चित किया। इस राउण्ड में अर्णव जोशी को सर्वश्रेष्ठ वक्ता का पुरस्कार मिला, जो उनके वक्तृत्व कला और तर्कपूर्ण विचारों का प्रमाण था।

दूसरे राउण्ड में भी हमारी टीम ने अपनी दमदार मेहनत और निरंतरता का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। हमने फिर से पूल टॉप किया, जहाँ अर्णव जोशी को फिर से सर्वश्रेष्ठ वक्ता का सम्मान मिला। युवराज सेठिया को दूसरे सर्वश्रेष्ठ वक्ता और अयान अग्रवाल को चौथे सर्वश्रेष्ठ वक्ता के रूप में सम्मानित किया गया। इस राउण्ड में कुल १८ स्कूलों ने अर्हता प्राप्त की थी, लेकिन हमारी टीम का प्रदर्शन बहुत ही विशेष था, क्योंकि हमारी टीम के तीन सर्वश्रेष्ठ वक्ताओं के रूप में शीर्ष चार में शामिल हुए। इस सफलता के बाद हमारी टीम सेमीफाइनल में पहुँची, जहाँ केवल ७ स्कूलों ने जगह बनाई, यह हमारे लिए गर्व का क्षण था। अंतिम मुकाबला मेजबान विद्यालय वसंत वैली ने जीता।

यह प्रतियोगिता न केवल हमें वाद-विवाद की कला सिखाने वाली थी, बल्कि इसने हमें सामूहिक प्रयास, दृढ़ निश्चय और समर्पण की असली ताकत जतलाई। हमें यह एहसास हुआ कि केवल व्यक्तिगत प्रयास ही नहीं, बल्कि सदस्यों के सामूहिक प्रयास से ही सफलता संभव होती है। इसने हमारी सोच को परिष्कृत किया, आत्मविश्वास को बढ़ाया और एक नए दृष्टिकोण से हमें अपने विचारों को प्रस्तुत करने का दृष्टिकोण दिया।

हम इस अनुभव को जीवनभर सँजोकर रखेंगे और भविष्य में और भी बेहतर प्रदर्शन के लिए प्रेरित होंगे।

युवराज सेठिया, बारहवीं, दौलत

पहाड़ों पर मेरा मन!

पहाड़ों पर चलता
राहों पर भटकता
मेरा मन तो कहीं भटकता।

पहाड़ों पर चलता
राहों पर सरकता
जहाँ जाता वहाँ भटकता।
मेरा मन तो कहीं भटकता।
बारिश हो या बरफ हो
गरमी हो या सरदी हो।
मेरा मन तो कहीं भटकता।
वहीं कहीं पहाड़ों पर अटकता।

विश्वजीत सिंह, नौवीं, रानोजी

हॉकी से जुड़ा नाता।

सैट्स मतलब है खेल ।
क्रिकेट के लिए अन-स्टॉपेबल है
मेरे दिल का रेल।

सिंधिया स्कूल आकर
हॉकी से जुड़ा नाता।
बात अलग है कि मुझे
उतना खेलना नहीं आता।

ट्राइएंग्युलर हारकर
टूटा दिल का तार
लेकिन आईपीएल ने किया
मन का हल्का भार।
क्योंकि बल्लेबाजों ने मारा सिक्स
और गेंद को कर दिया
आउट ऑफ बॉउन्ड्री फिक्स।

चर्चित कृष्णा, सातवीं, दत्ताजी

शान्तं स्थातुं आत्मन: परमा सिद्धि: ।। शांत रहना ही स्वयं की सर्वोच्च उपलब्धि है ।

ब्रास बैंड की गूँज : गर्व का सफर

"लय वही है जो जीवन को दिशा देती है,और थाप वही है जो आत्मा को गति देती है।"

यह कहानी एक विद्यार्थी की है, जिसने ब्रास बैंड के माध्यम से अनुशासन, संघर्ष और आत्मविश्वास की असाधारण यात्रा तय की। यह सफर मैंने आठवीं कक्षा से शुरू किया था और आज ग्यारहवीं में खड़े होकर पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो लगता है कि यह केवल संगीत सीखने की कहानी नहीं है, बल्कि जीवन को जीने की कला सीखने की दास्तान है।

आठवीं कक्षा में जब मैंने पहली बार ब्रास बैंड ज्वाइन किया, तब मेरे हाथ में बिगुल आया। उसकी तेज और सख्त आवाज को काबू में करना आसान नहीं था। कई बार सुर बिगड़ जाते, साँस थक जाती, होंठ दुखने लगते। लेकिन हर सुबह अभ्यास के मैदान में खड़े होकर जब बिगुल की गूँज सुनाई देती, तो भीतर से आत्मविश्वास जागता। कुछ ही दिनों बाद जब मैंने बिगुल सही से बजाना सीख लिया, तो मुझे ट्रोम्बोन मिला।

ट्रोम्बोन मेरे लिए सिर्फ एक वाद्ययंत्र नहीं, बल्कि जिम्मेदारी का प्रतीक था। उसके गहरे और गूँजते सुर बजाना एक बड़ी चुनौती थी। दिन-प्रतिदिन के अभ्यास और बैंड मास्टर की डाँट-फटकार ने मुझे बेहतर बनाते हुए यह एहसास कराया कि मेहनत के बिना कोई भी धुन पूरी नहीं हो सकती। यहाँ पर मैं विशेष रूप से अपने बैंड मास्टर श्री अशोक कुमार जी का जिक्र करना चाहूँगा। वे स्वयं भारतीय सेना में रह चुके हैं और वही अनुशासन, वही कठोर परिश्रम की भावना वे आज भी हम तक पहुँचाते हैं। उनकी आँखों की चमक और आवाज की दृढ़ता हमेशा हमें यह याद दिलाती है कि ब्रास बैंड सिर्फ संगीत नहीं, बल्कि सम्मान और जिम्मेदारी है। वे सिर्फ बैंड तक सीमित नहीं रहते, बल्कि स्कूल जीवन के हर पहलू में हमें सहयोग देते हैं। जब भी मन में कोई शंका, कोई कमजोरी या कोई परेशानी आती है, उनकी सलाह और नैतिक समर्थन हमें संबल प्रदान करते हैं। उनके शब्दों में एक सैनिक की दृढ़ता और एक शिक्षक का स्नेह दोनों समाए रहते हैं।

आठवीं कक्षा का वर्ष मेरे जीवन का सबसे अनूठा व यादगार अनुभव लेकर आया। मुझे एनसीसी रिपब्लिक डे कैंप में दिल्ली जाने का अवसर मिला। पूरा एक महीना अनुशासन और अभ्यास में बीता। जनवरी की ठंडी सुबहें, कोहरे से ढँका आसमान और पाँच बजे का अभ्यास आज भी मेरी यादों में जीवंत हैं। और फिर आया २६ जनवरी का दिन। उस सुबह जब मैंने कर्त्तव्य-पथ पर कदमताल की, तो दिल की धड़कनें भी मानो ढोल की थाप में बदल गईं। तिरंगे की छाया में, लाखों निगाहों के सामने मार्च करना मेरे जीवन का सबसे गर्वपूर्ण पल था।

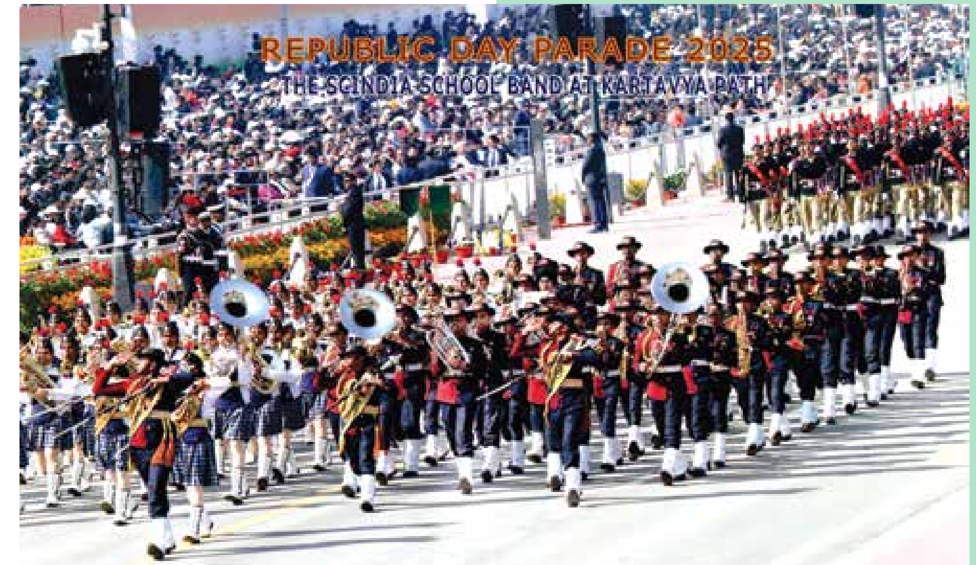

नौवीं कक्षा में मुझे फिर से **RDC** में जाने का सौभाग्य मिला। इस बार मुझे प्रधानमंत्री रैली का हिस्सा बनने का अवसर मिला। जब प्रधानमंत्री के सामने हम सबने एक स्वर और एक लय में अपनी प्रस्तुति दी, तो लगा जैसे देश की युवा शक्ति का संदेश सीधा मंच से निकलकर पूरे भारत तक पहुँच रहा हो। लेकिन इस सफर में सिर्फ हमारे शिक्षक ही नहीं, कुछ और लोग भी चुपचाप हमारे साथ खड़े रहे। उनमें से एक हैं हमारे विजय भैया। बैंड का कोई भी छोटा-बड़ा काम हो, वाद्ययंत्र में कोई समस्या हो या फिर हमें किसी व्यक्तिगत मदद की आवश्यकता हो, विजय भैया ने कभी 'ना' नहीं कहा। उनकी मुस्कान ने हमेशा हमें यह एहसास दिलाया कि सच्चा सहयोग वही है, जो बिना शर्त और बिना थके मिलता है। सच कहूँ तो, कई बार बैंड की सफलता के पीछे उनका मौन योगदान ही सबसे मजबूत आधार होता है।

फिर आया दसवीं कक्षा का साल। यह साल पढ़ाई और बोर्ड परीक्षाओं का था। परंपरा के अनुसार दसवीं के विद्यार्थियों को **RDC** में जाने की अनुमति नहीं होती। मेरे लिए यह एक कसक थी। एक पूरा साल दिल्ली न जा पाने और उस अनुभव से दूर रहने का दुख मुझे लगातार खलता रहा। लेकिन इसी वर्ष मैंने यह भी समझा कि कभी-कभी धैर्य सबसे बड़ा गुण होता है।

अब मैं ग्यारहवीं कक्षा में हूँ। इस बार मेरे हाथ में बेस ड्रम है। इसकी थाप पूरे बैंड की धड़कन है। जब मेरी थाप गूँजती है और पैंतालीस कदम उसी ताल पर आगे बढ़ते हैं, तो मुझे लगता है मानो मेरी धड़कनें पूरे बैंड की आत्मा बन गई हों। इस जिम्मेदारी ने मुझे और परिपक्व बना दिया है।

इस यात्रा में सबसे बड़ी चुनौती हमेशा रही, पढ़ाई और बैंड का संतुलन। सुबह की नींद छोड़कर अभ्यास करना, दिनभर कक्षाओं में ध्यान लगाना और शाम को दोबारा रिहर्सल करना आसान नहीं था। कई बार थकान से शरीर जवाब दे देता, लेकिन हर बार मन यही कहता,"तुम किसी साधारण काम के लिए मेहनत नहीं कर रहे, यह तुम्हारे जीवन का गर्व है।"

आज जब मैं अपने चार साल की इस यात्रा को देखता हूँ, तो पाता हूँ कि यह केवल वाद्ययंत्रों का बदलाव नहीं था। बिगुल से ट्रोम्बोन और अब बेस-ड्रम तक की यह यात्रा आत्म-विकास की यात्रा रही। इसने मुझे अनुशासन सिखाया, धैर्य का मूल्य समझाया और टीमवर्क की शक्ति का एहसास कराया। आठवीं कक्षा की उन सुबहों से लेकर ग्यारहवीं कक्षा की इन थापों तक, हर एक दिन ने मुझे नया बनाया है। कर्त्तव्य-पथ की परेड और प्रधानमंत्री रैली की स्मृतियाँ मुझे बार-बार याद दिलाती हैं कि मैं कितना भाग्यशाली हूँ। अब जब सन २०२६ का गणतंत्र दिवस करीब आ रहा है, तो मेरे दिल में फिर वही उत्साह है कि एक बार फिर दिल्ली की ठंडी हवाओं में कदमताल करूँ और तिरंगे की छाया में अपनी थाप की छाप छोड़ूँ।

"संगीत की ध्वनि कानों से मिट जाती है, पर उसकी गूँज आत्मा में हमेशा जीवित रहती है।"

ब्रास बैंड की यही गूँज मेरी सबसे बड़ी धरोहर है, और यही गूँज मुझे आने वाले हर रास्ते पर दिशा देती रहेगी।

खुश टोड़ी
कक्षा ग्यारहवीं, शिवाजी

कहानी लेखन प्रतियोगिता

हिन्दी साहित्य सभा ने "उपलब्धि" पत्रिका का रजत जयंती वर्ष रचनात्मक ढंग से मनाया। इस उपलक्ष्य में अनेक प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई। २१ अगस्त को कहानी लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई। कहानियाँ लिखने वाले छात्रों को प्रार्थना सभा में प्राचार्य महोदय द्वारा विशेष रूप से पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। आप भी पढ़िये:-

'प्रथम पुरस्कार'

असफल बहाना

मनुष्य न जाने अपने जीवनकाल में कितने बहाने बनाता होगा। इन बहानों की गिनती का, शायद अंत ही न हो। आज के समय में तो ०.१% लोग भी शुद्ध नहीं होंगे। नौकर सेठ से, विद्यार्थी अध्यापक से, बच्चा माँ-बाप से और कई बार ईश्वर को भी बहाने देते हैं लोग। इन बहानों के अनगिनत कारण हैं। जैसे मार-कुटाई से भागना, इज्जत बचाना आदि। मैं भी इन लोगों के समान हूँ।

मुझे आज भी याद है वह दिन, और शायद कभी न भूल पाऊँ। मैं अपनी कहानी शुरू करने से पहले कुछ बातें चाहूँगा। मैंने दसवीं कक्षा डलहौजी पब्लिक स्कूल से की है जो कि एक बोर्डिंग स्कूल है। वहाँ की दिनचर्या कुछ इस प्रकार थी कि सुबह के भोजन से पहले ट्यूशन हुआ करती थी। अध्यापक पढ़ाई में कमजोर बच्चों को पढ़ाते थे और वह बच्चे जो पढ़ाई में बहुत अच्छे थे, उन्हें कम्प्यूटर पर पढ़ने की इजाजत थी। मैं और मेरे साथ के बीस और बच्चे रोज लैब जाते थे।

मैं स्कूल का अच्छों-में-अच्छा विद्यार्थी माना जाता था। मैं लैब जाकर तीस मिनिट खेलता था और तीस मिनिट पढ़ता था। मैं सोचता था कि कोई आएगा को तो टैब बदल देंगे और अध्यापक को लगेगा कि मैं पढ़ रहा हूँ। इस प्रकार का कार्यक्रम दो महीनों तक चला।

फिर एक बार प्रधानाचार्य जी बच्चों को देखने आए। मैंने उन्हें देखा और टैब बदला और बहाना मारा कि मैं टैब पर पढ़ ही तो रहा था। जिस प्रकार मनुष्य सोचता है, वैसा होता नहीं है। प्रधानाचार्य जी मेरे पास आये और उन्होंने टैब बदला और मैं पकड़ा गया। मुझे कुछ नहीं कहा गया और लैब से बाहर कर दिया गया। और अध्यापक द्वारा पढ़ने-पढ़ाने वाले बच्चों के साथ डाल दिया।

चाणक्य द्वारा कहा गया है न ! साम, दाम, दंड, भेद। मेरे साथ भी वही हुआ। मुझे पूरे दिन वह बात चुभती रही और निराशा सिर पर छाता बनकर तनी रही। शरम के सागर में डूब गया। कमाल की बात यह थी कि अगले दिन मेरा जन्मदिन था।

मैं जन्मदिन का जश्न मनाने की इजाजत लेने प्रधानाचार्य कार्यालय गया। प्रधानाचार्य ने मुझे मना कर दिया। क्योंकि उस समय परीक्षाएँ चल रही थीं। परंतु फिर रोककर बोले, "तोहफे के तौर पर तुम्हें लैब में कंप्यूटर चलाने की इजाजत है।''

मैं उस समय फूला न समाया और अपने आप पर तथा ईश्वर द्वारा रचित जीवन पर बहुत हँसा। वह दिन मेरे लिए सोना-चाँदी से कम नहीं है! और वह अध्यापक यानि प्रधानाचार्य तथा मेरे प्रिय मित्र मेरे दिल में बसते हैं। मैं फिर से कम्प्यूटर चलाने लगा और समय कब कट गया, पता ही नहीं लगा।

देवांश भूटानी

ग्यारहवीं 'अ', महादजी

'द्वितीय पुरस्कार'

मंगलमय रविवार

प्रयाण के जीवन का एक आम-सा दिन था। बाहर धूप थी, गर्मी बहुत ज्यादा थी और नीचे से आ रही थी माँ की आवाज, "प्रयाण! बेटा जल्दी आओ, तुम्हारे लिए एक काम है!"

प्रयाण यह सुनकर फुर्ती से उठा, ''आया माँ!''

उसने हड़बड़ी में कपड़े पहने बदले, मुँह धोया और चल दिया नीचे।

"हाँ माँ?"

माँ बोली, "बेटा घर में दूध खत्म हो गया है, तुम जल्दी से ले आओ।"

प्रयाण यह सुनकर थोड़ा निराश हुआ, आखिर वह बहुत उत्साह से आया था। माँ ने उसकी शक्ल देखी और वह उसकी निराशा महसूस कर पाई।

''बेटा यह लो दो सौ रुपये, जो पैसे बच जाएँ, उनसे अपने लिए कुछ खाने-पीने का खरीद लेना।''

प्रयाण यह सुनकर बहुत खुश हुआ, आखिर इतनी गर्मी में आईसक्रीम खाकर तो मजे ही आ जाएँगे। उसने फट् से पैसे लिए, माँ को 'बाय' बोला और बाहर चल दिया।

रास्ते में उसे एक प्यारा-सा पिल्ला दिखा। उसने पिल्ले को देखकर कहा, ''ओले, कितना प्यारा है!'' मगर वह रुका नहीं और चलता गया। उसने फट् से दूध और बिस्किट खरीदे और घर की ओर चल दिया।

रास्ते में उसे फिर, वह प्यारा, काला और भोला-सा पिल्ला दिखा। उसने पिल्ले को बिस्किट खिलाये और वह घर चला गया।

उसने दरवाजा खोलते हुए बोला, ''माँ, मैं आ गया।"

मगर इससे पहले वह दरवाजा बंद करता, वह कुत्ता जिसका नाम प्रयाण ने स्पारकी रख दिया था, अंदर आ गया। स्पारकी को देख प्रयाण की माँ भावुक हो गई।

माँ ने थोड़ी देर सोचने के बाद कहा, ''ठीक है, मगर इसकी गंदगी तुम ही साफ करोगे।''

यह बात सुनकर प्रयाण खुशी के मारे उछलने लगा। जो एक मामूली-सा रविवार था, वह प्रयाण के जीवन का सबसे यादगार दिन बन गया।

-मानविक नागा, आठवीं, निमाजी

'तृतीय पुरस्कार'

फिटनेस नहीं जाऊँगा

रात को ही मैंने सोच रखा था कि कल सुबह फिटनेस नहीं जाऊँगा।

उसी समय एक आवाज आई, ''कल मैं किसी का बहाना नहीं सुन लूँ!''

मैंने सोचा कि मतलब कल सुबह फिर उठना पड़ेगा और सोचते-सोचते मैंने सोचा-चक्कर खाकर गिर जाना कैसा रहेगा? मै 'लाइनअप' में ही गिर पड़ा।

मेरे दोस्त को पता था कि मैं नाटक कर रहा हूँ। उसको लगा अब उसको अकेले फिटनैस जाना पड़ेगा। उसी समय उसको भयंकर पेट दर्द होने लगा।

वो 'लाइनअप' के बीच में चिल्ला रहा है, ''मम्मी! पापा!! मेरा पेट!!!''

हाउस मास्टर बोले,''चिकन खाओगे तो यही होगा।" सर ने ही उसे दवाई दे दी। वो परेशान कि फिटनेस जाना पड़ेगा। फिर उसके पेट में आया हार्ट-अटैक। वो भी बहोश। अब वो हैल्थ-सैंटर आ ही रहा था, तब तक उसके पैर पर किसी ने पैर रख दिया। अब वो था, होश में। पर, सर को ये था कि वो बेहोश है। पैर रखते ही वो चिल्ला उठा।

सर भी चिल्ला पड़े, "तुम होश में हो?" वो वापस पकड़ा गया।

मैं वहाँ हैल्थ-सैंटर की सर्वश्रेष्ठ दवाई ''ओआरएस'' पी रहा था। अब उसने मुझसे कहा कि अब कोई फिटनेस नहीं जाएगा।

वो बोला, "हे इंद्र देवता! आपको इस स्कूल की कसम, बारिश कराओ!"

वो पागल हो गया। रात के साढ़े ग्यारह बजे छुप-छुपाकर एचसी आया। डॉक्टर से ''नो फिजिकल एक्टिविटी" माँगने नहीं, भीख माँगने आया था।

उसने सब तरीके अपना लिए, जितने बहाने आप सोच सकते हैं, उससे भी ज्यादा। अब उसके जीवन में सिर्फ एक ही लक्ष्य रह गया था कि फिटनेस नहीं जाऊँगा। अब उसने सोचा कि सुबह दोस्त से कह दूँगा कि लाइनअप में 'हाउस-रैस्ट' बोल देना। पर, उसको याद आया कि अब तो रैस्ट की स्लिप भी चैक होती है।

अब रात में वो पूरा पसीने से भरा था। ऊपर से, उसने पानी पी लिया ठंडा। तो उसे बुखार आ गया। एच-सी आया। एडमिट हुआ। रात के एक बजे उसका बुखार उतर गया, वो हाउस चला गया। अब उसको आई गुस्सा।

वो हाउसमास्टर के पास जाकर बोला, "सर वो गर्वित नाटक कर रहा है!"

अब सर रात सवा बजे एच-सी आये।

भैया से पूछा, "गर्वित होश में है या बेहोश?"

भैया बोले, "बेहोश है!"

सर ने डाला पानी। मैं होश में था। सर के पानी डालने से पहले उठ गया।

अब मैं और मेरा दोस्त दोनों मॉर्निंग-फिटनेस गये। हम कोच के सामने बैठ गये। उनको लगा कि हमें चोट है। उन्होंने हमें रैस्ट करने दिया।

-गर्वित अग्रवाल, नौवीं 'स', जीवाजी

'संयुक्त तृतीय पुरस्कार'

क़िस्सा बनकर ही रह जानी है!

आजकल मुझे उन दिनों के, कक्षा के किस्सों की याद आती है,जब हम छोटे थे। वही, कक्षा में शैतानियाँ! पीछे बैठना, दोस्तों के साथ गप्पें लगाना। दोस्तों की चुगली करना, दूसरों का टिफिन खा जाना।

सुबह झगड़ना और फिर दोस्त बन जाना। जब कुछ लाना भूल जाते तो दोस्तों से सामान माँगना, "अरे भाई ये दे दे!! वो दे दे!! किसी का दोस्त बनना होता तो उसकी थोड़ी चमचागीरी करनी पड़ती। अगर लड़की के पास बैठ जाओ तो दोस्त हँसते।

अगर किसी बाहर वाले से लड़ते तो सारे दोस्त साथ खड़े हो जाते। वहीं अगर किसी दोस्त से लड़ते तो सारे के सारे तमाशा देखने आ जाते। पर वो कक्षा ही क्या जिसमें थोड़ी लड़ाई, भाईचारा, शिक्षक से डाँट खाना न हो।

यही वो कक्षा है जो हमें थोड़ा रुलाती है, हँसाती है, डाँट पड़वाती है और अंत में एक याद बनकर रह जाती है। यही वो कक्षा का समय है बच्चो! जी लो!! वरना यह कक्षा किस्सा बनकर ही रह जानी है। यही कक्षा है जो आपको बार-बार याद आनी है।

-अभिषेक शिवहरे

सातवीं, 'स', जनकोजी

न मातु: परदैवतम् ।। माँ से बढ़कर कोई देव नहीं है ।

कालो न यातो वयमेव याता: ।। काल नहीं बीता, हम ही बीत गये हैं ।

सिंधिया दुर्ग जैव मण्डल

पेड़-पक्षियों संग जीवन

कितनी ही बार, हम सुबह पंछियों की आवाज से उठते हैं। खेल-कूद के समय वह फील्ड पर आ जाते हैं। अरे! वह तो फीस भी नहीं हैं देते। शाम को उड़कर अपने घर भी चले जाते हैं। यह और अन्य जानवर यदि कोई गलती कर दें तो इन्हें डाँट भी नहीं पड़ती। जब हमारे सदन में पार्टी हो तो हमारे सदन में आ जाते हैं और दूसरे में हो तो दूसरे में चले जाते हैं। इनकी जिंदगी तो 'डे स्कॉलर' से भी ज्यादा अच्छी है।

और कुत्ते! उनकी तो बात ही मत करो। प्रैप के अंदर आकर आजादी से घूमकर हमें ईर्ष्या से भरा छोड़ जाते हैं। बारिश में बिना कोई बंधन के मोर आराम से नाचता हैं। पेड़ों की पत्तियों की आवाज और पानी के टपकने की 'टिप्प टिप्प' में अपने छात्रवास के दालान में या कमरे में बैठना, अस्ताचल में बैठने जैसा है सुकून देता है।

एक बार, हमें स्कूल जल्दी पहुँचना था और एक गाय बीच सड़क पर बैठ गई। अरे, अब उसको कौन बताये कि हमें जाना है। पेड़ों को देखो, कितना संतोषी और आरामदायक जीवन जीते हैं। पेड़ों ने बहुत पहले एक तरकीब सोची, "यदि मैं मनुष्यों की कुछ नहीं दूँगा, तो मनुष्य मुझे हर जगह से एक अड़चन के तौर पर देखेंगे।" इसलिए पेड़ प्राणवायु देते हैं। और मनुष्य तो है ही लालची, इसलिए पेड़ हर जगह लगाते रहते हैं। इसलिए कभी पेड़-पौधों की नासमझ न समझना। इनकी चालाकी हमारी समझ के परे है।

रुद्राक्ष जिंदल
कक्षा ७ 'अ', दत्ताजी

अपना परिवार है...

सब पेड़-पौधे, पक्षी और जानवर, एक चीज के अंदर सभी रहते हैं, जो हमारी माँ प्रकृति है। जब मैं इस दुर्ग पर आया था, तब मुझे अकेला, सुनसान लगता था। पर, अब मुझे समझ आ गया कि यह तो जीवन से भरा है। यहाँ रहते-रहते, मैंने यही महसूस किया कि मेरे दोस्तों को छोड़कर, मेरे परिवार में कोई और भी है। वह यहाँ के पक्षी हैं!

मैंने यहाँ आकर अन्य पक्षी देखे, जैसे मोर, बुलबुल, तोता, गलगल, चील आदि पक्षी। इन पक्षियों की एक बात मुझे बहुत प्यारी लगी कि यह प्रकृति को बनाये रखने में मदद करती है।

चलिये, यह सब छोड़िये, मुझे पक्षियों का गीत सुनने में भी बहुत आनंद आता है। ऐसा लगता है कि यह सब मुझे कुछ बताना चाहते हैं।

आपको पता है एक बार मैंने एक बुलबुल के साथ झगड़ा कर लिया था। पर, तब भी प्यारी और छोटी थी। वह एक शीशे के पास जाकर, उसको देखती, फिर उछल-उछल कर भाग जाती। ऐसा लगता कि वह अपनी परछाई को देखकर व मोहित हो रही थी। उनको भी तो एक मौका मिलना चाहिए, अपनी झलक देखने की। आखिरकार वह तो हमारे मित्र हैं।

मैं अत्यंत प्रयास करता हूँ कि इन पक्षियों को उनका घर मिल सके। एक बार तो मैं एक पक्षी को ताकते ही गया, और वह भी मुझे ऐसे देख रहा था कि मैंने कोई अपराध किया हो। मैं तो डर कर भाग गया।

आपको पता है, चाहे कोई भी आ जाए, पर मोर से तेज कोई नहीं भाग पाएगा। यह कहना चाहता हूँ कि यह वह पक्षी है जिसके पंख श्रीकृष्ण मुकुट में लगाते थे। तो हम क्यों पक्षियों को कृष्ण से कम समझें! तो हमें इनको अपने परिवार का सदस्य बनाना चाहिए और इनको दिलों में एक प्रिय स्थान देना चाहिए!

-विक्रमादित्य
सातवीं 'अ' जनकोजी

पेड़ों की छाया, मानो जन्नत

मैं जिस जगह पर रहती हूँ, वहाँ पर्यावरण बहुत सुंदर हैं। घर से स्कूल के तरफ जाते-जाते, मुँह पर जो हवा लगती है, जो ठंडक पेड़ और पौधों की वजह से लगती है, उसका तो कोई जवाब ही नहीं।

रास्ते में मुझे हर रोज नए-नए पक्षी देखने को मिलते हैं, और अलग-अलग तरह की आवाजें सुनने को मिलती हैं। स्कूल में अलग-अलग पेड़ों को देखकर उत्सुकता और भी ज्यादा बढ़ जाती है। और मजा भी आता है।

घर के पीछे हर दिन एक-न-एक मोर के दर्शन होते हैं। स्कूल के मिडोज में जाकर तरह के पेड़-पौधे देखकर, उनके बारे में ज्ञान प्राप्त करके बहुत अच्छा लगता है। दोपहर में इतनी गर्मी में घर जाते वक्त, इतनी धूप में जब पेड़ों की छाया मिल जाती है तो मानो जन्नत मिल जाती है। धूप से निकलकर छाँव में आने की खुशी ही अलग होती है।

हमें जीने के लिए जो प्राण-वायु मिलती है, वो पेड़-पौधों के बिना असंभव है। पेड़-पौधो के बिना हमारा जीवन बहुत अधूरा है।

-दीया शर्मा
सात 'अ', कनेरखेड़

संकल्प और धरोहर की कहानी

आज हम एक ऐसे शख्स से मिल रहे हैं जिन्होंने ३५ वर्षों तक सिंधिया स्कूल में अपनी सेवा दी और न केवल स्कूल के वातावरण को बेहतर बनाने में योगदान दिया, बल्कि विद्यार्थियों और शिक्षकों के दिलों में भी एक विशेष स्थान बना लिया। अशोक पाल भैया का जीवन संघर्ष, सेवा और समर्पण का जीवंत उदाहरण है। आइए जानते हैं, उनकी यात्रा के बारे में।

रणवीर चौहान: नमस्ते अशोक भैया, सबसे पहले, यह बताइए कि आप इस स्कूल में कितने वर्षों से काम कर रहे हैं?

भैया अशोक पाल: नमस्ते भैया। मैंने इस स्कूल में ३५ साल काम किया है।

रणवीर चौहान: ३५ साल! तो आपको सिंधिया स्कूल में क्या ऐसा खास लगा जो इसे अन्य स्कूलों से अलग बनाता है?

भैया अशोक पाल: यहाँ का माहौल बहुत अलग है। मेरे चाचा-चाची भी यहाँ रहते थे, तो मैं शुरू से ही यहाँ का हिस्सा रहा हूँ। जब आप एक समुद्र किनारे के इलाके में रहते हैं, तो वहाँ का वातावरण कुछ अलग ही होता है। चाहे बाहर कितना भी अच्छा हो, यहाँ का माहौल ही कुछ और है।

रणवीर चौहान: आपकी यात्रा शुरू कहाँ से हुई थी? कब आप पहली बार यहाँ आए थे?

भैया अशोक पाल: मेरी पहली पोस्टिंग माधव हाउस में थी। इन ३५ सालों में मैंने कई जगहों पर काम किया। माधव हाउस के बाद मैं गेट पर भी काम करने आया। पहले हम ही स्कूल के मुख्य दरवाज़े पर तैनात रहते थे उसके बाद, मैंने जूनियर मैस और बड़े मैस में भी काम किया।

रणवीर चौहान: इतनी लंबी यात्रा में क्या कभी ऐसा समय आया जब आपको लगा कि आपको स्कूल छोड़ देना चाहिए था?

भैया अशोक पाल: ऐसा कुछ नहीं था। मुझे कभी ऐसा नहीं लगा कि मुझे स्कूल छोड़ना चाहिए। घर में जैसे दो बच्चे होते हैं, वैसे ही यहाँ भी कभी बच्चों का व्यवहार अलग होता है, लेकिन मेरा काम मेरे लिए सबसे महत्वपूर्ण है। अगर मैं अपना काम सही तरीके से करता हूँ, तो पूरी दुनिया सही रहेगी।

रणवीर चौहान: कोई विशेष याद है जो बच्चों के साथ जुड़ी हो?

भैया अशोक पाल: कई बार बच्चों के साथ अच्छा समय बिताया है, लेकिन मुझे कभी कोई विशेष बच्चा याद नहीं आता। जब बच्चे बड़े हो जाते हैं, तो मुझे उनकी यादें जरूर आती हैं। सभी बच्चे हमारे लिए समान होते हैं, और मुझे लगता है कि जब आप इस स्कूल में रहते हैं, तो ही आपकी असली परवरिश होती है।

रणवीर चौहान: स्कूल में बहुत बदलाव आए हैं। क्या आपने कुछ ऐसा देखा है जो पहले नहीं था?

भैया अशोक पाल: पहले इस स्कूल में ११०० बच्चे होते थे, और जूनियर स्कूल भी चलता था। पहले यहाँ ३ मेस स्कूल में हुआ करते थे। इस बदलाव के साथ अनेक परिवर्तन आए हैं।

रणवीर चौहान: आपकी यात्रा सचमुच प्रेरणादायक है। आप अब सेवानिवृत्त हो रहे हैं, तो चलते-चलते सिंधिया परिवार के लिए संदेश क्या होगा?

भैया अशोक पाल: मैं यही कहूँगा कि कड़ी मेहनत करो, अच्छे से पढ़ाई करो और हमेशा आगे बढ़ो। शिक्षा से ही भविष्य बनता है। मैंने खुद भी बहुत कुछ सीखा है और अपने अनुभवों से बच्चों को भी सिखाया है। अब मैं रिटायर होने वाला हूँ, लेकिन इस स्कूल से जुड़ी यादें हमेशा मेरे दिल में रहेंगी।

रणवीर चौहान: एक बार फिर धन्यवाद, भैया, हमें अपना अमूल्य समय देने के लिए।

भैया अशोक पाल: धन्यवाद। और, हमेशा ध्यान रखना कि बच्चों का कर्तव्य है सही शिक्षा प्राप्त करना।

रणवीर चौहान
ग्यारहवीं, शिवाजी

अनुभव की आवाज

पूरण भैया, सिंधिया स्कूल के सबसे पुराने और समर्पित कर्मचारियों में से एक हैं। पिछले तैंतीस वर्षों से उन्होंने इस विद्यालय के हर उतार-चढ़ाव को न केवल देखा, बल्कि उसे जीया भी है। वे न केवल एक कर्मचारी हैं, बल्कि इस परिवार का अहम हिस्सा हैं। प्रस्तुत है उनका एक आत्मीय और अनुभवपूर्ण विशेष साक्षात्कार, छात्र-संपादक रणवीर से, वार्षिक हिन्दी पत्रिका उपलब्धि के लिए।

रणवीर: नमस्ते पूरण भैया, सबसे पहले आपका धन्यवाद कि आपने हमारे वार्षिक पत्रिका ''उपलब्धि'' के लिए समय निकाला।

पूरण भैया: नमस्ते बेटा। बहुत अच्छा लग रहा है कि तुम लोग मुझसे बात करना चाहते हो।

रणवीर: तो भैया, आप सिंधिया स्कूल में कितने वर्षों से कार्यरत हैं?

पूरण भैया: पूरे तैंतीस साल हो गए हैं।

रणवीर: वाह! तैंतीस साल कोई छोटा समय नहीं होता। इतने लंबे समय तक एक ही स्थान से जुड़े रहना यह दर्शाता है कि यहाँ कुछ तो खास रहा होगा। आपसे जानना चाहेंगे कि इन वर्षों में आपने स्कूल में क्या-क्या बदलाव देखे?

पूरण भैया: बहुत कुछ बदला है बेटा। पहले एक ही हाउस मास्टर होते थे, और अनुशासन बहुत कड़ा होता था। उस समय 'नीली शर्ट' यानी प्रिफैक्ट्स का

बड़ा प्रभाव था। जब हाउस मास्टर बाहर जाते थे तो मैं नीचे से आवाज लगाता था और बच्चे मिनटों में लाइनअप हो जाते थे। अब समय बदल गया है। कानूनों के कारण आज बच्चों पर ज्यादा सख्ती नहीं की जा सकती।

रणवीर: आपने इतने वर्षों तक इस संस्थान को देखा है। क्या कोई एक बात है जो सिंधिया स्कूल को बाकी स्कूलों से अलग बनाती है?

पूरण भैया: बिल्कुल। यह स्कूल एक किले पर बसा है, प्राकृतिक वातावरण शुद्ध है, शहर से ऊपर है और बाजार के प्रभाव से दूर है। इस कारण बच्चों को बाहरी दुनिया की नकारात्मकता से बचाए रखता है। यहाँ का वातावरण खुद में अनुशासन पैदा करता है।

रणवीर: बहुत सुंदर बात कही आपने। क्या आपको लगता है कि पहले और अब के बच्चों में भी कोई फर्क आया है?

पूरण भैया: हाँ, बहुत फर्क आया है। पहले सभी बच्चे एक साथ बैठते थे, खाना खाते थे, पढ़ाई करते थे। अब लैपटॉप और मोबाइल के कारण पढ़ाई कम और भटकाव ज्यादा हो गए हैं। पढ़ाई अब कमरों में होने लगी है जिससे अनुशासन भी थोड़ा बिगड़ा है।

रणवीर: इतने सारे बच्चों से आप मिले होंगे। कोई एक ऐसा छात्र या बैच जो आज भी आपको याद हो?

पूरण भैया: हाँ, १९९४ का बैच। उसमें एक बच्चा था। डीपी सान्याल। बहुत ही समझदार, जिम्मेदार और सभी से प्रेम से बात करने वाला था। जूनियर्स का भी बहुत ख्याल रखता था। "फाउण्डर्स डे" जैसे कामों में वह हमेशा सबसे आगे रहता था और बाकी बच्चे उसका अनुसरण करते थे।

रणवीर: बहुत सुंदर स्मृति साझा की आपने। अब अंत में, अगर आप नए बच्चों या शिक्षकों को कोई संदेश देना चाहें, तो वह क्या होगा?

पूरण भैया: यही कहूँगा कि स्कूल को सिर्फ एक संस्था न समझें, इसे अपना घर मानें। जब आप यहाँ को अपना घर मानकर सेवा करते हैं, तो हर काम अपने आप विशेष बन जाता है।

रणवीर: क्या आप "उपलब्धि" पत्रिका के माध्यम से सिंधिया स्कूल के लिए कोई शब्द या संदेश कहना चाहेंगे?

पूरण भैया: हाँ बेटा। "ये हमारा स्कूल नहीं है, ये हमारा घर है।" हमने इस स्थान को एक परिवार की तरह अपनाया है। आज भी इसे हम नौकरी नहीं, सेवा और अपनापन समझकर निभाते हैं।

रणवीर: धन्यवाद भैया, आपके विचार सुनकर बहुत प्रेरणा मिली। आपसे बात करना हमारे लिए एक सौभाग्य की बात थी।

पूरण भैया: मुझे भी बहुत अच्छा लगा बेटा।

धन्यवाद।

रणवीर चौहान, ग्यारहवीं, शिवाजी

हमारे सहायक: हमारे कर्णधार

आधार स्तम्भ : 36 सालों की वो बातें

प्रभु नारायण भैया, जो पिछले 36 वर्षों से सिंधिया स्कूल का हिस्सा हैं, केवल एक कर्मचारी नहीं बल्कि इस संस्थान की आत्मा हैं। हम बचपन से उन्हें स्कूल के हर कोने में मुस्कराते और मदद करते देखते आए हैं। इन्हीं यादों और स्नेह के चलते हमने एक दिन हिम्मत जुटाई और बातचीत की, "नमस्ते भैया, आपसे कुछ बातें करना चाहता हूँ," हमने कहा। वो मुस्कराए और बोले, "बिल्कुल बेटा, पूछो।" बस फिर क्या था, स्कूल के बीते दशकों की यादें खुलने लगीं। हर शब्द में अपनापन था, और हर बात में अनुभव की गहराई।

रणवीर: नमस्ते प्रभु नारायण भैया!

प्रभु नारायणजी: नमस्ते बेटा!

रणवीर: जब आपने सिंधिया स्कूल में काम करना शुरू किया था, उस समय और आज क्या बदलाव देख रहे हैं?

प्रभु नारायणजी: देखो बेटा, जब मैंने यहाँ काम शुरू किया था, तब स्कूल में १००० से अधिक बच्चे थे। आज की तारीख में ६०० से भी कम हैं। पहले पढ़ाई का तरीका, अनुशासन, और स्कूल का माहौल कुछ और ही था। आज बच्चों में मेहनत तो है, लेकिन उन्हें उनके परिश्रम के अनुसार फल नहीं मिल पा रहा है।

रणवीर: आपने बताया कि आप यहाँ ३६ वर्षों से कार्यरत हैं। इतना लंबा समय एक ही स्थान पर बिताना आसान नहीं होता। स्कूल से ऐसा कौन-सा संबंध था जिसने आपको यहाँ बाँधे रखा?

प्रभु नारायणजी: स्कूल को हमेशा एक परिवार माना जाता रहा है। हर कर्मचारी यह कहता है कि बच्चे हमारे हैं और हम उनके। सभी एक-दूसरे की इज्जत करते है। यदि कोई बच्चा गिरता है, तो दस कर्मचारी दौड़कर मदद करते है। इसी भावना ने हम सभी को जोड़ रखा है।

रणवीर: नए छात्रों और कर्मचारियों के लिए आप कोई संदेश देना चाहेंगे?

प्रभु नारायणजी: रणवीर: इतने वर्षों में आपने हजारों बच्चों को आते-जाते देखा है। क्या कोई बैच या छात्र ऐसा है जो आपके दिल के करीब रहा हो?

प्रभु नारायणजी: १९९१ से लेकर २०२० तक के बहुत से बैच मेरे दिल के करीब हैं। हम सभी मिलकर एक परिवार की तरह रहते थे। पढ़ाई भी होती थी, मस्ती भी होती थी। लेकिन अब वो एकजुटता कम हो गई है। पुराने बच्चों से आज भी मुलाकात होती है तो गले लगते हैं, हाथ मिलाते हैं। हमें उनसे कुछ नहीं चाहिए और न उन्हें हमसे, लेकिन वो प्यार, जो दोनों ओर से मिला, वही आज भी उस रिश्ते को बनाए हुए है। कोविड के बाद चीजें बहुत बदल गई हैं।

रणवीर: आपके पहले दिन या किसी विशेष पल की याद जो आपको आज भी खुशी देती हो?

प्रभु नारायणजी: बहुत सी यादें हैं बेटा। २६ जनवरी के दिन खेलों में भाग लेना, कबड्डी, दौड़, साइकिल रेस। इन सब में जो जीतता था, उसे स्कूल की तरफ से प्रमाण-पत्र मिलता था। वो प्रमाण-पत्र आज भी बहुत से पुराने कर्मचारियों के पास सँभालकर रखे हुए हैं। वो गर्व का पल होता था। बच्चों को आगे बढ़ते देखना, ट्रॉफियाँ जीतते देखना। इससे ज्यादा खुशी की बात क्या हो सकती है?

रणवीर: क्या कभी किसी बच्चे ने आपसे कोई शरारत की हो जो अब याद आती हो?

प्रभु नारायणजी: हाँ, याद है। करीब १९९७-९८ की बात है। उस समय मॉडल क्लासरूम ४ बना नहीं था, उसी जगह पर किसी बच्चे ने ब्लैकबोर्ड पर कुछ मज़ाक में लिख दिया था। जब शिक्षक ने देखा, तो उन्हें बुरा लगा और बच्चे को डाँट पड़ी। उस समय वो मज़ाक तो था, पर असर गंभीर हुआ। आज जब उस पल को याद करता हूँ, तो एक तरफ हँसी आती है और दूसरी तरफ अफ़सोस भी होता है।

रणवीर: बहुत-बहुत धन्यवाद भैया, आपने इतने स्नेह से अपने अनुभव हमारे साथ साझा किए। आपके शब्दों से जो अपनापन झलकता है, वह अमूल्य है।

बच्चे, चाहे कहीं से भी आएँ, बच्चे ही होते हैं। स्कूल में आते ही वे अपने हो जाते हैं। लेकिन बच्चों को भी यह समझना चाहिए कि अगर कोई भैया या अंकल कुछ कहते हैं, तो वह उनकी भलाई के लिए ही होता है। कोई अधिकारी ऐसा कुछ नहीं कहेगा जो बच्चों को नुकसान पहुँचाए। बच्चों को बात सुननी चाहिए, चाहे वो डाँट ही क्यों न हो, उसमें भी स्नेह छुपा होता है।

- प्रभु नारायणजी

सिंधिया स्कूल की आत्मा से संवाद

हर संस्थान की एक आत्मा होती है- एक ऐसा व्यक्ति जो वर्षों से उस जगह का साक्षी रहा हो, जिसने समय के साथ बदलते रंग देखे हों, और जिसकी यादों में उस स्थान की संस्कृति और मूल्यों की झलक मिलती हो। सिंधिया स्कूल में ऐसा ही एक नाम है। खुशी भैया। लगभग ३२ वर्षों से स्कूल से जुड़े हुए खुशी भैया केवल एक कर्मचारी नहीं, बल्कि एक जीवित इतिहास हैं। उनसे हुई यह संक्षिप्त बातचीत हमें स्कूल की पुरानी और आज की तस्वीर के बीच के अंतर को समझने में मदद करती है।

रणवीर : नमस्ते खुशी भैया! सबसे पहले तो "उपलब्धि" के लिए समय निकालने के लिए धन्यवाद। अब सबसे पहला सवाल! आपको सिंधिया स्कूल में काम करते हुए कितने साल हो गए हैं?

खुशी भैया: नमस्ते बेटा। मुझे सिंधिया स्कूल में काम करते हुए अब लगभग ३१-३२ साल हो गए हैं। इतने लंबे समय में मैंने स्कूल के कई उतार-चढ़ाव देखे हैं, और यहाँ का हर कोना मेरे लिए घर जैसा हो गया है।

रणवीर : इतने सालों में स्कूल में आपने क्या सबसे ज्यादा पसंद किया? कोई ऐसी बात जो आज भी आपके दिल के करीब हो?

खुशी भैया: सबसे ज्यादा मुझे श्रीमान् एन.के. तिवारी के साथ बिताए गए १० साल पसंद आए। वो समय बहुत खास था। उनके अंदर एक अपनापन था, एक सम्मान था जो उन्होंने हम जैसे स्टाफ को भी बराबरी का दर्जा दिया। उस समय का माहौल बहुत सकारात्मक और अपनत्व से भरा हुआ था।

रणवीर : श्रीमान् तिवारी जी के समय की कोई खास बात जो आप हमारे साथ साझा करना चाहेंगे?

खुशी भैया: हाँ, एक बार मेरी पूरी फैमिली अचानक बीमार पड़ गई थी। उस समय मुझे कोई गाड़ी नहीं मिल रही थी, अस्पताल ले जाने के लिए। मिस्टर तिवारी ने न केवल स्कूल की गाड़ी भिजवाई बल्कि अपनी ओर से १०,००० भी दिए और कहा, "पहले परिवार को ठीक करो, बाकी सब बाद में देख लेंगे।" ये इंसानियत और नेतृत्व का बहुत बड़ा उदाहरण था, जो आज बहुत कम देखने को मिलता है।

रणवीर : आज के छात्रों और पहले के छात्रों में आपको क्या अंतर लगता है?

खुशी भैया: अंतर तो बहुत है। पहले के बच्चे भैया लोगों की बात को सम्मान से सुनते थे, अगर कोई बात कह दी जाए तो मान लेते थे। आज के बच्चे अपनी सोच में ज्यादा स्वतंत्र हो गए हैं। उनमें कहीं न कहीं अनुशासन की कमी दिखती है। आज का जमाना बदल गया है, टैक्नोलॉजी आई है, लेकिन पुराने समय की सम्मान और अनुशासन की भावना अब उतनी नहीं रही।

रणवीर : क्या स्कूल की संस्कृति में भी आपको कोई बदलाव नज़र आता है?

खुशी भैया: बिल्कुल। आज के समय में स्कूल में कई तरह के बदलाव आए हैं। कुछ ज़रूरी और कुछ शायद थोड़े ज्यादा। हम भैया लोग पहले बच्चों के साथ ज्यादा जुड़े रहते थे, उनकी मदद करते थे, वे भी हमें एक परिवार जैसा मानते थे।

स्कूल प्रबंधन ने बहुत चीजें बदल दी हैं। जो जरूरी भी था, लेकिन कुछ हद तक पुराने मूल्यों की छाया भी रहनी चाहिए थी।

रणवीर : नए छात्रों के लिए आप क्या संदेश देना चाहेंगे?

खुशी भैया: मैं बस इतना कहना चाहूँगा कि बोर्डिंग स्कूल एक मौका है। अपने आप को बनाने का, सीखने का और अनुशासन में रहने का। माँ-बाप बड़ी उम्मीदों के साथ बच्चों को भेजते हैं। अगर बच्चे खुद को अनुशासित रखें, मेहनत करें और शिक्षकों व स्टाफ का सम्मान करें तो निश्चित ही वे जीवन में कामयाब होंगे।

रणवीर : जो नकारात्मक बदलाव आपने बताये, उन्हें आज के छात्र कैसे सुधार सकते हैं?

खुशी भैया: ये बदलाव केवल छात्रों के सुधारने से नहीं होंगे। इसके लिए स्कूल प्रबंधन को गंभीरता से सोचना होगा। अगर प्रबंधन, छात्रों और कर्मचारियों के बीच एक संतुलन और पारदर्शिता रखें तो माहौल और भी अच्छा बन सकता है।

रणवीर : आपकी नजर में सिंधिया स्कूल की सबसे खास बात क्या है?

खुशी भैया: यहाँ सभी धर्म, जाति और क्षेत्रों से बच्चे आते हैं और एक साँस्कृतिक संगम बनता है। ये अपने आप में एक अनोखी बात है। स्कूल ऋषि गालव की तपस्थली पर स्थित है, और यह एक ज्ञान का तीर्थ है। लेकिन कभी-कभी लगता है कि जो बातें किताबों में लिखी हैं, वे जमीनी स्तर पर पूरी तरह लागू नहीं हो पातीं।

रणवीर : इतने वर्षों में कोई छात्र या घटना जो आज भी आपको याद हो और जिससे आपको लगाव रहा हो?

खुशी भैया: सच कहूँ तो मैं ज्यादातर समय प्रिंसिपल ऑफिस में रहा, लगभग २५ साल। पहले श्रीमान् एन.के. तिवारी, फिर श्रीमान् घोष, माधव देव जी और बाद में व्ही.पी. ऑफिस में गया। मेरा काम हमेशा पर्दे के पीछे रहा, इसलिए बच्चों से बहुत नजदीकी रिश्ता नहीं बन पाया। लेकिन फिर भी जब पुराने छात्र आज भी पहचानते हैं, नमस्ते करते हैं। तो दिल को बहुत खुशी होती है।

रणवीर : आपके सबसे करीबी दोस्त स्कूल में कौन हैं?

खुशी भैया: राकेश सिंह भैया मेरे सबसे करीबी दोस्त हैं। हम दोनों एक-दूसरे को बचपन से जानते हैं और आज भी वही अपनापन बना हुआ है।

रणवीर : क्या आपके दिल में सिंधिया स्कूल के लिए कोई कविता, संदेश या शब्द हैं जो आप हमारी पत्रिका के माध्यम से अभिव्यक्त करना चाहेंगे?

खुशी भैया: हाँ, एक पंक्ति कहूँगा:

"सिंधिया स्कूल एक गुलाब का फूल,
नए-नए अफसर, नए-नए रूल।"

यह स्कूल हर साल नए चेहरों, नई प्रतिभाओं और नई उम्मीदों से खिलता है। बस यही चाहूँगा कि इसकी खुशबू हमेशा बनी रहे।

रणवीर : अंत में, क्या आप कुछ कहना चाहेंगे इस साक्षात्कार के अनुभव के विषय में?

खुशी भैया: बहुत अच्छा लगा बेटा, आपने मुझे याद किया और इतने सालों की बातें करने का मौका दिया। उम्मीद है कि मेरी बातें किसी को काम आएँगी और स्कूल के लिए कुछ सार्थक संदेश पहुँचा पाएँगी।

रणवीर चौहान, ग्यारहवीं, शिवाजी

खुशी भैया जैसे लोग संस्थान के स्तम्भ होते हैं - शांत, सादगी भरे और हमेशा अडिग। उनका अनुभव, उनकी यादें और उनका स्नेह सिंधिया स्कूल की अमूल्य धरोहर हैं। यह बातचीत हमें न केवल स्कूल के इतिहास से जोड़ती है, बल्कि हमें यह भी सिखाती है कि हर व्यक्ति की एक कहानी होती है। बस सुनने वाला चाहिए।

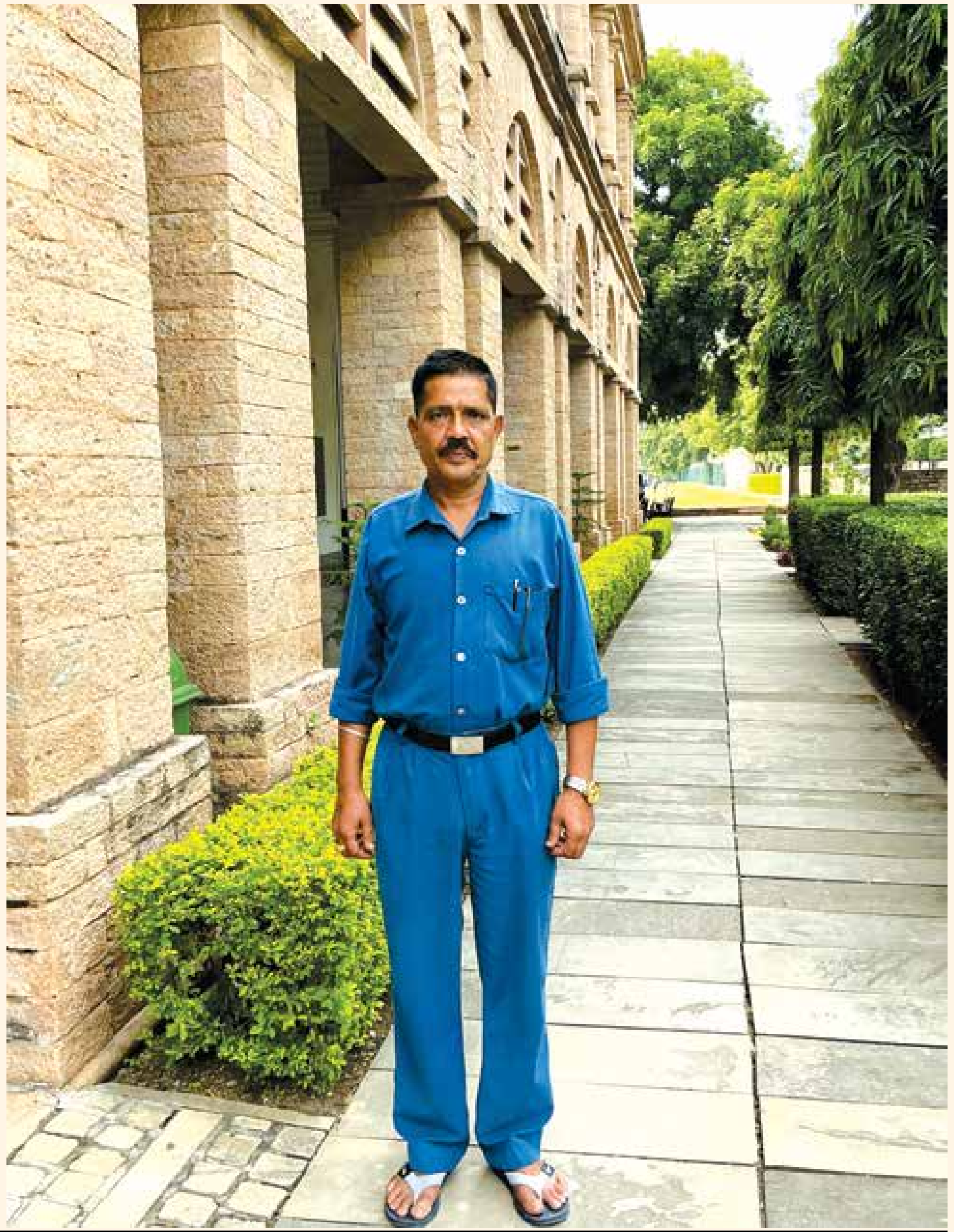

यत्र भयं समाप्तं भवति तत्र जीवनं आरभ्यते ।। जहाँ भय समाप्त हो जाता है वहाँ जीवन शुरू होता है ।

ज्ञानम् शक्तिं दास्यति, परंतु वर्णाः सादर दास्यति ।। ज्ञान आपको शक्ति देगा, लेकिन चरित्र आपको सम्मान देगा।

बेसिक माउंटेनियरिंग कोर्स

उत्तराखंड में जन्म लेने के कारण, जिसे देवभूमि (ईश्वर की भूमि) कहा जाता है, मेरा पर्वतों से एक स्वाभाविक और गहरा संबंध रहा है। हिमालय की गोद में बचपन बिताते हुए, मैंने पर्वतों की सुंदरता, शक्ति और आध्यात्मिक उपस्थिति से एक विशेष आकर्षण महसूस किया। मेरे भीतर हमेशा से रोमांच के लिए एक ललक रही है, और मेरा एक पुराना सपना था कि मैं भारत के सबसे प्रतिष्ठित संस्थानों में से एक, नेहरू इंस्टीट्यूट ऑफ माउंटेनियरिंग (NIM), उत्तरकाशी से पेशेवर पर्वतारोहण का प्रशिक्षण प्राप्त करूँ।

मैं खुद को सौभाग्यशाली मानता हूँ कि सिंधिया स्कूल ने मुझे इस सपने को साकार करने का अवसर दिया और मुझे बेसिक माउंटेनियरिंग कोर्स (BMC) में भाग लेने के लिए प्रायोजित किया। इस कोर्स ने न सिर्फ मेरी तकनीकी क्षमताओं को निखारा, बल्कि मेरी शारीरिक सहनशक्ति, मानसिक दृढ़ता और भावनात्मक अनुशासन को भी मजबूत किया।

BMC एक ऐसा प्रारंभिक कोर्स है जो पर्वतारोहण के इच्छुक युवाओं को उच्च हिमालयी क्षेत्रों में जीवित रहने और चढ़ाई करने की मूलभूत तकनीकों से परिचित कराता है।

यह प्रशिक्षण अत्यंत कठोर और व्यावहारिक था। प्रतिदिन हमें १५ किलोमीटर से अधिक ट्रेक करना होता था, वह भी पूरे गियर के साथ और ऊँचाई पर, केवल प्रशिक्षण स्थलों तक पहुँचने के लिए। शारीरिक रूप से चुनौतीपूर्ण यह दिनचर्या निरंतर प्रयास और समर्पण की माँग करती थी।

रॉक क्राफ़्ट प्रशिक्षण

तकनीकी प्रशिक्षण का पहला चरण रॉक क्राफ्ट था, जो दुर्गम पर्वतीय इलाके में आयोजित किया गया। इसमें हमें प्राकृतिक चट्टानों पर चढ़ाई की बुनियादी तकनीकों का अभ्यास कराया

गया। प्रमुख कौशलों में शामिल थे:

- फ्री क्लाइम्बिंग और चट्टानों पर ट्रैवर्सिंग
- वर्टिकल चट्टानों से रैपलिंग/एब्सेलिंग
- बेलइंग तकनीक, जो टीम की सुरक्षा के लिए ज़रूरी है
- बोल्डरिंग, चिमनी क्लाइम्बिंग और क्रैक क्लाइम्बिंग
- करबाइनर, हार्नेस, रस्सी और हैलमेट जैसे उपकरणों का प्रयोग

हर दिन हम लगभग १५ किमी ट्रेक करते थे, तकनीकी अभ्यास करते और फिर बेस पर लौटते, यह अनुशासन और सहनशक्ति का बेहतरीन अभ्यास था।

इस चरण का सबसे प्रमुख पल था। 'हुरा पीक' (Mount Jonli के पास, लगभग १७,००० फीट की ऊँचाई) की सफल चढ़ाई। यह अनुभव शारीरिक और मानसिक रूप से बेहद संतोषजनक था। यह हमें यह याद दिलाने वाला क्षण था कि लगन और दृढ़ निश्चय से कुछ भी संभव है।

स्नो क्राफ़्ट और आइस क्राफ़्ट प्रशिक्षण

कोर्स का दूसरा चरण हमें 'डोकरानी बामक ग्लेशियर' (गंगोत्री रेंज में स्थित) तक ले गया, जहाँ हमने हिम में पर्वतारोहण की तकनीकों का अभ्यास किया।

स्नो क्राफ़्ट तकनीकें

- क्रैम्पॉन पहनकर बर्फ़ पर चलना
- आइस एक्स का उपयोग कर स्वयं को रोकने की तकनीक (सैल्फ अरेस्ट)
- बर्फ़ीले ढलानों पर स्टेप कटिंग और ट्रेल बनाना
- स्नो एंकर और बेलै सिस्टम बनाना
- ग्लिसैडिंग और रस्सी की सहायता से अवरोहण

आइस क्राफ़्ट तकनीकें

- वर्टिकल बर्फ़ की दीवारों पर चढ़ाई (फ्रंट पॉइंट तकनीक)
- आइस एक्स एंकरिंग और सुरक्षा उपाय
- क्रेवास (हिम-दरार) से बचाव की विधियाँ
- बर्फ़ीले मैदानों पर टीम मूवमेंट और रस्सी फिक्सिंग

डोकरानी बामक ग्लेशियर में प्रशिक्षण एक अविस्मरणीय अनुभव था। कठोर वातावरण और एकांत स्थान में हमें नेतृत्व, निर्णय क्षमता और टीम वर्क जैसे गुणों की असली परीक्षा दी गई। साथ ही, हमने उच्च हिमालयी स्वास्थ्य, अनुकूलन (acclimatization), और पर्यावरण की जिम्मेदारी की ठीक समझ प्राप्त की।

प्रशिक्षण के दौरान हमने निम्नलिखित क्षेत्रों में भी ज्ञान और अभ्यास प्राप्त किया:

- रस्सी की गांठ बाँधना और प्रबंधन
- आपातकालीन स्थितियों में बचाव तकनीक
- उच्च ऊँचाई पर जीवित रहने के उपाय और प्राथमिक उपचार
- नक्शा पढ़ना, दिशा-निर्धारण और मार्ग नियोजन
- नेतृत्व, टीम वर्क और दबाव में निर्णय लेने की कला

यह कोर्स मेरे जीवन का एक अविस्मरणीय अनुभव रहा। हर कदम, हर चढ़ाई, और हर चुनौती ने मुझे एक बेहतर पर्वतारोही ही नहीं, बल्कि एक

बेहतर इंसान भी बनाया। पहाड़ों ने मुझे धैर्य, विनम्रता और आत्म-विश्वास सिखाया। BMC को पूर्ण करने के बाद, मेरे मन में पर्वतों के प्रति प्रेम और गहरा हुआ है, साथ ही अनुशासन, उत्तरदायित्व और मानसिक दृढ़ता का भाव स्थिर हुआ।

मैं सिंधिया स्कूल का दिल से आभार व्यक्त करता हूँ कि उन्होंने मुझे यह अवसर दिया, और नेहरू इंस्टीट्यूट ऑफ माउंटेनियरिंग को उनके उत्कृष्ट प्रशिक्षण और मार्गदर्शन के लिए धन्यवाद देता हूँ। यह अनुभव मेरे पर्वतारोहण के जुनून को आगे ले जा चुका है और अब मैं पर्वतारोहण के लिए हमेशा पूरी तरह तैयार हूँ।

श्री पुष्पेश पाण्डे
गणित अध्यापक

वृद्धिर्न शक्या हि विना श्रमेण ।। केवल संघर्ष से ही तुम विकसित होते हो ।

इदानीं तदनुष्ठेयं समुत्थाय समुद्यज ।। अभी कार्य करो, उठो और आगे बढ़ो ।

बैन और सिमरजोत की बातचीत

सिमरजोत - अब तक आपका यहाँ रहना कैसा रहा?

बैन - मेरा प्रवास ऐसा है जैसे क्षितिज का विस्तार! मेरे लिए यह अब तक प्रभावशाली और सुखद साबित हुआ है।

सिमरजोत - आपने यहाँ कौन से प्रमुख साँस्कृतिक अंतर देखे हैं ?

बैन- मतभेद हर जगह हैं, लेकिन वैश्वीकरण और उदारीकरण के कारण, मतभेद उतने सीधे-सीधे समझ नहीं हैं, जितना कोई सोच सकता है।

सिमरजोत - यहाँ परोसे जाने वाले भोजन के बारे में आपको क्या लगता है?

बैन- यह भोजन मेरे यहाँ के इतालवी भोजन से इतना अलग है कि इसका आंकलन करना कठिन है। पहले-पहल यहाँ खाना बहुत कठिन होता था, क्योंकि मुझे ज्यादा तीखा खाने की बिल्कुल भी आदत नहीं है ा लेकिन अब मुझे धीरे-धीरे स्वादिष्ट और आनंददायक लगने लगा है।

सिरमरजोत - आप अपने आस-पास के लोगों का विवरण कैसे देते हैं जिनके साथ आप बातचीत करते हैं?

बैन - यदि मुझे अपने आस-पास के लोगों का वर्णन करने के लिए कोई विशेषण चुनना हो, तो मैं 'श्यौर' शब्द चुनूँगा, स्वागत करने में, बातचीत करने में, प्रश्न पूछने और उत्तरों की प्रतीक्षा न करने में, इधर-उधर घूमने और घर में आराम करने में।

सिमरजोत - चूँकि आप जयप्पा हाउस में हैं, आप यहाँ के बारे में क्या महसूस करते हैं?

बैन - मुझे पूरे जयप्पा हाउस, हाउस मास्टर गोपाल सर से लेकर प्रत्येक गृहस्वामी के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करना है, जिन्होंने बहुत ही खुशनुमा माहौल में मेरा स्वागत किया।

सिमरजोत - स्कूल में अब तक की सबसे दिलचस्प चीज क्या थी?

बैन - स्कूल में अब तक का सबसे दिलचस्प अनुभव निश्चित रूप से अस्ताचल, ध्यान, आत्म-निरीक्षण और भाईचारे का एक क्षण है, जिसे मैं अपने देश लौटने पर निश्चित रूप से याद करूँगा।

सिमरजोत - आप यहाँ भविष्य में क्या-कुछ नया करने के लिए उत्सुक हैं?

बैन - मैं वास्तव में इस अद्भुत पठार के ऐतिहासिक किले के उत्तरी भाग को अच्छी तरह देखने के लिए उत्सुक हूँ।

अवगंतव्यम्, न भाव्यं कंठस्थमेव ॥ समझना सीखो, रटना।

सिंधिया स्कूल के ज्योतिपुंज

१९८४ (राजनीति)

श्री नटवर सिंह, जयाजी

श्री नटवर सिंह जी बहुत ही प्रसिद्ध राजनेताओं में से एक हैं। नटवर सिंह भारतीय विदेश सेवा के प्रमुख सदस्य रह चुके हैं। उन्होंने विदेश नीति में भी अपना अहम योगदान दिया। उन्हें १९८४ में पद्मभूषण से भी सम्मानित किया गया। उन्होंने अंग्रेजी साहित्य में भी अपनी पहचान बनाई है। सिंधिया स्कूल ने उन्हें अपने हर क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ योगदान के लिए १९८४ में पहले माधव पुरस्कार से सम्मानित किया।

१९८५ (रेडियो)

श्री अमीन सयानी, जयाजी

अमीन सयानी ने भारतीय रेडियो और टेलीविजन (दूरदर्शन) पर प्रसारण में उत्कृष्ट और प्रतिभाशाली योगदान दिया है। वह रेडियो और टेलीविजन कार्यक्रमों के विकास में बहुत ही गहरी रुचि रखते हैं। उन्होंने भारतीय कार्यक्रमों को विदेशों में प्रचारित करके हमारे देश की संस्कृति का विश्व में मान बढ़ाया है। इसलिए सिंधिया स्कूल ने अमीन सयानी को उनके इसी अनोखे अंदाज के लिए वर्ष १९८५ में माधव पुरस्कार से नवाजा गया।

१९९० (राजनीति)

श्रीमंत माधवराव जीवाजीराव सिंधिया, जयाजी

श्रीमंत महाराजा माधवराव जीवाजीराव सिंधिया, ग्वालियर के शाही परिवार के वारिस थे। उन्होंने ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा प्राप्त की और भारत के लोगों के लिए प्रतिनिधि के रूप में लोक सभा के सदस्य बने रहे। रेलमंत्री रहते, मंत्रालय उच्चतम ऊँचाइयों तक पहुँचा गया। सन् १९९० में सिंधिया स्कूल ने उन्हें माधव पुरस्कार से सम्मानित किया।

२००० (प्रशासन)

शिवशंकर मेनन, जयाजी

शिवशंकर मेनन, भारतीय विदेश सेवा के अधिकारी के रूप में कार्यरत थे, जिन्होंने विभागीय करियर में महत्वपूर्ण पदों पर सेवा की। सन् १९७२ में मास्टर्स की डिग्री पूरी करने के बाद, वे चीन, वियना और टोक्यो में भारतीय दूतावासों में कार्य कर चुके हैं। उन्होंने अपनी रुचियों में शास्त्रीय संगीत और हिमालय की सैर करने का भी अनुसरण किया है, और विभिन्न विदेशी भाषाओं से निपुण हैं। सन् २००० में सिंधिया स्कूल ने उन्हें इसी अद्भुत रुतबे के लिए माधव पुरस्कार से सम्मानित किया।

२००९ (शिक्षा)

श्रीमान ए.एन. दर, रानोजी

सिंधिया स्कूल, जहाँ हर पुराना छात्र शारीरिक, बौद्धिक और सामाजिक गतिविधियों में साहस दिखाता है, जैसे श्री अमरनाथ दर ने अपने जीवन में स्कूल के आदर्शों को पूरा किया है। उन्होंने स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय में एक उत्कृष्ट शिक्षक और सभी क्षेत्र में नेतृत्व की गुणवत्ता प्रदर्शित की। उन्होंने दून स्कूल में अँग्रेजी के अध्यापन विभाग में सेवा की और १९९४ से २००० तक सिंधिया स्कूल के प्रधानाध्यापक के रूप में भी कार्य किया। उन्हें अपनी इसी उत्कृष्ट सेवा के लिए सन् २००९ में माधव पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

२०१० (फ़िल्म)

श्री अनुराग कश्यप, ज्योतिबा

अनुराग कश्यप फिल्म निर्माण के क्षेत्र में अपने रचनात्मक काम की बदौलत विश्व स्तर पर जाने जाते हैं। अनुराग कश्यप ने भारतीय सिनेमा में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है, जिसके लिए उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी मान्यता मिली है। उन्होंने स्कूल में रहते हुए महानता और विश्वास का प्रदर्शन किया और सामाजिक राजनीतिक परिदृश्य पर भी सवाल उठाए। अनुराग कश्यप को सिंधिया स्कूल द्वारा सन् २०१० के लिए माधव पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

२०११ (पुलिस सेवा)

श्री आनंद राव पवार, शिवाजी

आनंद राव पवार, ने अपने जीवन में मौलिक मूल्यों का पालन किया और उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र के प्रति सच्ची निष्ठा दिखाई और फिर भारतीय पुलिस सेवा में जुड़कर आतंकवाद और अन्य अपराधों को रोकने के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने वन्यजीव संरक्षण में भी अपना योगदान दिया और विशेषज्ञता भी प्राप्त की। आनंद पवार को सिंधिया स्कूल ने सन् २०११ में माधव पुरस्कार से सम्मानित किया है।

२०२० (साहित्य सेवा)

श्री संजीव सराफ़, शिवाजी

संजीव सराफ़ ने अपने साहित्यिक योगदान के लिए माधव पुरस्कार प्राप्त किया। उन्होंने पॉलीप्लेक्स कॉर्पोरेशन लिमिटेड की स्थापना की, जो अब दुनिया की सबसे बड़ी PET फिल्म निर्माता है, और उर्दू भाषा के लिए रेख्ता फाउंडेशन का संचालन किया है। उनकी सेवाओं के लिए उन्हें नई दुनिया ने उन्हें फरोग-ए-उर्दू पुरस्कार, दिल्ली उर्दू अकैडमी पुरस्कार, और अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय से उन्हें उत्कृष्टता पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

विवेक शर्मा (पूर्व छात्र, दौलत सदन)

गारयते ज्ञानम् इति गुरु ॥ ज्ञान की शिक्षा, समझ देने वाला गुरु कहलाता है।

श्री टेंगशे का पर्यावरण-प्रेम

परिवर्तन से मनुष्य का विकास होता है। आना-जाना तो केवल एक पड़ाव है। इस आने और जाने के बीच में किये गए अच्छे कार्य हमेशा मनुष्य को अपने आप से तथा दूसरों से जोड़े रखते हैं और उन्हीं के कारण मनुष्य को याद किया जाता है।

श्री जयंत टेंगशे जी ने अपने छह वर्ष के कार्यकाल में विद्यालय में जो अपनी छाप छोड़ी है उसे इतनी आसानी से भुलाया नहीं जा सकता। उप-प्राचार्य तथा उच्च शिक्षित होने के नाते उनकी अपने विषय में पकड़ होना तो स्वाभाविक है ही, मगर वे किसी भी विषय पर, चाहे वह शिक्षा से संबंधित हो, संगीत से हो, खेलों से हो या फिर पर्यावरण से, वे सभी पर चर्चा करने में समर्थ हैं।

मुझे उनके प्रकृति-प्रेम ने बहुत प्रभावित किया। उनके विचार हैं कि विद्यालय परिसर में फलदार वृक्ष हों, छात्रों को परिसर में स्थित वृक्षों के संबंध में जानकारियाँ हों, कहीं न कहीं मेरे विचारों से मेल खाने लगे और इसी कारण मुझे उनके नजदीक आने का अवसर मिला। प्रकृति प्रेम एक ऐसा प्रेम है जिसमें मनुष्य केवल अपने लिए नहीं वरन् पूरे समाज के लिए कार्य करता है, उसका लाभ पूरा समाज लेता है। अपने लिए तो हर व्यक्ति कार्य करता है पर जो समाज के बारे में सोचे वही असली मायनों में इंसान है।

श्रीमती एवं श्री टेंगशे जी दोनों को ही पेड़-पौधों से बहुत लगाव है जो उनके निवास पर देखकर स्पष्ट होता है। उन्होंने इस किले पर पाए जाने वाले अनेक दुर्लभ प्रजातियों को खोजकर अपने उद्यान में रोपित किया । उन्होंने किले पर हरियाली लाने के लिये सतत् प्रयास किये जो धीरे-धीरे दिखाई देने लगे है और ये प्रयास उनके जाने के बाद भी गतिशील रहेंगे ऐसा मेरा विश्वास है।

अंत में, मैं श्रीमती एवं श्री टेंगशे जी को आश्वस्त करना चाहूँगा कि कछुए की चाल से ही नहीं पर उनकी हर वापसी पर उन्हें इस प्रयास में कुछ न कुछ नया जरूर मिलेगा।

जितेन्द्र जावले, पर्यावरण प्रहरी

बच्चों के बीच २२ वर्ष

हमारे संस्थान के मैस के सबसे पुराने और अनुभवी भैया, जिन्हें सभी प्यार से 'बंटी भैया' के नाम से जानते हैं। उनका पूरा नाम बंटी झा है। वे वर्ष २003 से लगातार मैस की सेवा कर रहे हैं और आज उन्हें यहाँ काम करते हुए पूरे २२ साल हो चुके हैं। इस लंबे समय में उन्होंने मेस में कई बड़े बदलाव देखे हैं। पहले जहाँ टेबल-चेयर पुराने और अधूरे होते थे, वहीं अब नए और बेहतर फर्नीचर ने उनकी जगह ले ली है। सफाई की व्यवस्था भी पहले जैसी नहीं रही। अब इस पर विशेष ध्यान दिया जाता है और मेस का माहौल पहले से कहीं अधिक स्वच्छ और व्यवस्थित हो गया है।

बंटी भैया बताते हैं कि पहले के समय में बच्चे बड़े आदर और सम्मान के साथ हर किसी को 'नमस्ते' किया करते थे। उन्हें लगता है कि पुराने समय का अपनापन और घुला-मिला माहौल बहुत खास था, जो उन्हें हर पल याद आता है।

फिर भी, बंटी भैया का कहना है कि यह स्कूल और यहाँ का वातावरण उन्हें हमेशा अच्छा लगता है। बच्चों का प्यार और उनकी मासूमियत ही उन्हें हर दिन काम करने की प्रेरणा देती है। उनके अनुसार, बच्चों की मुस्कान और उनके साथ बिताए पल ही उनके जीवन का सबसे अनमोल खज़ाना हैं।

बंटी भैया की यह कहानी सिर्फ मैस की सेवा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह हमें यह भी सिखाती है कि सच्चा समर्पण वही है, जो दिल से निभाया जाए और आने वाली पीढ़ियों के भविष्य को सँवारने में योगदान दे।

रणवीर चौहान
ग्यारहवीं, शिवाजी

यदि मैं सिंधिया स्कूल का प्रधानाचार्य होता!

यदि मैं सिंधिया स्कूल का प्रधानाचार्य होता, तो सबसे पहले मैं यह सुनिश्चित कर ताकि विद्यालय की हर कक्षा और हर जगह पर ए.सी. लगे हों, ताकि बच्चों को पढ़ाई के दौरान हमेशा ठंडा और आरामदायक वातावरण मिले।

रविवार को मैं हर विद्यार्थी को १००० कूपन देता, जिससे वे अपनी पसंद की चीजें ले सकें। सैट्स जाना अनिवार्य नहीं होता और स्वास्थ्य-केन्द्र में बिना किसी उचित कारण के कोई प्रवेश नहीं कर पाता। बरसात के दिनों में सभी बच्चों को मुफ्त में छाते दिए जाते ताकि वे बिना भीगे विद्यालय आ जा सकें।

इसके अलावा, मैं यह नियम बनाता कि प्रत्येक विद्यार्थी को प्रतिदिन ३०-३० चॉकलेट दी जाएँ। अध्यापक बच्चों को डाँट नहीं सकते, बल्कि केवल प्रोत्साहित और मार्गदर्शन ही कर सकते। खेलों के लिए मैं 'ओवल-फील्ड' को हटाकर एक भव्य और आधुनिक स्टेडियम बनवाता, जिसमें हर तरह की सुविधाएँ होतीं।

अगस्त्य सिन्म्हार
सातवीं 'अ', निमाजी

लिखा फिर अभिनय किया

विषय-परिस्थिति

हाउस के छात्रों को पता चला कि उनके सदन को एक दिन पहले डिस्क्वॉलीफाई कर दिया है। छात्र असमंस्य में हैं कि क्या करें!

समूह प्रतिनिधि-श्लोक शर्मा

आयुष सोनी - अविनेंद्र, तुम्हें पता है? पूरे आठों सदनों में से हमारे सदन को डिसक्वालिफाई कर दिया गया।

अविनेंद्र - क्या! सच में? कल तक तो सब सही था, फिर ऐसा क्यों हुआ?

यश - अरे अविनेंद्र, वो गीतेश है न, उसी की वजह से हुआ है। उसने कल अभ्यास के समय गणपत सर से बहस कर ली थी।

गीतेश - अरे! कुछ भी बोलेगा क्या? असली वजह तो कंचित था, उसी की वजह से बहस हुई।

श्लोक - क्या हुआ बच्चो? फुटबॉल अंतर-सदनीय प्रतियोगिता की तैयारी कैसी चल रही है?

आदि - श्लोक, कैसी तैयारी? ये स्कूल बस बुराई देखता है, अच्छाई नहीं।

श्लोक - नहीं, ऐसा नहीं है। जब हम कोई अच्छा काम करते हैं तो प्राचार्य महोदय हमें बढ़ावा देते हैं, और जब गलती होती है तो हमें रोकते हैं। इसमें बुराई ही क्या है?

कंचित - पर मेरी गलती नहीं थी। सर हमारे सदन को कम आँक रहे थे।

श्लोक - तो क्या तुम उन्हें कुछ भी बोल दोगे?

आदि - बिल्कुल, तुम्हें तमीज ही नहीं है।

कंचित - अरे भाई, आज तक मैदान पर उतरे भी हो?

आयुष - प्लीज आप लोग शांत हो जाओ और कोई समाधान निकालो। लड़ाई से कुछ नहीं होगा। इस बार हमें अपने सदन को बचाना है।

गीतेश - बिल्कुल सही। श्लोक, आप प्लीज सर से जाकर इस विषय में बात कीजिए और हमें बचा लीजिए।

आदि - हाँ श्लोक! प्लीज, प्लीज!

श्लोक - ठीक है, मैं देखता हूँ। चलो अब सो जाओ, रात के ११:३० बज रहे हैं। कल सुबह उठकर हम सब गणपत सर से माफी माँगेंगे।

बड़े अभिनेता भी पहले छोटे-छोटे नाटकों से शुरुआत करते हैं, तभी जाकर वे आज इतने बड़े बने हैं। मुझे बहुत खुशी हुई कि मैंने बच्चों में सीखने की उत्सुकता जगाई और उन्हें आगे बढ़ने का अवसर दिया।

-अनय गुप्ता, ग्यारहवीं, जीवाजी

भयमेवास्ति शत्रु ।। भय ही शत्रु है ।

श्री आत्माराम शर्मा चल वैजयंती अब तक

हमारे विद्यालय में प्रतिवर्ष हिंदी विषय में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्र को "आत्माराम ट्रॉफी" से सम्मानित किया जाता है। ***यह ट्रॉफी पूर्व छात्र श्री संदीप अग्रवाल ने अपने गुरु श्री आत्माराम शर्मा जी के सम्मान में भेंट दी है।*** हिन्दी में सबसे अधिक प्रतिभाशाली छात्र को प्रदान की जाने वाली श्री आत्माराम शर्मा चल वैजयंती अब तक जिन छात्रों को दी गई, उनका विवरण प्रस्तुत है।

- नैतिक मोर, ग्यारहवीं, जीवाजी

(सत्र १९९९-२000) कुमार उत्कर्ष (महादजी)
(सत्र २00१-२00२) शाश्वत पाण्डेय (जीवाजी)
(सत्र २00२-२003) अभिमन्यु अग्रवाल (ज्योतिबा)
(सत्र २003-२00४) कौस्तुभ हर्षे (माधव)
(सत्र २00४-२00५) राघवेंद्र सिंह (माधव)
(सत्र २00५-२00६) कीर्ति आजाद (जीवाजी)
(सत्र २00६-२00७) अनुराग असीम (जीवाजी)
(सत्र २00७-२00८) आनंद भारद्वाज (माधव)
एवं अभिलाष आनंद (जयप्पा) संयुक्त विजेता
(सत्र २00८-२00९) अभिनंदन सिंह (जीवाजी)
(सत्र २00९-२0१0) अभय विक्रम सिंह (जीवाजी)
(सत्र २0१0-२0११) पीयूष दारुका (जयप्पा)
एवं समृद्ध अग्रवाल (जीवाजी) संयुक्त विजेता
(सत्र २0११-२0१२) अंकित कसेरा (महादजी)
एवं मोहित मंडेलिया (शिवाजी) संयुक्त विजेता
(सत्र २0१२-२0१3) करन कपूर (शिवाजी)
एवं पार्थ गवई (शिवाजी) संयुक्त विजेता
(सत्र २0१४-२0१५) शिवम अग्रवाल (माधव)
एवं कल्पित भगत (जयप्पा) संयुक्त विजेता
(सत्र २0१६-२0१७) सार्थक अग्रवाल (दौलत)
(सत्र २0१७-२0१८) फैजान करीम (रानोजी)
(सत्र २0१९-२0२0) अभिषेक माहौर (माधव)
(सत्र २0२१-२0२२) शांतनु यादव (जयाजी)
(सत्र २0२3-२0२४) विवेक सिंह (दौलत)

कहानी

समझदार

अजय नाम का एक व्यक्ति था। वह बहुत समझदार और मेहनती इंसान था। अजय एक बड़ी कंपनी में ऊँचे पद पर काम करता था और अपने कार्य से सबको प्रभावित करता था। लेकिन एक दिन कंपनी को भारी नुकसान हुआ और उसके कारण अजय को नौकरी से निकाल दिया गया। यह खबर सुनकर वह घबरा गया, क्योंकि उसे समझ नहीं आ रहा था कि अब वह कहाँ काम करेगा।

उसने उसी कंपनी में दोबारा काम करने की कोशिश की, लेकिन सफल नहीं हो पाया। फिर भी अजय ने हार नहीं मानी और नकारात्मक सोचने के बजाय सकारात्मक सोचने का निर्णय लिया।

कुछ दिनों बाद अजय की मुलाकात अपने एक पुराने मित्र से हुई। जब मित्र ने उससे नौकरी के बारे में पूछा, तो अजय ने मुस्कुराते हुए पूरी बात बताई। मित्र यह देखकर हैरान रह गया कि नौकरी छूटने जैसी बड़ी परेशानी के बाद भी अजय हँसते हुए बात कर रहा था।

उसने अजय से पूछा, "तुम इतने सब कुछ झेलने के बाद भी इतने खुश कैसे हो?"

अजय ने उत्तर दिया, "मुझे पूरा भरोसा है कि यह समस्या जरूर दूर होगी और कुछ अच्छा अवश्य होगा।"

दो महीने बाद अचानक अजय को उसी मित्र का फोन आया। उसके मित्र ने बताया कि एक कंपनी के मालिक समझदार और सकारात्मक सोचवाले व्यक्ति को ऊँचे पद पर रखना चाहते हैं। उसने अजय का नाम और गुण उस मालिक को बताए थे और अब वे लोग अजय को नौकरी पर रखना चाहते हैं।

कुछ समय बाद अजय को वह नौकरी मिल गई। भले ही इस नई नौकरी की तनख्वाह पहले वाली से कम थी, लेकिन अजय पहले से कहीं अधिक खुश था।

जैद इंसाफ, आठवीं 'द'

डॉक्टर से मुलाकात

खाँसी थी और हलका बुखार,
मम्मी बोलीं–
"चलो बेटा, अस्पताल इस बार।"
डॉक्टर अंकल फिर से मिले वहीं,
चेहरे पर मुस्कान,
बातों में थी मिठास यहीं।
कुर्सी पर बैठकर पूछा प्यार से,
"क्या तकलीफ़ है तुम्हें,
ज़रा बताओ ज़रा हँस के।"
मैंने कहा, "गला दुखता है,
नींद भी नहीं आती।"
वो बोले, "ठीक कर दूँगा,
बस दवा खानी है बाकी।"
उन्होंने चैक किया,
लिखा दवा का नाम,
फिर बोले– "जल्दी ठीक हो जाओगे,
आराम ही आराम।"
उनसे मिलकर डर दूर हुआ,
मन भी फिर से खुश
और भरपूर हुआ।
डॉक्टर जैसे दोस्त होते हैं सच्चे,
जो बिन कहे समझें दुख अच्छे।

-हंशिता मानकर, आठवीं 'स' दत्ताजी

कालेन समौषधम् ।। समय सबसे अच्छा उपचारक है ।

कविता रचना प्रतियोगिता

हिन्दी साहित्य सभा ने "उपलब्धि" पत्रिका का रजत जयंती वर्ष रचनात्मक ढंग से मनाया। इस उपलक्ष्य में अनेक प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई। २६ अगस्त को कविता रचना प्रतियोगिता आयोजित की गई। इन कविताओं और इनके रचनाकारों को प्रार्थना सभा में प्राचार्य महोदय द्वारा विशेष रूप से पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। आप भी पढ़िये:-

'प्रथम पुरस्कार'

एक सुंदर चित्र

देखो यह सिंधिया स्कूल है बड़ा निराला
यहाँ का हर बच्चा मतवाला

छठी से बारहवीं तक की यह चढ़ाई
देती है बड़ी कमाई

यहाँ का हर बच्चा एक-दूसरे का मित्र
जैसे मानो एक सुंदर चित्र

छात्र यहाँ से पढ़कर जाते
और बड़े होकर खूब नाम कमाते

बारह सदनों का यह छात्रवास
बच्चे करते यहाँ निवास

खेलकूद से लेकर संगीत
सिंधिया स्कूल की यह अनोखी रीत।

- हंशिता मनकर, आठवीं 'ब', दत्ताजी

'द्वितीय पुरस्कार'

सपनों की उड़ान

सपने वह नहीं होते, जो हम रात को सोते हुए देखते हैं,
सपने वह होते हैं जो हम जागते जीते हैं।

जो मेहनत से नहीं डरते, वो मुकाम पाते हैं:
कभी हारने वाले भी जीत को गले लगाते हैं।

चाहे राहें हों मुश्किल, चाहे आगे हो अंधेरा
अपनी मेहनत से हर रास्ता जाएगा सवेरा।
हम हैं वह पंछी जो उड़ने से डरते नहीं,
अपनी उड़ान से, हम खुद को पहचानते नहीं|

यह है तुम्हारे सपने, इन्हें तुम पहचानो,
तुम इन्हें कर सकते हो हासिल, मानो या न मानो।
अगर तुम्हारा है कोई सपना, तो उसे ठान,
आगे जाकर होगी तुम्हारे सपनों की उड़ान!

- मानविक नागा, आठवीं 'अ', दत्ताजी

'सांत्वना पुरस्कार'

नम्बर एक स्कूल

मेरा विद्यालय है, जहाँ हरियाली छाई है।
खूबसूरत फूलों ने, सुगंध फैलाई है।
यहाँ खिलते हैं बड़े वृक्ष, खुशहाली है यहाँ,
ऐसा सिंधिया स्कूल है मेरा, हरियाली है जहाँ।
खेल का मैदान है, खाली है एक कोना,
नम्बर एक स्कूल है, खुशी इस बात की होना।

बच्चों की हँसी से, पत्तों को मिलती जान है,
उन पत्तों से बरसते अरमान हैं।
सिंधिया स्कूल के ये बच्चे ही,
सिंधिया स्कूल की शान हैं।
मानो या ना मानो,
यही सिंधिया स्कूल की पहचान हैं।

- अर्जुन कोठारी, नौवीं, माधव

अच्छाई के लिए प्रयास

सुप्रभात!

यदि किसी कमरे की बत्तियाँ बंद कर दी जाएं, तो हम क्या महसूस करते हैं? अंधेरा।

क्या इस अंधेरे को लाने के लिए हमें कोई प्रयास करना पड़ता है? नहीं। अंधेरा हमेशा मौजूद रहता है। यह हमें घेर लेता है, एक अवसर की प्रतीक्षा करता है। लेकिन रोशनी लाने के लिए हमें काम करना पड़ता है। बिजली आसानी से नहीं आती। इसके लिए प्रयास की आवश्यकता होती है। कोयला खींचना पड़ता है, पानी को बांधों में संग्रहित करना पड़ता है, पंखों को घुमाना पड़ता है, और बिजली को लंबी तारों के माध्यम से ट्रांसमिट करना पड़ता है। तभी जाकर हम एक बत्ती जला सकते हैं।

यह सरल सत्य हमें जीवन का एक शक्तिशाली पाठ सिखाता है। बुराई बिना प्रयास के आती है। अच्छाई के लिए प्रयास की आवश्यकता होती है।

हमारी आदतों के बारे में सोचिए। बुरी आदतें अपनाना आसान है। गाली-गलौच करना, झूठ बोलना, टालमटोल करना। हमें ये बातें कोई नहीं सिखाता, फिर भी हम इन्हें जल्दी अपना लेते हैं। लेकिन अच्छी आदतें, अनुशासन, दया, ईमानदारी विकसित करने के लिए हमें संघर्ष करना पड़ता है और हर दिन निर्णय लेने होते हैं।

इतिहास में भी हम अच्छाई और बुराई के बीच इस संघर्ष को देख सकते हैं। भगवान राम, जो धर्म के प्रतीक थे, उन्हें रावण को हराने के लिए एक पूरी सेना जुटानी पड़ी थी। वे दिव्य होते हुए भी अकेले बुराई को नष्ट नहीं कर सकते थे। यह हमें याद दिलाता है कि गलत के खिलाफ लड़ाई के लिए प्रयास, समर्थन और दृढ़ संकल्प की आवश्यकता होती है।

हमारे जीवन में भी यही बात लागू होती है। नकारात्मकता से प्रभावित होना आसान है, लेकिन हमारे मूल्यों पर दृढ़ रहना साहस का काम है। अंधेरा हमेशा तैयार रहता है, लेकिन रोशनी के लिए लगातार प्रयास की आवश्यकता होती है।

तो, हमें क्या करना चाहिए? क्या हम नकारात्मकता को अपने ऊपर हावी होने देंगे, या हमें अच्छाई की रोशनी लाने के लिए प्रयास करना चाहिए? चुनाव हमारा है।

आइए हम रोशनी के मार्ग को चुनें। हम अच्छी आदतों को अपनाने के लिए प्रयास करें, अच्छे शब्द बोलें और जो सही है उसके लिए खड़े हों। क्योंकि अंत में, जैसे रोशनी अंधेरे को पराजित करती है, वैसे ही अच्छाई हमेशा विजयी होती है। अगर हम इसके लिए संघर्ष करने के लिए तैयार हों।

धन्यवाद!

शिव कुमार शर्मा
अध्यक्ष, गणित विभाग

उपलब्धि के प्रथम अंक से

१५

ज़िन्दगी

ये आदमी की ज़िन्दगी
एक टूटी नाव है
हर मुसाफिर के हिये पे
एक गहरा घाव है।
चाहकर भी उबर नहीं पाता है ये आदमी

ये प्यार की ही प्यास है
या दर्द की तलाश है
खुद अपनी ही बिसात पर
पिटा हुआ ये आदमी
प्रिया के बाहुपाश में सिसक रहा
ये आदमी, ये आदमी।

ये धर्म ग्रन्थ व्यर्थ है
ये कर्म काण्ड जाल है
इस जाल में फँसा हुआ
भटक रहा ये आदमी
खुद अपने ही सलीब पर
टँगा हुआ ये आदमी

ये आदमी गरीब है
खुदा के ये करीब है।

ये आदमी दबा हुआ
ये आदमी डरा हुआ
ये आदमी झुका हुआ
ये आदमी उदास है
ये आदमी निराश है।
बढ़ो इसे सँवार ले
चलो इसे उबार ले
कहो इसे दुलार दे
ये आदमी ! ये आदमी !

श्री ओ.एन. दीक्षित
पूर्व उप-प्राचार्य

कहानी लेखन प्रतियोगिता

हिन्दी साहित्य सभा ने "उपलब्धि" पत्रिका का रजत जयंती वर्ष रचनात्मक ढंग से मनाया। इस उपलक्ष्य में अनेक प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई। २१ अगस्त को कहानी लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई। इन कहानियों में कुछ ऐसी भी थीं, जो भले ही अव्वल न आ सकीं, मगर प्रतिभागियों में कहानी कहने की कला जीवंत है। आगे चलकर, संभावना है कि वे लेखक के रूप में प्रसिद्ध हों! कहानियाँ लिखने वाले छात्रों को प्रार्थना सभा में प्राचार्य महोदय द्वारा विशेष रूप से पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। आप भी पढ़िये:-

'सांत्वना (चतुर्थ) पुरस्कार'

कक्षा में लड़की

७ जुलाई, २०२५, हाथ से पसीना निकल रहा था और कुछ समझ नहीं आ रहा था। बस कुछ भी करके अपनी कक्षा में दाखिल होना था। मुझे कक्षा के बाहर खड़े हुए ३-४ मिनट हो गए होंगे। अब तो अंदर से भी लोग मुझे घूर रहे होंगे। सोचेंगे कि लड़कों के छात्रावास में ये नई लड़की कौन है? और बस, अब यहाँ तक आ गई थी तो अंदर भी जाना ही था।

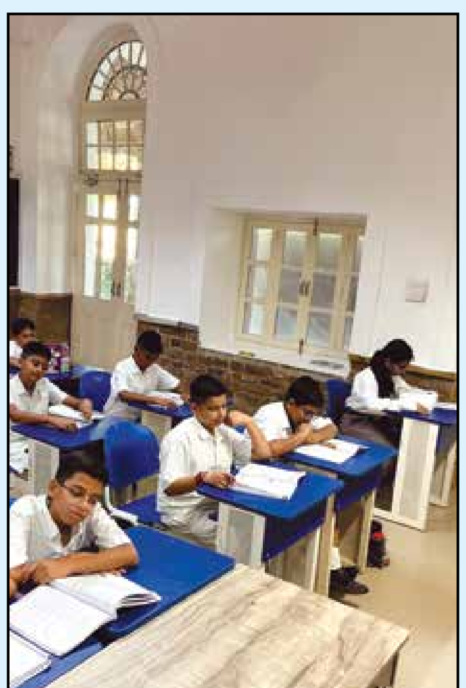

अब चार कदम बढ़ाये और सबसे कोने वाली सीट से पकड़ ली। कुछ देर तक कोई अध्यापक नहीं आए तो मैं एक किताब पढ़ने का नाटक करने लगी। मैं हिम्मत बढ़ाकर और लोगों से काम माँगने गई तो उन्होंने मेरे बारे में पूछा और मैंने भी उनसे बात-चीत की। ऐसे ही मेरी यहाँ के लोगों से बातचीत शुरू हुई।

अब मैं आपको बताती हूँ कि एक लड़की एक लड़कों के छात्रावास तक पहुँची कैसे? मेरे पापा इसी छात्रावास में विज्ञान के शिक्षक हैं और यहाँ शिक्षकों की बेटियों को पढ़ने की अनुमति है।

बस, पहला दिन लोगों मिलते-मिलते कब निकल गया पता ही नहीं चला। शुरुआत के दिनो में कभी-कभी अकेला भी लगता था। घर और पुराने दोस्तों की याद सताती थी। पर, ये भी तो एक नया अनुभव है यह न?

अब ये दिन ऐसे निकल रहे हैं, जैसे बंद मुठ्ठी में से रेत फिसलती है। घर से विद्यालय, वहाँ से घुड़सवारी! हाँ, ये बताना तो भूल ही गई कि मै घुड़सवारी भी सीख रही हूँ। फिर उसके बाद पढ़ाई और बाकी के काम।

अब, जब मुझे यहाँ एक महीना हो गया है तो ऐसा लगता है कि अगर मैं यहाँ नहीं होती तो कहाँ होती? यहाँ पर जो मेरी तरह, दूसरी छात्राएँ हैं, वे मुझे इतना प्यार करती हैं कि अब मुझे कभी अकेला नहीं छोड़तीं। मेरे बाकी के मित्र भी मेरा बहुत ध्यान रखते हैं। अगर कभी मजाक भी करते हैं तो माफी भी माँग लेते हैं।

बस, अब इन्हीं छोटी-छोटी खुशियों से ही जिन्दगी आगे बढ़ रही है। बाकी, यहाँ पर आने का असली कारण तो अच्छी पढ़ाई ही है, उसे कभी नहीं भूलना मुझे।

छवि चावला, ग्यारहवीं, रानोजी

सांत्वना (चतुर्थ) पुरस्कार'

छात्रावास का जीवन

सिंधिया स्कूल में आठ (वरिष्ठ) छात्रावास हैं, जिनका नाम है- जयाजी, रानोजी, महादजी, जीवाजी, माधव, शिवाजी, जयप्पा और दौलत। आठ के आठ सदन किसी न किसी खास कारण से प्रसिद्ध हैं। जैसे जयाजी अपने संस्कारों के लिए प्रसिद्ध है। रानोजी के बच्चे निडर माने जाते हैं। मैं जयाजी सदन में रहता हूँ। वहाँ पर थोड़े कठोर नियम हैं, जो हम पर काफी प्रभाव डालते हैं। छात्रावास हमारे

कक्ष कभी-कभी बदलते भी थे। हमारे कक्ष में गंदगी नहीं होती है। हम समय पर हर जगह पहुँचते हैं। हमारे सदन की सबसे खास बात है, हमारे हाउस मास्टर- सुमित चक्रवर्ती। अधिकतर लोग जयाजी सदन को कठोर नजरों से देखते थे।

मुझे याद है कि जब में जूनियर स्कूल में पता चला कि मैं जयाजी जा रहा हूँ तो मैं काफी डर गया था। पर अब क्या ही कर सकता था! उस रात मैं पहली बार जयाजी में आया तो क्या देखता हूँ- सुमित सर एक कुरसी बैठे हुए हैं। सामने मेज लगी है। उनके साथ कक्षा बारहवीं छात्र भी बैठे हुए थे। पहली रात को ही वे जयाजी के नियमों के बारे में सूचित करते हैं।

उन नियमों को सुनने के बाद, मैं रोते हुए अपने कक्ष में गया और फिर जोर-जोर से रोने लगा। मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा था कि मैं क्या करूँ? सुमित सर ने मुझे बाहर बुलाया और मुझे शांत होने को कहा। अगली सुबह, हमारी हाउस-मेट्रन से मिला। उनसे मिलने के बाद मुझे यह एहसास हुआ कि मुझे कुछ दिन और रहना चाहिये।

धीरे-धीरे समय बीता। संयोग से, मैं एक इनाम भी जीत गया था। फिर एक महीने रहने के बाद ये एहसास हुआ कि यह सदन इतना भी बुरा नहीं। हमने उसकी छवि दिमाग में कठोरता की उतार ली थी। पर, हकीकत तो कुछ और ही थी।

जयाजी में अगर सजा है तो मजा भी है। बाकी सदनों से यह थोड़ा कठोर है। पर काफी अच्छा भी है। लोग उसका कठोर-जीवन ही देख रहे हैं। क्या-क्या अच्छाइयाँ हैं, उसके बारें में कोई बात नहीं करता। अंत में, यह कहना चाहूँगा किसी के बारे में कुछ कहने से पहले, उसके बारे में और जानिये और देखिये। दूसरे शब्दों में कहें तो, उसका मन देखिये, शक्ल नहीं!

अनंत गुप्ता, नौवीं 'द', जयाजी

'सांत्वना (पाँचवा) पुरस्कार'

असफल बहाना

कल की ही बात है। मैं बैठकर अपना गृहकार्य कर रहा था।

तभी मैम आकर कहती हैं, "शौनक बहुत बीमार है, वह एमएल (मैडिकल लीव) पर है। तो, उसका काम बहुत सारा बचा है। उसकी मम्मी ने कॉल किया है। वे न पूरे काम का एक पीडीएफ माँग रही हैं। सब अपनी-अपनी नोटबुक जमा कीजिए।"

शौनक, बस हमारा दोस्त है। मेरे दोस्तों ने आराम से अपनी नोटबुक निकालना चालू कर दिया। परंतु मैंने जल्दी से उठकर अपनी विज्ञान की कॉपी दे दी, बिना सोचे कि उसमें एक जगह उत्तर छोटा होने के कारण, मैम ने एक निशान बना लिया था।

मैम ने सारी कॉपी लेकर एक एक चैक किया। जैसे ही मेरी कॉपी के उस निशान के दाग लगे पन्ने पर आई तो बोलीं, "राहत! यह क्या है? मैं क्या ऐसी कॉपी का पीडीएफ बनाकर भेजूँगी? उसके माता-पिता क्या सोचेंगे? कैसी मैम है? बहुत गंदा राहत! वैरी बैड!"

मेरे पीछे, मेरे दोस्त हँस रहे थे। मेरे चेहरे पर तो एक छोटी मासूम मुस्कान थी। पर, मुस्कान के साथ-साथ अंदर से हैरानी! मैं ऐसा कैसे भूल सकता हूँ! अफसोस! मुझे प्रश्न ६, ७ और ८ के उत्तर फिर से लिखने पड़े।

जब मैम को दिखाया, तो उनको लगा कि प्रश्न क्रमांक ११ भी फिर से करना है। मैंने बहुत बहाना बनाया था। जब मैम ने मुझे डाँटा तो उसी बहाने की मशीन को फिर से चलाना पड़ा। परंतु, बहुत विनती, और हाँ! बहाने के बाद, मुझे उससे से भी बड़ा उत्तर लिखना पड़ा। अच्छी बात यह रही कि मैम चली गई, और मैंने वह उत्तर बस थोड़ा और बड़ा किया, बस।

पर, यह बात पक्की रही कि माता श्री, पिता श्री, भगवान जी, और हाँ, अध्यापक श्री से बहाने बनाना हमेशा असफल रहेगा!

-राहत पनवर, सातवीं 'ब', दत्ताजी

जीवनं महार्हमस्ति, सकारणजीवनं जीव ।। जीवन अनमोल है, उद्देश्यपूर्ण जीवन जियें ।

आनंद: अस्ति स्वीकृति: ।। आनन्द ही स्वीकृति है ।

युवराज की पहल

_युवराज के खासे चुटीले सवाल: पूर्व छात्र राज जुत्शी के मज़ेदार जवाब_

सिंधिया स्कूल सदैव से अपने विद्यार्थियों को केवल पाठ्य पुस्तक के ज्ञान तक सीमित नहीं रखता, बल्कि उन्हें अपनी कल्पनाओं और विचारों को वास्तविकता में बदलने के लिए प्रोत्साहित करता रहता है। इसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए युवराज ने एक ऐसे विचार को जन्म दिया, जिसने विद्यालय को एक नई दिशा दी। सिंधिया पॉडकास्ट। यह पहल विद्यालय के लिए एक नवीन अध्याय है। धीरे-धीरे आज यह सिंधिया स्कूल की अनूठी पहचान बन गई। **_- रणवीर चौहान, ग्यारहवीं, शिवाजी_**

मैं क्या नया दे सकता हूँ?

युवराज के मन में यह विचार अचानक नहीं आया। यह उस खोज का परिणाम था जो हर सिंधियन के भीतर चलती रहती है। "विद्यालय को मैं क्या नया दे सकता हूँ?" उन्होंने महसूस किया कि संवाद और अनुभव साझा करने का ऐसा मंच होना चाहिए, जहाँ विद्यार्थी केवल सुनने वाला न हो, बल्कि प्रेरणा लेने वाला भी बनें । पुस्तकों के परे जाकर, वास्तविक जीवन के अनुभवों को सुनना ही वह माध्यम था, जिसकी कमी उन्हें खटक रही थी । इसी सोच ने पॉडकास्ट का बीज बोया।

हर असफल प्रयास: सीखने का अवसर युवराज की राह भी सरल नहीं थी। रिकॉर्डिंग उपकरणों की अनुपलब्धता, कैमरे की गुणवत्ता की समस्या, और बैकअप का अभाव। कभी रिकॉर्डिंग बीच में रुक जाती, कभी आवाज ठीक से दर्ज नहीं हो पाती, तो कभी डेटा ही नष्ट हो जाता। युवराज का सबसे बड़ा गुण उनका धैर्य और दृढ़ निश्चय है। उन्होंने हर असफल प्रयास को हार मानने के बजाय सीखने का अवसर माना। उन्होंने तकनीकी पहलुओं को गहराई से समझा, बार-बार अभ्यास किया और हर बार पिछले प्रयास से बेहतर करने की ठानी। यह वही दृष्टिकोण था जो सिंधिया स्कूल अपने विद्यार्थियों को सिखाता है, कठिनाइयों से घबराओ नहीं, उन्हें अपना शिक्षक बना लो।

स्वरित और आदिदेव

इस यात्रा में युवराज अकेले नहीं थे। उनके साथ स्वरित और आदिदेव गोयल जैसे मित्र हमेशा खड़े रहे। इन दोनों ने तकनीकी सैटअप, कैमरे की बारीकियाँ और रिकॉर्डिंग की व्यवस्थाओं में युवराज का पूरा साथ दिया। यह सहयोग केवल तकनीकी नहीं था, बल्कि भावनात्मक भी था। जब कभी युवराज हताश होते, तो उनके मित्र ही उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते। यही टीम भावना सिंधिया स्कूल की असली पहचान है। रिकॉर्डिंग की गुणवत्ता सुधरने लगी, पॉडकास्ट की रूपरेखा स्पष्ट होने लगी और विद्यालय समुदाय में इसके प्रति उत्सुकता बढ़ने लगी। युवराज का यह प्रयास, अब केवल उनका व्यक्तिगत सपना न रहकर, विद्यालय की सामूहिक आकांक्षा बन गया था। हर नया एपिसोड इस यात्रा की एक नई सीढ़ी था।

राज जुत्शी से संवाद

युवराज की मेहनत और लगन का सबसे बड़ा परिणाम तब सामने आया जब उन्होंने अपने पॉडकास्ट के लिए वरिष्ठ अभिनेता राज जुत्शी को आमंत्रित किया। यह क्षण न केवल उनके लिए, बल्कि पूरे विद्यालय के लिए गौरवपूर्ण था। राज जुत्शी जैसे दिग्गज अभिनेता का इस मंच पर आना, इस बात का प्रमाण था कि युवराज की पहल अब नए आयाम तलाशने विद्यालय की सीमाओं से आगे निकल चुकी है। राज जुत्शी ने बातचीत के दौरान अपने जीवन और कला के अनुभव साझा किए। उन्होंने बताया कि अभिनय केवल एक पेशा नहीं, बल्कि जीवन का दृष्टिकोण है। निरंतर अभ्यास, संघर्षों से जूझने की हिम्मत और कला के प्रति समर्पण ही सफलता की असली कुंजी है। उनका यह संदेश विद्यार्थियों के लिए अमूल्य था, "कठिनाइयाँ हमें तोड़ने नहीं, बल्कि और मजबूत बनाने के लिए आती हैं।"

दो यात्राओं का संगम

युवराज की यात्रा और राज जुत्शी के विचारों में एक गहरी समानता है। दोनों ने अपने-अपने क्षेत्र में बाधाओं का सामना किया, परंतु कभी हार नहीं मानी। युवराज ने तकनीकी कठिनाइयों को अवसर में बदला, और राज जुत्शी ने संघर्षों को कला में ढाला। यही संगम इस पॉडकास्ट को विशेष बनाता है। यह केवल एक संवाद नहीं, बल्कि दो यात्राओं का संगम था। जहाँ छात्र की जिज्ञासा और कलाकार का अनुभव एक-दूसरे को पूर्ण कर रहे थे।

स्कूल की प्रगतिशील सोच

युवराज की इस पहल ने सिंधिया स्कूल को एक नया आयाम दिया है। आज पॉडकास्ट विद्यालय का एक अनूठा मंच बन चुका है जो आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत होगा। यह केवल तकनीकी उपलब्धि नहीं है, बल्कि यह उस सोच का प्रतीक है जो विद्यालय अपने विद्यार्थियों में बोता है। नवाचार, दृढ़ता और परस्पर सहयोग। आज जब उपलब्धि अपने २५वें वर्ष का जश्न मना रही है, युवराज की यात्रा हमें यह याद दिलाती है कि असली सफलता उन्हीं को मिलती है जो नया सोचने और उसे साकार करने का साहस रखते हैं। राज जुत्शी के विचारों ने इस यात्रा को और गहराई दी है। युवराज का पॉडकास्ट केवल एक गतिविधि नहीं, बल्कि सिंधिया स्कूल की उस प्रगतिशील सोच का प्रतीक है जो हर पीढ़ी को प्रेरित करती रहेगी।

रणवीर चौहान, ग्यारहवीं, शिवाजी

चिड़िया का घोंसला

''नेस्ट मैन'' से तात्पर्य श्री राकेश खत्री से है, जिन्हें भारत में पक्षियों के संरक्षक के रूप में विशेष पहचान प्राप्त है। दिल्ली निवासी राकेश खत्री ने शहरी क्षेत्रों में पक्षियों के लिए सुरक्षित, पर्यावरण-अनुकूल एवं टिकाऊ घोंसले तैयार करने का एक अनूठा और प्रशंसनीय अभियान प्रारंभ किया है। वे अब तक लाखों घोंसले बना चुके हैं, जिनके माध्यम से उन्होंने न केवल गौरैया जैसी लुप्तप्राय पक्षी प्रजातियों के संरक्षण का प्रयास किया है, बल्कि समाज को भी इस दिशा में सजग एवं जागरूक किया है।

उन्होंने देशभर में हजारों कार्यशालाएँ आयोजित कर बच्चों, युवाओं एवं विभिन्न समुदायों को घोंसले बनाना सिखाया है, जिससे वे भी इस पुनीत कार्य में सक्रिय भागीदारी निभा सकें। सिंधिया स्कूल के छात्रों को भी श्री खत्री से संवाद करने, उनके अनुभवों को जानने तथा पक्षियों के संरक्षण संबंधी विशेष जानकारियाँ प्राप्त करने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

विद्यालय आगमन के दौरान उन्होंने विद्यार्थियों को न केवल पक्षियों, विशेषकर गौरैया, के महत्व के विषय

में जागरूक किया, बल्कि उन्हें अपने हाथों से घोंसले बनाना भी सिखाया। यह अनुभव छात्रों के लिए न केवल शैक्षणिक था, बल्कि भावनात्मक रूप से भी अत्यंत प्रेरणादायक रहा। इससे उनमें पर्यावरण संरक्षण के प्रति संवेदनशीलता के साथ-साथ जीवों के प्रति करुणा एवं उत्तरदायित्व की भावना का भी विकास हुआ।

विद्यार्थियों ने इस गतिविधि में अत्यंत उत्साह एवं रुचि के साथ भाग लिया तथा अपने हाथों से सुंदर एवं उपयोगी घोंसलों का निर्माण किया। श्री राकेश खत्री का यह सतत् प्रयास निःसंदेह भावी पीढ़ियों के लिए एक प्रेरणा का स्रोत है। वे यह सिद्ध करते हैं कि यदि संकल्प दृढ़ हो, तो छोटे-छोटे प्रयास भी समाज में बड़े और सकारात्मक परिवर्तन ला सकते हैं।

_श्रीमती रक्षा सीरिया, वरिष्ठ हिन्दी अध्यापिका_

पाषाण युग से लेकर आधुनिक युग तक

आज के समय घटते जंगलो के कारण लकड़ी की कमी होती जा रही है जिससे लोहे के सामान की उपयोगिता बढ़ती जा रही है पर लोहा अपने आप में २००० साल पूर्व से ही भारत की अर्थ व्यवस्था में एक मुख्य भूमिका निभाता आ रहा है क्योंकि २००० साल पहले से ही लोहा भारत से अफ्रीका जैसे देशो में भेजा जाता रहा है।

लोहा एक श्वेत रंग की धातु होती है जो नमी में जल्द ही मलिन हो जाती है लोहे के अन्दर चुंबकीय तत्व का गुण भी होता है जो चुंबक की तरफ तेजी से आकर्षित होता है। लोहा मनुष्य के शरीर के लिए भी एक आवश्यक तत्व है इसलिए इसका उपयोग कुछ दवाइयों में भी किया जाता है लोहे की जब कमी मनुष्य के शरीर में होती है तो हानिकारक होती है लेकिन जब मनुष्य के शरीर में लोहे की मात्रा अधिक होती है तो वह भी हनिकारक होती है इसलिए लोहा मनुष्य के शरीर और जरूरतों के लिए आवश्यक है। क्योंकि लोहे का नया रूप स्टील है

आज के दौर में मनुष्य के शरीर के किसी भी जगह फ्रैक्चर होने पर जोड़ने के लिए स्टील रौड या स्टील प्लेट का उपयोग किया जाता है। लोहा एक ऐसी धातु है जिसका उपयोग कई तरह के औज़ार और पिलर, पुल बनाने में किया जाता है। लोहे का उपयोग घर में काम में आने वाले सामग्री जैसे चाकू, कढ़ाई इत्यादि एवं हथियार बनाने के लिये भी किया जाता है। लोहे का उपयोग मनुष्य आज घर बनाने से लेकर यातायात के साधनों के लिये भी करता है। बस, लौहपथ-गामिनी एवं हवाई जहाज पानी के जहाज इत्यादि । आज के आधुनिक युग में लोहे का उपयोग दुनिया में हो रहे युद्ध में टैंक, मिसाइलें, फाइटर प्लेन इत्यादि में हो रहा है और दुनिया के अन्दर साइंस के जितने भी अविष्कार हो रहे हैं, वह लोहे के बगैर असंभव हैं। चाहे वो मंगल ग्रह, चंद्रयान हो या और कुछ, भारत ही नहीं पूरी दुनिया में लोहे का बहुत ही ज्यादा उपयोग किया जाता है। आप सभी जो पृथ्वी का कोण देखते हैं वह लोहे से ही बना हुआ है।

जिस युग में सबसे ज्यादा लोहे का उपयोग किया गया उसे लौह युग कहते हैं जो कि पाषाण युग के बाद आता है। पुराने समय से ही मनुष्य के लिये लोहा उपयोगी साबित हुआ है, जो वर्तमान में भी जारी है। आने वाले समय में लोहे को नए रूप में बनाकर घर के उपयोग में आने वाली ज़रूरत की हर वस्तु में प्रयोग किया जायेगा। भविष्य में लोहे के बारे में इस प्रकार से कहा जाएगा -

'जीते लोहा मरते लोहा
अजब तमाशा लोहे का'

बच्चे के जन्म के समय जिस पलग पर बच्चा जन्म लेता है, वह लोहे का। आज के समय जिस झूले में बच्चा झूलता है। वो भी लोहे का होता है। और आख़री समय में जिस जगह अस्पताल में अपने शरीर को त्यागता है, वह स्ट्रेचर या पलंग भी लोहे का होता है। जिस शव वाहिका से श्मशान ले जाया जाता है, वह भी लोहे की होती है। जिस मशीन में उसे जलाया जाता है, वह भी लोहे की होती है। इसलिए संसार में मनुष्य के जीवन में लोहे का बहुत महत्वपूर्ण स्थान।

लोहे का उपयोग करने का एक ही तरीका रहा है, जो पूरी दुनिया में आज़माया जाता है, चाहे पुराना युग हो या वर्तमान।

लोहे को गरम किया,
तोड़ा, मोड़ा, जोड़ा और हो गया।

गरम मतलब = गरम करके मनचाहा आकार बनाना

तोड़ा मतलब = कटिंग करना

मोड़ा मतलब = अपनी मनचाही डिज़ाइन देना

जोड़ा मतलब = वैल्डिंग या किसी और तरीके से जोड़ना

हो गया मतलब = जो बनाना था, वो तैयार हो गया

अरुण कुमार शर्मा
मैटल वर्क आर्ट

सफलता की कुंजी

विद्यालय के प्रांगण में दोपहर का समय था। कक्षाएँ समाप्त हो चुकी थीं, लेकिन कक्षा ८ का छात्र आरव अभी भी खेल मैदान में अभ्यास कर रहा था। उसके हाथ में हॉकी स्टिक थी और माथे पर पसीने की बूंदें।

उसके मित्र समीर ने पास आकर कहा, "आरव, अब बस करो! इतनी मेहनत क्यों कर रहे हो? कल की प्रतियोगिता में अगर हार भी गए तो क्या हुआ?"

आरव मुस्कुराया और बोला, "समीर, जीत-हार से ज्यादा जरूरी है कि मैं अपनी तरफ से पूरी मेहनत करूँ। अगर मैंने लगन से अभ्यास किया तो जीत अपने आप मेरे कदम चूमेगी।"

यह सुनकर समीर सोच में पड़ गया। हम सभी के जीवन में सपने होते हैं। कोई डॉक्टर बनना चाहता है, कोई इंजीनियर, कोई लेखक तो कोई खिलाड़ी। लेकिन इन सपनों को हकीकत में बदलने का सबसे बड़ा मंत्र है, मेहनत और लगन। मेहनत का मतलब है किसी काम को पूरे समर्पण और ईमानदारी से करना। लगन का अर्थ है उस काम में निरंतरता बनाए रखना। अगर मेहनत के साथ लगन जुड़ जाए तो सफलता निश्चित हो जाती है।

महान वैज्ञानिक थॉमस एडिसन ने कहा था। ''मैं असफल नहीं हुआ, मैंने केवल १०,००० ऐसे तरीके खोजे जो काम नहीं करते।'' यही दृढ़ निश्चय उन्हें बल्ब का आविष्कार करने में सफल बनाता है। अगर उन्होंने बीच में हार मान ली होती, तो शायद आज हमारे जीवन में यह रोशनी न होती।

भारत में ही देखिए। महान क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर का जीवन। उन्होंने अपने करियर में अनगिनत चुनौतियों का सामना किया। चोटें आई, हार का सामना किया, लेकिन उनकी मेहनत और लगन ने उन्हें दुनिया का महानतम बल्लेबाज बना दिया।

इसी तरह पी. वी. सिंधु का उदाहरण लीजिए। उन्होंने भी हार का स्वाद चखा, लेकिन हर बार वे पहले से ज्यादा मेहनत के साथ कोर्ट पर लौटीं और आज देश का नाम रोशन कर रही हैं।

हमारे विद्यालय में भी हर दिन हमें नए अवसर मिलते हैं। पढ़ाई, खेल-कूद, विज्ञान मेले, साँस्कृतिक कार्यक्रम। कई बार रास्ते कठिन लगते हैं। कोई गणित का सवाल सुलझाने में असफल होता है, कोई भाषण प्रतियोगिता में घबराता है, तो कोई खेल में पिछड़ जाता है। लेकिन जो विद्यार्थी मेहनत और लगन बनाए रखते हैं, वे अंततः सफलता पाते हैं।

किसान जब खेत में बीज बोता है, तो वह जानता है कि तुरंत फसल नहीं मिलेगी। उसे धैर्य रखना होगा, पौधों को पानी और खाद देनी होगी, समय पर देखभाल करनी होगी। धीरे-धीरे वही बीज हरे-भरे पौधों में बदलते हैं और अंततः किसान मेहनत का फल पाता है। हमारा जीवन भी उसी खेत की तरह है। मेहनत और लगन के बीज बोएँ, धैर्य और निरंतरता से उनकी देखभाल करें, और समय आने पर सफलता के फल का आनंद लें।

अगले दिन प्रतियोगिता में आरव का प्रदर्शन शानदार रहा। उसने न केवल गोल किए बल्कि अपनी टीम को जीत भी दिलाई। जब प्रिंसिपल ने मंच पर उसकी प्रशंसा की, तो आरव ने कहा,

"मेरी जीत का श्रेय केवल मेरी मेहनत और लगन को जाता है।"

तो आइए, हम सभी इस वर्ष यह संकल्प लें कि हम अपने सपनों के लिए पूरी मेहनत और लगन से प्रयास करेंगे। छोटी-छोटी असफलताओं से घबराएँगे नहीं, बल्कि उन्हें सीखने का अवसर मानेंगे। याद रखिए। सफलता उन्हीं के कदम चूमती है, जो कभी हार नहीं मानते।

श्लोक शर्मा, ग्यारहवीं, जीवाजी

गाँव के दिन ....

शहरों की अशांति से मीलों दूर,
जहाँ मिलती हरियाली भरपूर
उगती जहाँ फसलें भिन्न-भिन्न,
देखकर इस अत्यंत सुंदरता को
याद आते हैं वे गाँव के दिन ....
जहाँ सूरज की किरणें खेतों में छलाँग लगाती,
जहाँ पंछी मधुर स्वर में गाते
यहाँ के अनगिनत खेतों को न पाओगे गिन,
मुस्कराता हूँ मैं मन ही मन
याद कर वे गाँव के दिन ....
गाँव के सीधे-साधे लोग,
रहते सबके दिलों के पास
इन पर है अटूट विश्वास
भले ही धर्म-जाति के हों ये विभिन्न,
याद आते हैं वे गाँव के दिन ....
शहरी जीवन के हम हैं पराधीन,
काम-काज में हर कोई है विलीन
भारत की सुनहरी संस्कृति को,
भूलते जा रहे हैं हम प्रतिदिन
याद आते हैं वे गाँव के दिन

अर्णव जोशी, बारहवीं, महादजी

क्या आप एक साल रुकना चाहेंगे?

गतिविधि अधिष्ठाता श्री धीरेन्द्र शर्मा जी से साक्षात्कार

बिना रोमांच के जीवन बिलकुल नीरस है और नीरस व्यक्ति के आसपास कोई भी व्यक्ति आना पसंद नहीं करता। स्कूल की बदौलत, मुझे कई रोमांचक यात्राओं पर जाने का अवसर प्राप्त हुआ। आशा है मैं पहले की अपेक्षा नीरस व्यक्ति नहीं हूँ। यादों और अनुभवों का एक भंडार है जो गाहे-बगाहे जाने-अनजाने कभी भी काम आता रहता है। सबसे बड़ी बात है कि कैसी भी परिस्थितियों में रहने में असुविधा महसूस नहीं होती। - ***श्री धीरेन्द्र शर्मा***

प्रत्यूष- सिंधिया स्कूल से आप कैसे जुड़े? इस स्कूल की वे बातें कौन-सी हैं, जिनके कारण आप आज भी इसका अटूट हिस्सा हैं?

उत्तर- ये सन १९९५ की बात है, संयोग से मैं अपने एक मित्र से मिलने दून स्कूल परिसर में था। उसी समय सिंधिया स्कूल के तत्कालीन प्रधानाचार्य श्री ए. एन. दर दून स्कूल के कैंपस में अपने मित्रों से मिलने आये हुए थे। उस समय वह मुझे बड़े आदर से मिले, तथा अनेक बेबाक एवं रोचक प्रश्न पूछे। ये सब मेरे लिए आश्चर्य भरा नया अनुभव था। मुझे सिंधिया स्कूल में एक महीने के लिए पढ़ाने के लिए आमंत्रित किया, ये कहते हुए कि मेरे लिए ये एक अच्छा अनुभव रहेगा, नौकरी आगे भी जारी रहेगी इसका कोई वादा या आश्वासन नहीं दिया। इस तरह से मुझे तत्कालीन वाइस प्रिंसिपल श्री आर. के. तिवारी जी की कक्षाएँ पढ़ाने के लिए दी गई। वे गणित पढ़ाते थे, और टीचर एक्सचेंज प्रोग्राम के तहत ऑस्ट्रेलिया जा रहे थे। मेरे भाग्य से, उनके जाने में कुछ विलंब हुआ। जिस वजह से, एक से दो महीने हो गये । फिर श्री आर. एस. गर्ग, जो भौतिकी के अध्यापक थे। उन्हें टैनिस खेलते हुए, कंधे में चोट आ गई। उनकी कक्षाएँ मुझे मिलीं, और मेरे दो से छह महीने हो गए और फिर दिसंबर में जब मैं घर जाने के सपने देख रहा था, दर साहब ने मुझसे पूछा, ''क्या आप एक साल रुकना चाहेंगे?'' जो वास्तव में उनका बड़प्पन था। एक साल बाद फिर स्कूल ने, विधिवत साक्षात्कार द्वारा मुझे नियमित अध्यापक के रूप में अपने से जोड़ लिया। उस समय माहौल बड़ा खुशनुमा था। हमें स्कूल के कार्यक्रमों में, जैसे प्लैट, आईपीएससी-क्रिकेट इत्यादि में जब भी काम मिलता था, उसे हम मिलजुलकर खूब खुशी से पूरा करते थे।जिसको भी काम मिला, वह सबका काम होता था और रात्रि के भोजन के पहले पहले खतम करने की कोशिश होती थी। उन दिनों हफ्ते में चार दिन गेम्स ड्यूटी होती थी और तीन दिन रिमिडियल भी पढ़ाते थे। दूसरे मित्रगण रात्रि के भोजन के पहले कक्षाओं को अतिरिक्त पढ़ाते थे। पढ़ाने और काम करने का वातावरण अच्छा था। कभी कभी अगर रात्रि का भोजन नहीं कर पाते तो कोई भी वरिष्ठ अध्यापक घर पर भोजन के लिए बुला लेता, चाहे हमारी उनसे उतनी बातचीत हो या न हो। हम चुपचाप सिर नीचे किये खा-पीकर चले आते थे। और कोई नहीं तो, दर सर के घर, हम हफ्ते में, दो-तीन बार आमंत्रित होते ही थे। एक पारिवारिक माहौल था। ऐसे में, मौका मिलने पर, काम करने के लिए इससे अच्छा कोई विकल्प नहीं था। दर साहेब, हमें बहुत प्रोत्साहित करते थे। मैंने अनेक स्कूलों में देखा और महसूस किया कि अध्यापन करने के लिये इससे अच्छा कोई स्कूल नहीं हैं।

प्रत्यूष-विद्यालय की अब तक की यात्रा में कौन-कौन से या किस प्रकार के बदलाव देखे हैं, जो स्कूल के लिए मील का पत्थर साबित हुए हैं?

उत्तर-मेरी राय में श्री अमरनाथ दर और श्री एन. के. तेवारी अपने-अपने तरह से स्कूल के लिए मील का पत्थर साबित हुए हैं! श्री दर स्कूल की विचारधारा में आमूल-चूल परिवर्तन लाये। श्री तेवारी स्कूल शिक्षा में कंप्यूटर रूपी क्रांति लाये। दोनों ही ने सभी शिक्षकों एवं छात्रों को आगे बढ़ने के कई अवसर दिये। दोनों का नेतृत्व विशाल हृदयी था। दोनों कम से कम बंधन से कार्य लेने का था। आगे आने वाले प्रधानाचार्यो ने भी उसी परम्परा का निर्वहन किया। इसके अलावा, स्कूल के मील के पत्थर तो उसके छात्र ही होते हैं

प्रत्यूष- आप इस बात के साक्षी रहे हैं कि जब भी राउण्ड स्क्वायर, सोशल सर्विस प्रोजेक्ट, पर्वतारोहण, सायकिल यात्राएँ, अंतर्विद्यालयी प्रतियोगिताओं आदि की बात आती है तो सभी छात्र आपके सामने निवेदन लेकर आ जाते हैं। एक अनार सौ बीमार वाली बात! आप चयन कैसे करते हैं?

उत्तर - राउंड स्क्वायर की एक अलग समिति है जो छात्रों का चयन करती है। इस समिति की अध्यक्षता प्राचार्य महोदय करते हैं। इसमें बच्चों से साक्षात्कार में होते हैं, सवाल-जवाब किये किया जाते हैं। इस साक्षात्कार के आधार पर प्राप्त अंकों की एक सूची बनती है, इन्हीं अंकों के आधार पर उनको यथा स्थान भेजा जाता है। एडवेंचर एक्टिविटी के लिए बच्चों की शारीरिक क्षमता पर निर्भर करता है, कि वह उसके लिए कितना तंदुरुस्त है। कभी-कभी साँस की तकलीफ या अस्थमा की बीमारी होने पर, डॉक्टर से भी प्रमाण-पत्र जाता है। समाज-सेवा अभियान में सभी का स्वागत है। उसके लिए किसी चयन-प्रक्रिया की आवश्यकता नहीं होती।

प्रत्यूष- इस विद्यालय में यूँ तो अनेक अध्यापक- अध्यापिकाएँ किताबें पढ़ते हैं। मगर आपकी पढ़ने की आदत कुछ ख़ास है। हमने अनेक छात्रों-अध्यापकों से सुना है। आपके स्वभाव में पढ़ने की आदत कैसे आई?

उत्तर - मेरी माँ को पढ़ने का बहुत शौक था और उन्हीं के कारण वो पढ़ने की लत लग गई। यूँ तो मेरी पढ़ाई की किताबों में ज्यादा रुचि नहीं थी, पर कभी कहानियों की पुस्तक पढ़ने के लिए उन्होंने अधिक डाँटा नहीं। उन्हें लगता होगा कुछ तो पढ़ रहा होगा, कुछ तो पढ़ रहा है। एक अध्यापक के रूप में, शायद उनके जितना उदार नहीं रहा अपने छात्रों के प्रति। पर, मुझमें पढ़ने की जो अच्छी आदत है, उसका सारा श्रेय माँ को जाता है।

प्रत्यूष- आपके अनुसार सिंधिया स्कूल के छात्रों को अपने छात्र-जीवन में (कक्षा छठवीं से लेकर बारहवीं तक) कौन-कौन सी किताबें जरूर ही पढ़ना चाहिए?

उत्तर - मेरा मानना यह है कि किताबें पढ़ना ज्यादा महत्वपूर्ण है। कौन-से विषय पर पढ़ना है, वह छात्रों के ऊपर है। किताबें पढ़ना एक अच्छी आदत है। अपने आपके साथ समय बिता सकते हैं। ज्ञानवर्द्धन होता है और सोच के आयाम विकसित होते हैं। खासकर, वर्तमान सोशल मीडिया के गैर जिम्मेदार ज्ञान के अत्याचार से बचने के लिए पढ़ने की आदत होना अति आवश्यक है। क्योंकि पुस्तकों में लिखी बात ज्यादा प्रामाणिक है। उनकी विश्वसनीयता अभी भी बनी हुई है।

प्रत्यूष- छात्रावास में जीवन चुनौतियों से भरा है। फिर छात्र को अपना भविष्य भी सँवारना है! आप अपने जीवन से उन्हें क्या सबक देंगे?

उत्तर- छात्रावास की जिंदगी सुरक्षित वातावरण में एक साझा अनुभव एवं छोटा-सा संघर्ष है, जब बच्चा अपने माता पिता की छाया में रहता है, तब वह उन पर आश्रित होता है और आराम की जिंदगी बसर कर रहा होता है, सुरक्षित महसूस करता है। यहाँ पर बच्चों को अपना सारा काम स्वयं करना पड़ता है और समय के साथ वह स्वावलंबी हो जाते हैं और नये जीवन की आदत डाल लेते हैं। ये आदतें जीवन जीने के हुनर हैं, जो ताउम्र साथ देते हैं। छोटी-मोटी तकरार प्यार बढ़ाती है, पर उसे छोटा-मोटा ही रहने देना चाहिए। सबके साथ मिलकर कैसे हम जीवन में आगे बढ़ें, उस पर सारा ध्यान होना चाहिए। क्रोध आना स्वाभाविक है, पर माफ कर देना, अब स्वाभाविक भाव बन जाये। ऐसी हमारी कोशिश होनी चाहिए। क्रोध और मलिनता

तरङ्गलोलान्यार्यूषि कीर्तिः कल्पांतसाक्षिणी ।। डरपोक जीवन लहरों की तरह है, कीर्ति समय के अंत तक रहती है।

उत्कृष्टता न कुलेन सिद्ध्यन्ति कर्मणा तु ।। श्रेष्ठता कुल से नहीं, कर्म से प्राप्त होती है।

जीवन में हर तरह का नुकसान करती है। माफ करना, या अनदेखा करने की कला जीवन को आनंदमयी बनाये रखेगा। स्कूल में बहुत सारे अवसर मिलते हैं, उनका लाभ लेना चाहिए। इससे अनुभव बढ़ता है और समय का सदुपयोग भी होता है।

प्रत्यूष- अपनी सिंधिया-लाइफ को एक पैराग्राफ में समेटना चाहेंगे तो क्या कहेंगे?

उत्तर - छात्रों की तरह मुझे भी कई अवसर मिले, सीखने के। मैंने अपने वरिष्ठ एवं समकालीन सहयोगियों से बहुत कुछ सीखा। कई अवसर मिले मिले अपना शौक पूरा करने के। जैसे- लंबी दूरी की सायकिल-यात्रा, पर्वतारोहण और नये प्रदेशों की यात्र इत्यादि। अपनी तरफ से मैंने गंभीरता से कर्त्तव्य निर्वहन किया। तथा अपने वरिष्ठ सहयोगियों का विश्वास अर्जित किया। बहुत बार आप सही दिसँ में सोचते तो हैं, पर आगे बढ़ने की हिम्मत नहीं होती। ऐसे में, वरिष्ठ सहयोगियों के विश्वास ने, अपने निर्णयों पर मुझे हौसला दिया।

प्रत्यूष- सिंधिया स्कूल में जीये अपने समय को यदि एक वाक्य में लिखना हो तो आप क्या लिखेंगे?

उत्तर - बहुत अच्छा समय बीता। बहुत कुछ सीखने को मिला। दूसरों को हिदायत देना तो ठीक पर उनकी सुनना भी अपने आप में एक कला है।

प्रत्यूष-यदि आप सिंधिया-स्कूल की अपनी यात्रा को एक शब्द में व्यक्त करें तो वह शब्द क्या होगा?

उत्तर- रोमांचक!

प्रत्यूष-आप अपनी के व्यक्तित्व के विविध आयामों को किन-किन विविध शब्दों में अभिव्यक्त करेंगे?

उत्तर- अति साधारण, सरल, विचारों और कर्त्तव्य से ईमानदार, नास्तिक पर कर्मो पर विश्वास, मुश्किल परिस्थितियों में धैर्यवान। . . . इतना ही अभी ध्यान आता है!

प्रत्यूष-अपने जीवन को रोमांचक यात्राओं से आप कैसे जोड़ते हैं?

उत्तर - बिना रोमांच के जीवन बिलकुल नीरस है और नीरस व्यक्ति के आसपास कोई भी व्यक्ति आना पसंद नहीं करता। स्कूल की बदौलत, मुझे कई रोमांचक यात्राओं पर जाने का अवसर प्राप्त हुआ। आशा है मैं पहले की अपेक्षा नीरस व्यक्ति नहीं हूँ। यादों और अनुभवों का एक भंडार है जो गाहे-बगाहे जाने-अनजाने कभी भी काम आता रहता है। सबसे बड़ी बात है कि कैसी भी परिस्थितियों में रहने में असुविधा महसूस नहीं होती।

प्रत्यूष-सिंधिया स्कूल की पहचान या छवि रोमांचक यात्राओं, सर्विस प्रोजेक्ट, खेलकूद एवं कठोर उद्यमिता से मिलकर बनी है। आज ये छवि धुंधला गई है, आप इससे सहमत है?

उत्तर-रोमांचक यात्राएँ, सेवा अभियान, खेलकूद इत्यादि पहले भी रहे हैं, और अभी भी हैं। मुझे ऐसी आशा है, नई पीढ़ी छात्र एवं शिक्षक इसे आगे ही बढ़ायेंगे। अभी मुझे ऐसा नहीं लगता कि ये आज छवि धुँधला गई है कोरोना एवं देश की विपरीत परिस्थितियों ने ज़रूर पिछले कुछ ग्रीष्म-अवकाश में कमी की है, पर ये सब अस्थायी क्षण हैं। हम सब शीघ्र ही मुक्त होकर आगे बढ़ेंगे।

प्रत्यूष- आपका अपना जीवन-जीवन- दर्शन क्या है? मेरा मतलब उन विचारों से है, जिन्हें आप हम सबसे साझा करने की में बहुत उत्सुक हैं।

उत्तर- मेरा मानना है, मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और उसके साथ एक जिम्मेदारी भी आती है। इस ज़िम्मेदारी और दूसरे सामाजिक बंधनों को साथ लेते हुए, जिंदगी जितनी उन्मुक्त एवं बंधन मुक्त होगी, उतना हम उसे ज़्यादा आनंदमयी बना सकते हैं। कुछ मूल्यों के बंधन आप स्वत: ही लगाते हैं और ज़रूरी भी हैं। पर, जितने अतार्किक बंधन हैं, उनसे तिलांजलि ले लेनी चाहिये। जिंदगी में परिस्थितियों, सामाजिक रीतियों, समाज में रहने वाले लोग और उनकी सोच से उत्पन्न, चिटुर-पुटुर तनाव से आप मुक्त नहीं रह सकते। ऐसे में अपनी सोच जितनी धरातल पर रखेंगे, दूसरों से अपेक्षाएँ जितनी कम रखेंगे, जीवन उतना ही तनाव मुक्त रहेगा। झूठ और उससे प्रत्युत्पन्न सभी बातों से मैं दूर रहने की कोशिश करता हूँ। मैं दिखावे में कम से कम विश्वास करता हूँ। आप जैसे हो, वैसे ही रहना चाहिए। कोई मुखौटा नहीं पहनकर रहना चाहिये। मुखौटा अपने आप में एक बोझ है। और हाँ, दूसरों की जब=तब मदद करने, और उन्हें समझाने में कभी-कभी अच्छा लगता है, तो ऐसा करके खुश हो लेता हूँ। आप भी ऐसे खुश हो सकते हैं।

प्रत्यूष-उपलब्धि पत्रिका अपना रजत जयंती वर्ष मना रही है। इस अवसर पर, आपका क्या सन्देश है?

उत्तर - उपलब्धि लाने का मुख्य उद्देश्य बच्चों को एक और अवसर देना था। बच्चे हिंदी में बहुत लिखते थे और अब और लिखें। हिन्दी अपने आप में बहुत ही समृद्ध और उदार भाषा है। आज हिन्दी बहुत लोगों द्वारा बोली जाती है। ए.आई. के जमाने में, हिन्दी का महत्त्व कम नहीं होने वाला। इस अभिव्यक्ति के सशक्त माध्यम को हमें और आगे बढ़ाना चाहिए। यह साल-दर-साल बढ़ती रहे और स्वर्ण, अमृत वर्ष और शताब्दी वर्ष मनाये, ऐसी मेरी कामना है।

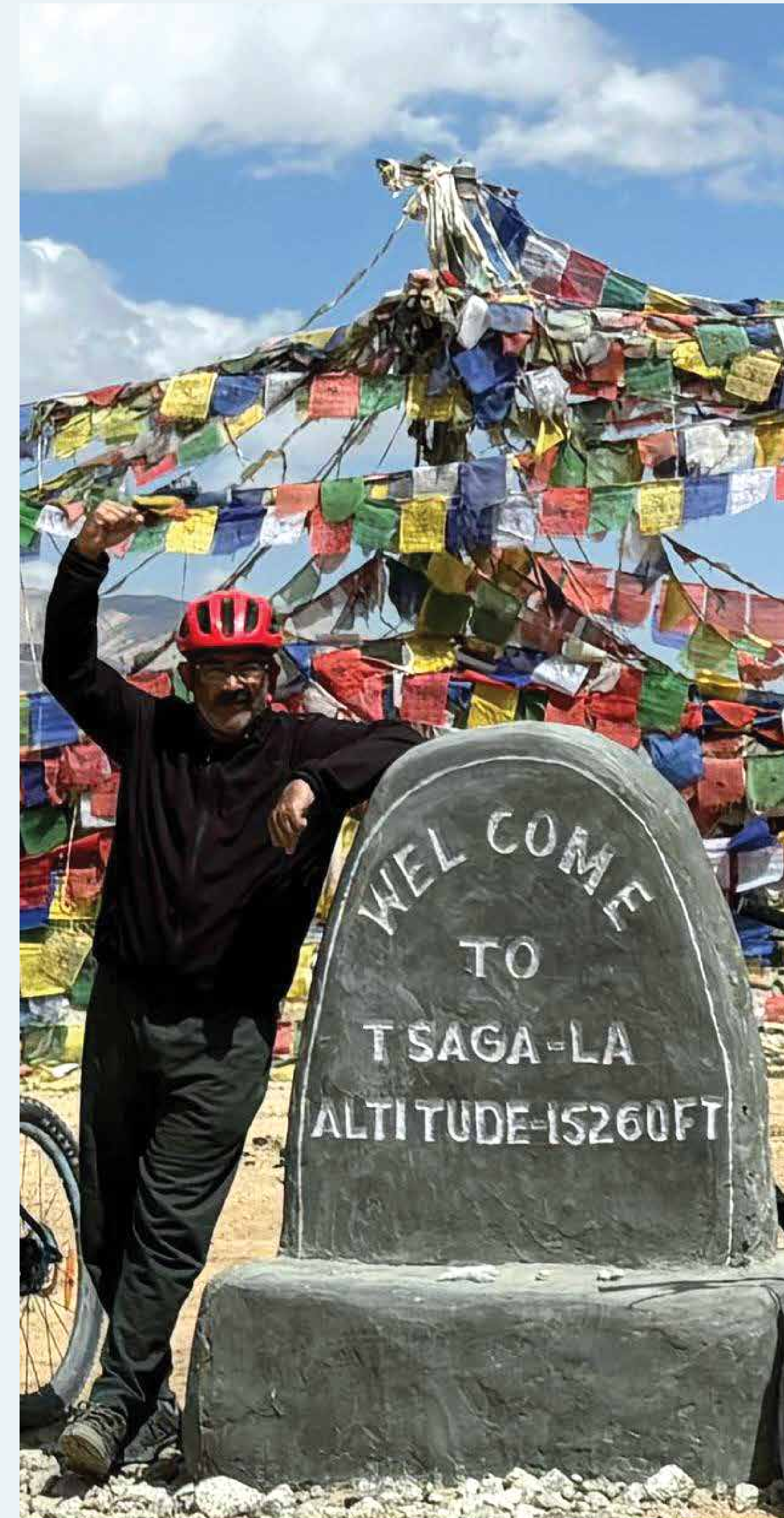

आपकी कहानी : चित्रों की जुबानी

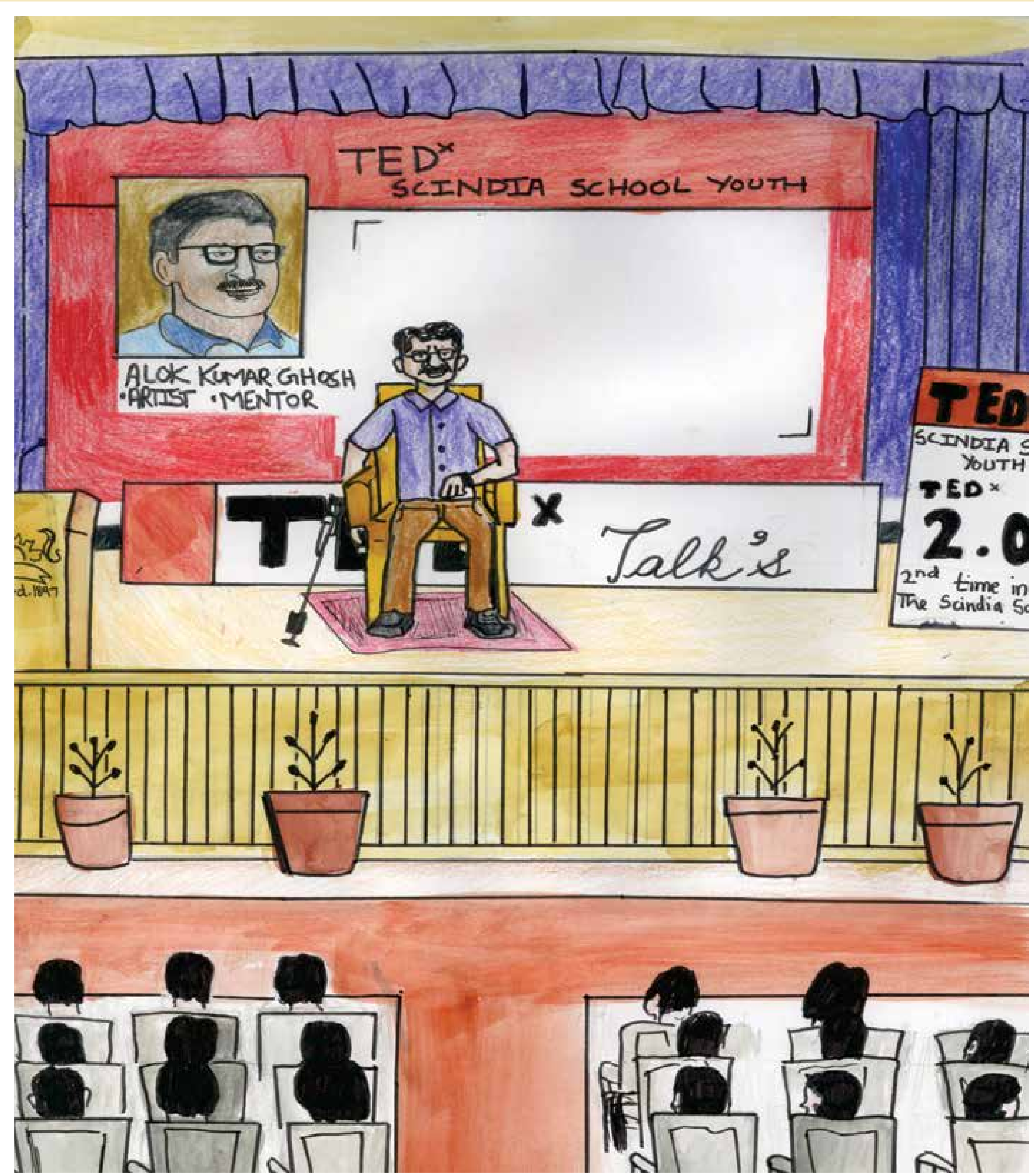

एक दिन, १३ अगस्त २०२५ को, मुझे मेरी कहानी कहनी थी। भावनाओं की नदी निकल पड़ी...

मेरी माता मुझे आँगन में बैठा देती। मैं चित्र...

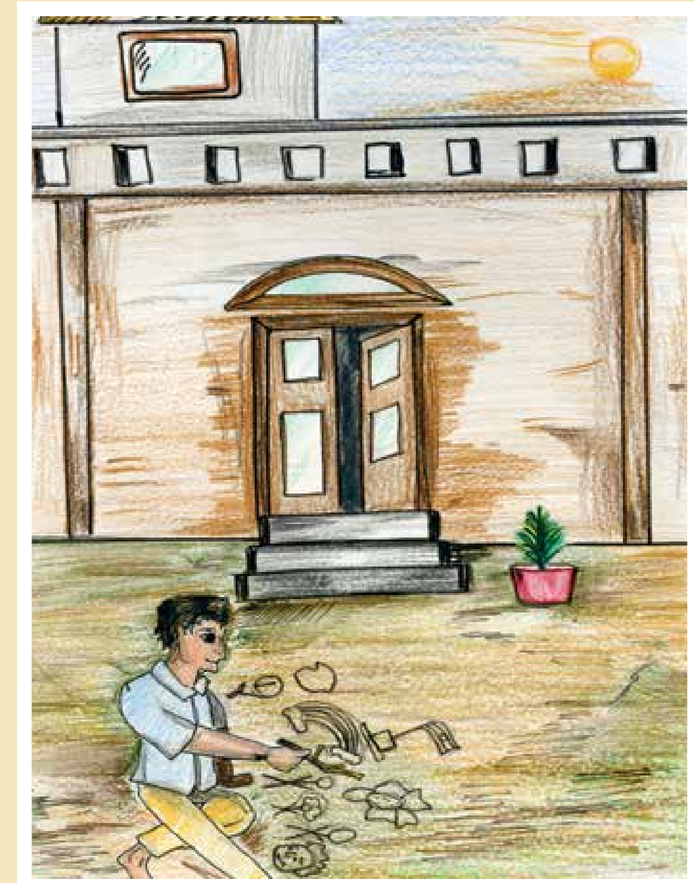

पिता ने आँगन में चलने दोनों ओर बाँस बाँधे...

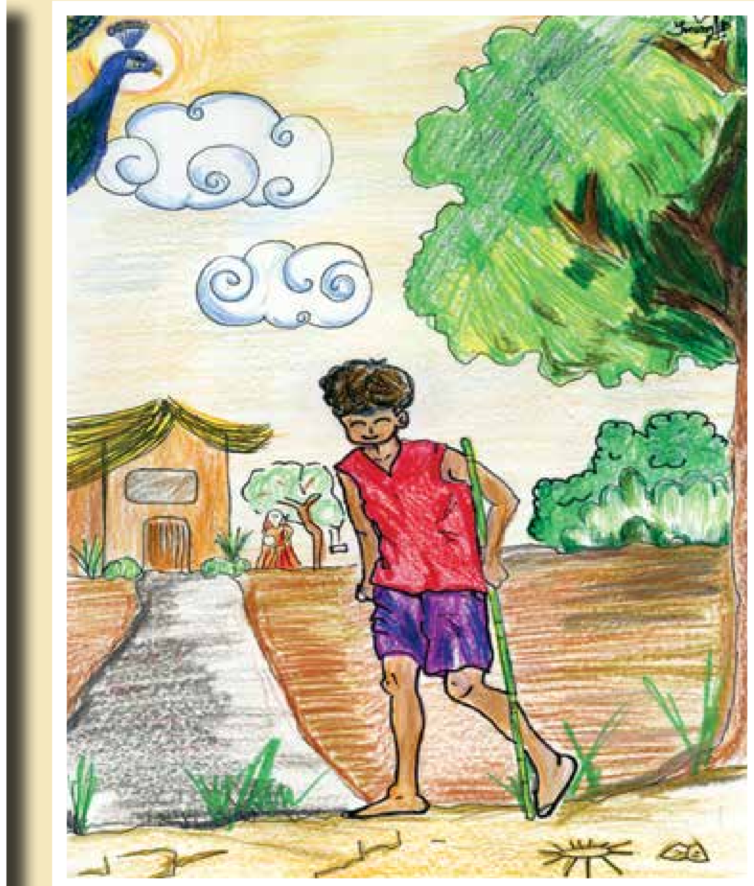

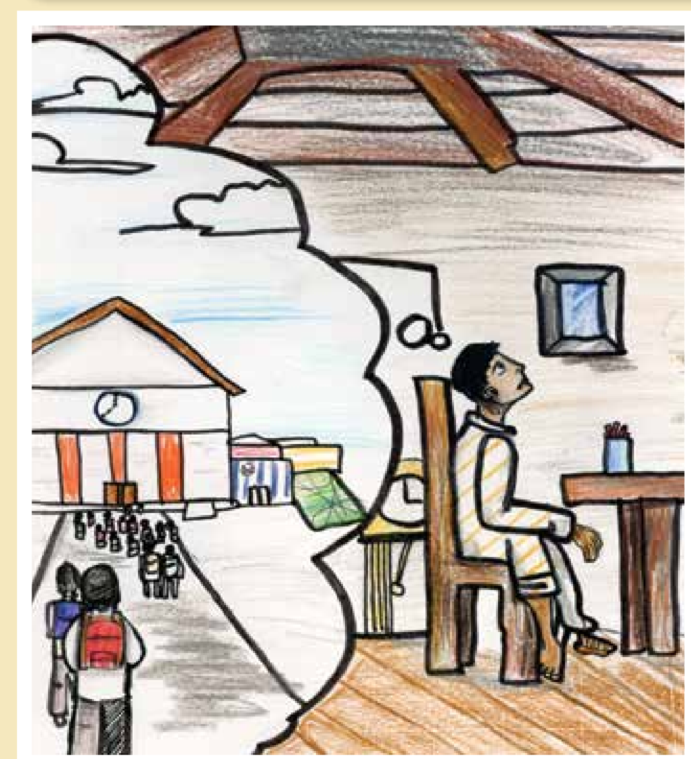

घर में बैठा-बैठा स्कूल जाने सपने देखता...

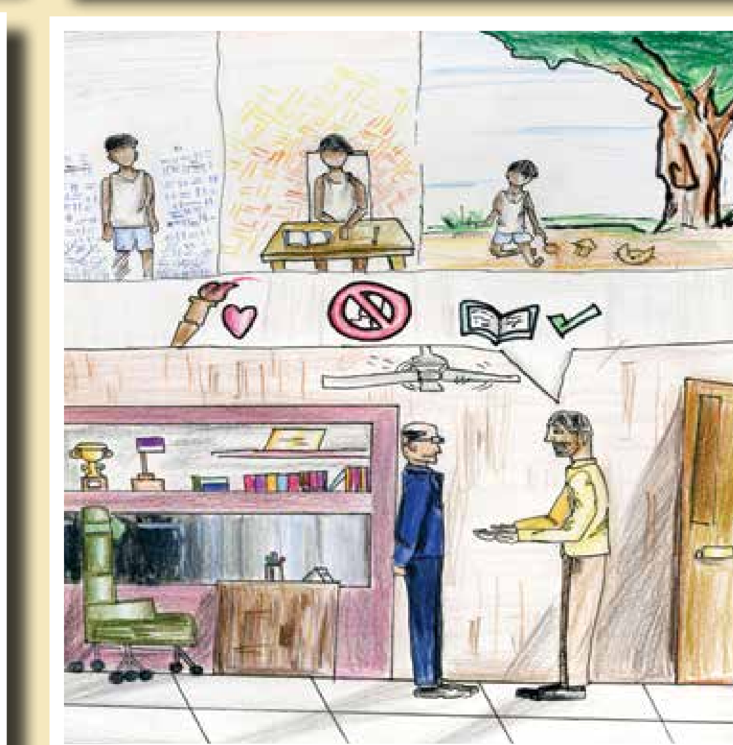

पिता ने स्कूल में जाकर मुझे पढ़ाने की बात...

एक शिक्षक मुझे पढ़ाने घर आने लगे...

अब मैं 'शांति निकेतन' में मूर्तिकला सीखने लगा...

... और उन सारे दोस्तों में से एक मेरा हमसफ़र बना...

परिसर बहुत बड़ा था, दूर तक चलना कठिन था, दोस्तों ने साईकिल...

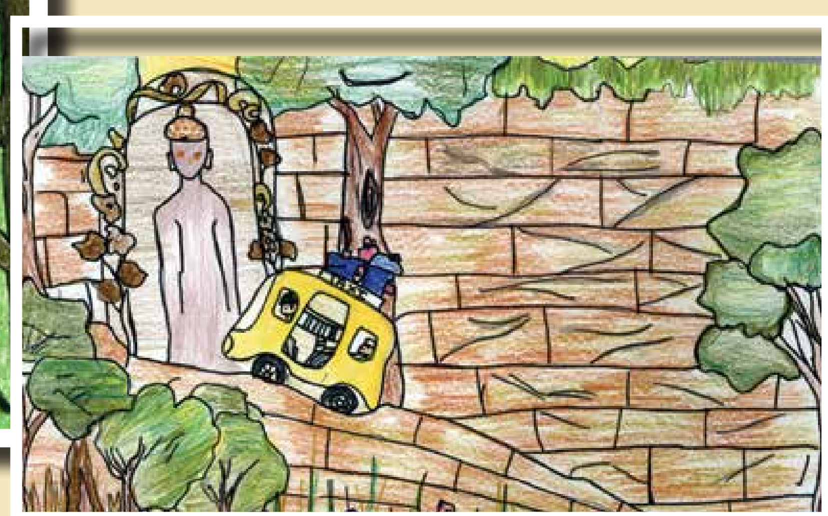

एक दिन मैं सिंधिया स्कूल के किले पर...

दर साहब मुझसे रोज़ अपना कार्टून बनाने को कहते...

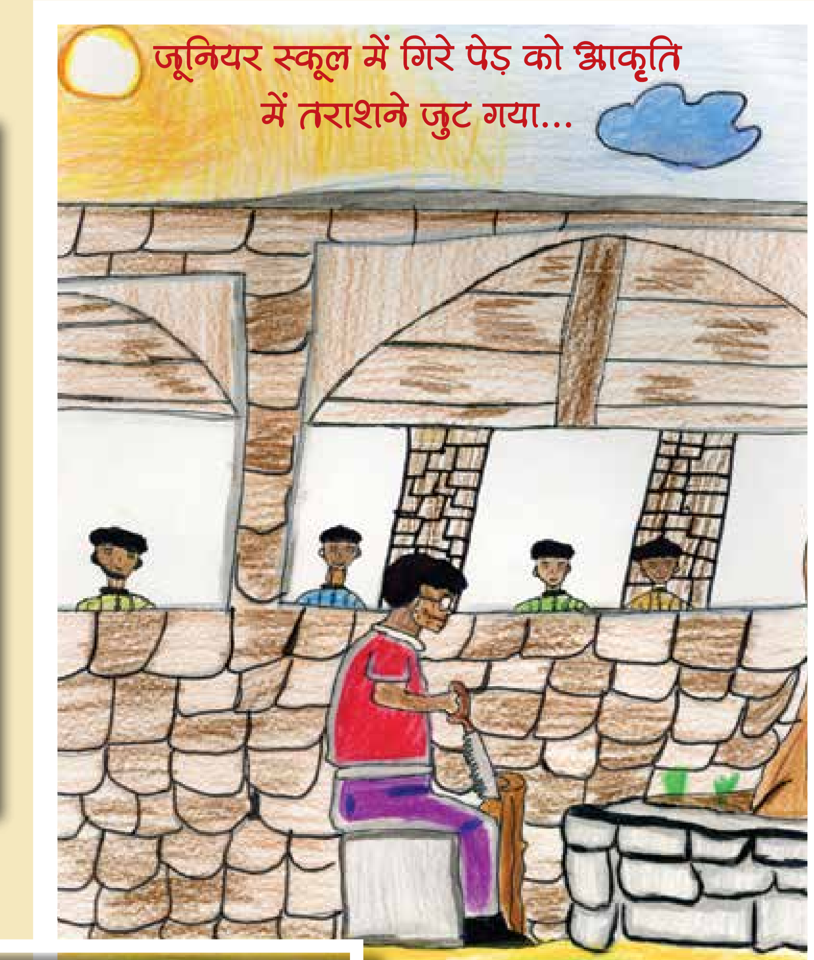

जूनियर स्कूल में गिरे पेड़ को आकृति में तराशने जुट गया...

सीढ़ी लगाकर छात्रों संग ओ.ए.टी. की दीवार पर कलाकृतियाँ उकरने लगा...

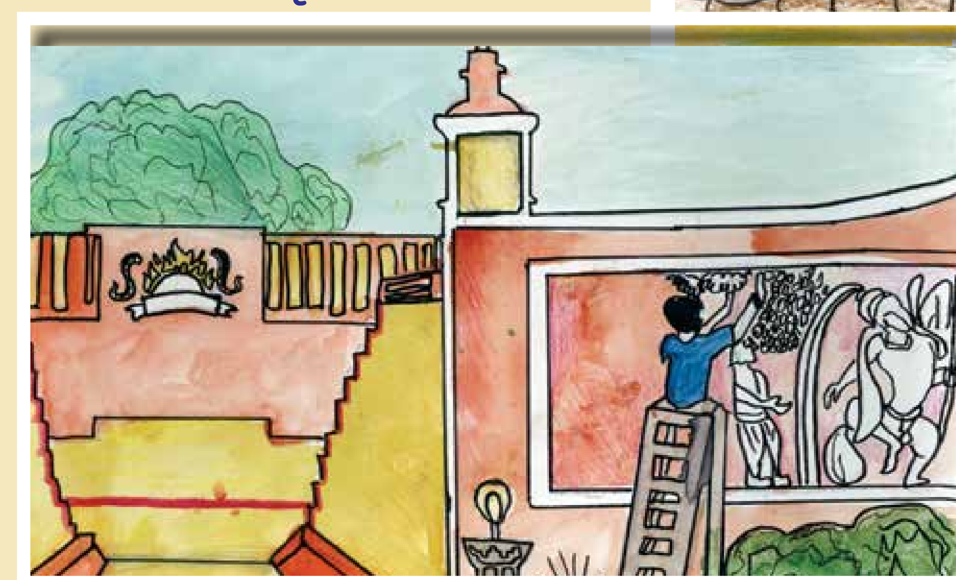

मुझे दवा की ज़रूरत ही कहाँ पड़ी?
मेरा 'इंसुलिन' तो सिंधिया स्कूल के छात्र हैं..!

प्रस्तुति : सार्थक अग्रवाल, रुद्र प्रताप दुबे, शौर्य अग्रवाल, शौर्य अवस्थी, अब्दुल कबीर, प्रत्यूष खेमचंदानी, युवान अगरवाल, मानस शर्मा, निधान पवैया

अब तक का सफर...

'उपलब्धि' का अब तक का सफर किसी रोमांचक यात्रा से कम नहीं है। प्रथम 'उपलब्धि' तो जैसे तीर्थयात्रा के समान है। एक-एक पृष्ठ वंदनीय है, हर रचना नींव की ईंट है और संपादक-मण्डल हर सदस्य भगीरथ है। श्री अमरनाथ दर का विचार एवं उद्देश्य छात्रों के हिन्दी सृजनात्मक एवं साहित्यिक पक्ष को सशक्त करना था। इस दूरदर्शी विचार को डॉ. बी. एस. भाकुनी ने प्रथम सम्पादक की हैसियत से अमलीजामा पहनाया। तत्कालीन विभाग अध्यक्ष श्री वी एस सक्सेना जी का मार्गदर्शन मिला। जो साहित्य परम्परा 'उपलब्धि' ने आरंभ की थी, आज भी वह परम्परा बदस्तूर जारी है।

नये सम्पादकों के साथ, नये साहित्यकारों के संग। डॉ. बी. एस. भाकुनी ने सम्पादक के रूप में सन् २००० से लेकर सन् २००७ तक 'उपलब्धि' के सात संस्करण निकाले। इसके बाद कमान संभाली श्री मनोज कुमार मिश्रा ने और सन् २००८ से लेकर सन् २०१३ तक उन्होंने भी अगले सात अंकों तक सम्पादन किया। सन् २०१४ में 'उपलब्धि' ने अपना रंग-रूप बदला। श्री जगदीश जोशी ने सन् २०२२ तक 'उपलब्धि' के नौ संस्करण निकाले और छात्रों एवं अध्यापकों को लिखने के विविध विषय प्रदान किये। 'उपलब्धि' के अब तक के तमाम संस्करण सहेजने योग्य हैं। इनमें तत्कालीन सिंधिया स्कूल की झाँकी दिखती है।

कुछ-कुछ रचनाएँ तो आपके हृदय में घर कर लेती हैं। जैसे- डॉ. बी. एस. भाकुनी की कहानी "सौ-सौ के नोट'' एक बार पढ़ लें तो भूले नहीं भूलेंगे। छात्र निखिल शरण की 'गहरी चोट', और चैतन्यराज प्रभु की कहानी 'थप्पड़'। प्रस्तुत है एक छोटी-सी यात्रा..

चलिए एक सफर पर.....

सौ सौ के दस नोट

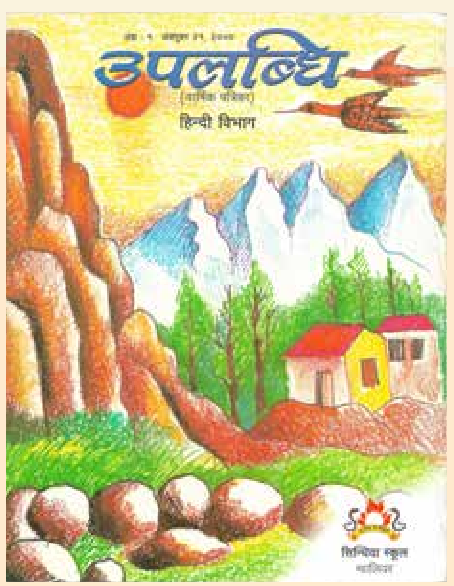

अंक १ : अक्टूबर २१, २०००

मुख पृष्ठ : किसी छात्र या अध्यापक का बनाया चित्र

पत्रिका की विशेष बातें:-

प्रधान सम्पादक : डॉ. बी. एस. भाकुनी   **छात्र सम्पादक :** नन्द किशोर अग्रवाल

तकनीकी सहयोग : श्री जितेंद्र जावले   **प्राचार्य संदेश :** श्री एन. के. तेवारी

उप प्राचार्य संदेश : श्री ओ. एन. दीक्षित   **विभागाध्यक्ष संदेश :** श्री वी. एस. सक्सेना

अनुक्रम, कुल २५ रचनाओं का संकलन कुल पृष्ठ ५०, मुखपृष्ठ आदि को मिलाकर सभी चित्र रंगीन, प्रत्येक पृष्ठ पर सुविचार यह अंक सहारा इण्डिया परिवार द्वारा प्रायोजित था।

पठनीय विषय सामग्री/रचनाएँ :-

प्राचार्य श्री ए. एन. दर साहब का सम्पादक-मण्डल से रोचक साक्षात्कार-पृष्ठ ८,
श्री जितेंद्र जावले जी का विचारोत्तेजक लेख "हिन्दुस्तानी" पृष्ठ १३,
श्री ओ. एन. दीक्षित की कविता "जिंदगी" पृष्ठ १५,
श्री वी. एस. सक्सेना जी का लेख कर्मण्येवाधिकारस्ते पृष्ठ १८
अंत में सत्र १९९९-२००० में हिन्दी विभाग की गतिविधियों का विवरण
हिन्दी में सबसे अधिक प्रतिभाशाली छात्र को प्रदान की जाने वाली आत्माराम शर्मा ट्रॉफी (सत्र १९९९-२०००) कुमार उत्कर्ष (महादजी)

साफल्यं ध्येयप्राप्त्यर्थ सोपानम, नैव ध्येयम् ।। सफलता मंजिल की ओर एक कदम है, मंजिल नहीं।

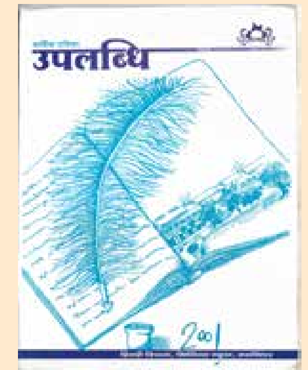

अंक २ : नवंबर, २००१

मुख पृष्ठ के ठीक पीछे:
श्रीमंत माधवराव सिंधिया जी का श्रद्धांजलि चित्र

पत्रिका की विशेष बातें:-
छात्र सम्पादक : शाश्वत पाण्डेय
कुल ५५ रचनाओं का संकलन
कुल पृष्ठ ८८ (७८ श्वेत-श्याम, ४ मुखपृष्ठ आदि रंगीन)

पठनीय विषय सामग्री/रचनाएँ:-
"गहरी चोट" निखिल शरण पृष्ठ पृष्ठ ६८

अंतिम पृष्ठ: श्री आत्माराम शर्मा चल वैजयंती के विजेता (२००१-२००२) का चित्र

अंक ५ : मार्च, २००५

पत्रिका की विशेष बातें:
छात्र उप-सम्पादक:
भरत कुमार अग्रवाल
अनुक्रम (गद्य खण्ड एवं पद्य खण्ड में विभक्त)
कुल ५८ रचनाओं का संकलन,
कुल पृष्ठ १०० (९६ श्वेत-श्याम, ४ मुखपृष्ठ रंगीन)

पठनीय विषय सामग्री/रचनाएँ:-
"कबाड़ी की साइकिल" रोचक कथा अमनदीप सिंह पृष्ठ १३
"कंप्यूटर और हम" (लेख) आदित्य, पृष्ठ १५ "नई सुबह" वैदिक कपूर, पृष्ठ ६१

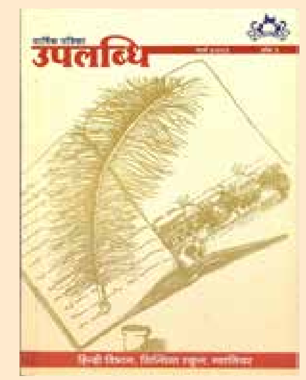

अंक ३ : मार्च, २००३

मुख-पृष्ठ: पूर्व संस्करण से

पत्रिका की विशेष बातें:-
छात्र उप-सम्पादक:
अभिमन्यु अग्रवाल
कुल ६१ रचनाओं का संकलन
कुल पृष्ठ ९८
(९४ श्वेत-श्याम ४ रंगीन)
अनेक रचनाएँ 'आतंकवाद' विषय को लिए हुए थी।
पठनीय विषय सामग्री/रचनाएँ:-
"क्या यही है हमारा अस्तित्व" कीर्ति आजाद पृष्ठ ७, "हमारा इको क्लब" सुजाता असलम पृष्ठ ७९, "पर्यावरण के अंगों के बीच का अंत:संबंध। प्राकृतिक रूप से इन अंगों में एक शांत अंत: संबंध होता है जिस पर हमारी पृथ्वी का अस्तित्व टिका है और पृथ्वी के अस्तित्व पर हमारा जीवन निर्भर है।"

अंक ६ : मार्च, २००६

मुख-पृष्ठ: कलम और अक्षर (श्री आलोक घोष)

पत्रिका की विशेष बातें:
छात्र उप-सम्पादक:
जयेश मंगलम सिंह,
कुल ६३ रचनाओं का संकलन
कुल पृष्ठ ८२ (७८ श्वेत-श्याम ४ मुखपृष्ठ)

पठनीय विषय सामग्री/रचनाएँ:
"हिमालय की ओर" रोमांचक पहाड़ी यात्रा श्री आलोक विरमानी पृष्ठ ३७ कविता "माँ" अनंत गुप्ता पृष्ठ ५५, "कम पैसों में लाजवाब खाना" प्रत्यूष कोटरीवाल की गुदगुदाने वाली कविता पृष्ठ ६३

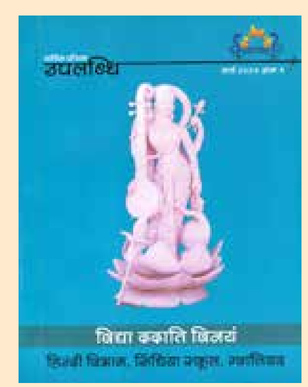

अंक ४ : मार्च, २००४

मुख पृष्ठ: सरस्वती प्रतिमा (गुलाबी आभा) हिन्दी अध्यापिका श्रीमती रक्षा सीरिया)

पत्रिका की विशेष बातें:
छात्र सम्पादक: भरत कुमार
कुल ५२ रचनाओं का संकलन
कुल पृष्ठ १०० (९४ श्वेत-श्याम, ४ मुख पृष्ठ (रंगीन))

पठनीय विषय सामग्री/रचनाएँ:
"यह लेख पढ़ना मना है" तरुण ढींगरा पृष्ठ ३८ "थप्पड़" श्री चैतन्यराज प्रभु की कहानी पृष्ठ ५० "आहुति" श्री अजय पूनिया (क्विज मास्टर) की कहानी पृष्ठ ५४, "महुआ" पं. आत्माराम शर्मा की मार्मिक कहानी पृष्ठ ८७

अंक ७ : मार्च, २००७

मुख पृष्ठ: पूर्व संस्करण का पुन: मुद्रण (श्री आलोक घोष)

पत्रिका की विशेष बातें:-
छात्र उप-सम्पादक: देवांग द्विवेदी
कुल ६९ रचनाओं का संकलन
कुल पृष्ठ ८४ (७८ श्वेत-श्याम ४ मुखपृष्ठ (रंगीन))
ध्रुव शर्मा (वर्तमान संगीत शिक्षक) सम्पादक मण्डल में

पठनीय विषय सामग्री/रचनाएँ:-
"एक सैनिक की आत्मकथा" रोहित नांगिया पृष्ठ २१ "संशोधन" अभिमन्यु सिंह पृष्ठ २५ "शांति" भूतपूर्व छात्र अंकित आनंद पृष्ठ २७ "बनाया बंदर", "जी नहीं टिक पाता.." हर्ष अग्रवाल की कविता पृष्ठ ५२ छात्रवास की एक हास्यास्पद घटना, समृद्ध वर्मा पृष्ठ ५६

प्रकृति उत विकृति चयनं कुरु ।। प्रकृति या विकृति, पसंद हमारी है।

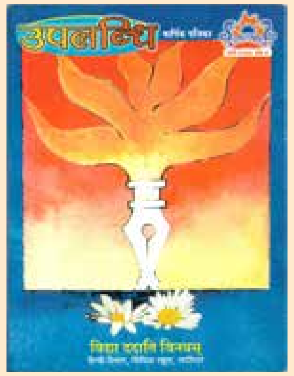

अंक ८ : मार्च, २००८

मुख-पृष्ठ: कलम एक ज्वाला व फूल (श्री आलोक घोष)
पत्रिका की विशेष बातें:
विभागाध्यक्ष: श्री वी. एस. सक्सेना
प्रधान सम्पादक:
श्री मनोज कुमार मिश्रा
छात्र उप-सम्पादक:अभिनंदन सिंह
कुल ४६ रचनाओं का संकलन
कुल पृष्ठ ८४ (७८ श्वेत-श्याम ४ मुखपृष्ठ (रंगीन))
पृष्ठ ३५ से ३८ रंगीन पृष्ठ: अधिकतर रचनाओं के अंत में कलाकृति से सजावट
पठनीय विषय सामग्री/रचनाएँ:- "जो दिल को छू जाये--" विनीत मित्तल की रचना से शुरुआत पृष्ठ ७"हिन्दी नाटक: एक सशक्त विधा" श्री वी एस सक्सेना पृष्ठ ४२

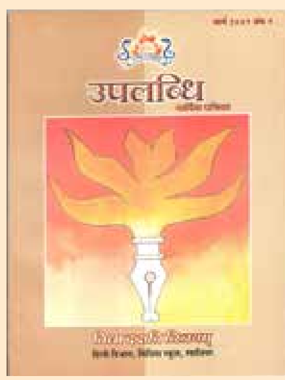

अंक ९ : मार्च, २००९

मुख पृष्ठ: पुन: वही कुछ नयेपन के साथ। (श्री आलोक घोष)
पत्रिका की विशेष बातें:-
छात्र उप-सम्पादक:
अभय विक्रम सिंह
कुल ६० रचनाओं का संकलन
कुल पृष्ठ ९० (८६ श्वेत-श्याम ४ मुखपृष्ठ (रंगीन))
पृष्ठ ४५ से ४८ रंगीन पृष्ठ:
पठनीय विषय सामग्री/रचनाएँ:
"माटी और आस्था"एक दिलचस्प दास्तान -वैष्णवी जे. जावले पृष्ठ ७ "किताबें: एक प्रेरणास्रोत" डॉ. गीता शुक्ला पृष्ठ- १६-१९ "वर्ण विचार" श्री धनंजय शर्मा पृष्ठ ३८ "छात्रों में बढ़ती अनुशासनहीनता" डॉ. बी. एस. भाकुनी पृष्ठ ५५

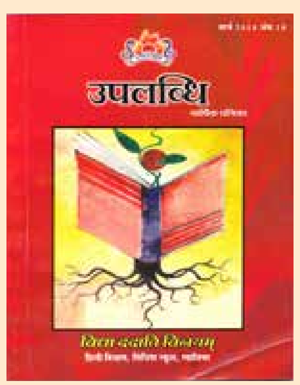

अंक १० : मार्च, २०१०

मुख पृष्ठ: पुस्तक से ज्ञान का मूल और ध्येय की प्राप्ति ।
(श्री आलोक घोष)
पत्रिका की विशेष बातें:
संरक्षक: श्री शमीक घोष
प्रधान छात्र सम्पादक:
समृद्ध अग्रवाल,
कुल ४८ रचनाओं का संकलन,
कुल पृष्ठ ९६ (९२ श्वेत-श्याम ४ मुखपृष्ठ रंगीन), पृष्ठ ४३ से ४६
पठनीय विषय सामग्री/रचनाएँ:-
"सन २०२० का भारत" अभय विक्रम सिंह की पड़ताल पृष्ठ ७, कार्टून "अखबार" यशराज नैन पृष्ठ- २३ "आत्मकथा: साहित्य की महत्वपूर्ण विधा" डॉ. गीता शुक्ला पृष्ठ- ५८
कार्टून "शर्माजी" पृष्ठ- ६५

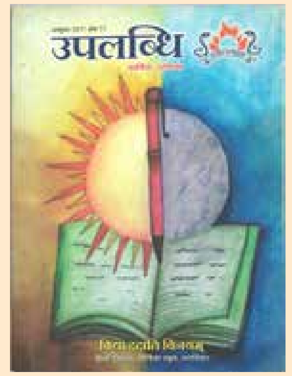

अंक ११ : अक्टूबर, २०११

मुख पृष्ठ: नया कलेवर, सुंदर मुखपृष्ठ, कलम से चमकता सूर्य (श्री राघव रामरायका)
पत्रिका की विशेष बातें:-
छात्र सम्पादक: वैष्णवी जावले
कुल ५७ रचनाओं का संकलन
कुल पृष्ठ ६४ (५८ श्वेत-श्याम ८ पृष्ठ रंगीन) प्रत्येक पृष्ठ पर "उपलब्धि २०११" मुद्रित
पठनीय विषय सामग्री/रचनाएँ:-
"पानी बचाओ" आदित्य चौधरी पृष्ठ १४ "हाय अँग्रेजी" रोचक एवं विचार योग्य लेख-वैष्णवी जे. जावले पृष्ठ १७ "शिवानी एवं उनका रचना संसार" शोधपरक लेख -डॉ. गीता शुक्ला पृष्ठ ४७ "सौ-सौ के दस नोट" मार्मिक कहानी -डॉ. बी.एस. भाकुनी पृष्ठ ५०

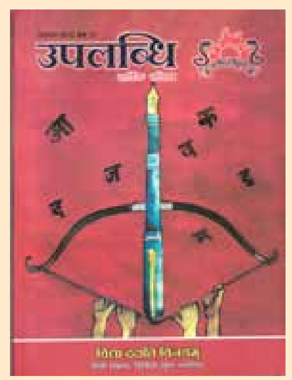

अंक १२ : दिसम्बर, २०१२

मुख पृष्ठ: सुंदर मुखपृष्ठ: कमान पर चढ़ी कलम (उमंग जैन)
पत्रिका की विशेष बातें:-
प्रधान सम्पादक:
श्री मनोज कुमार मिश्रा
छात्र सम्पादक:
पार्थ प्रताप सिंह पवई
कुल ४२ रचनाओं का संकलन
कुल पृष्ठ ६८ (६२ श्वेत-श्याम, ६ पृष्ठ रंगीन)
पठनीय विषय सामग्री/रचनाएँ:-
"कविता मेरी जिम कार्बेट की यात्रा" कविता 'दीवानों की हस्ती' से जुगलबंदी करती हुई -मोनीष चौधरी पृष्ठ २२ "कुत्ता और चिड़िया" अरुण फागुना, दसवीं पृष्ठ ४१ "ढूँढ खुशी" (चित्रांकन सहित) अखिल कुमार, ग्यारहवीं,पृष्ठ ४३

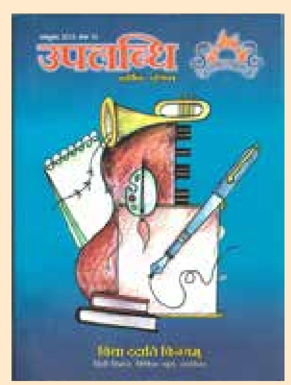

अंक १३ : अक्टूबर, २०१३

मुख पृष्ठ: सुंदर मुखपृष्ठ: पियानो, रंग-कूची, बाजा-पुस्तिका-कलम (समग्र)(हर्षराज गौड)
पत्रिका की विशेष बातें:-
छात्र सम्पादक: जतिन राय
कुल ६० रचनाओं का संकलन,
कुल पृष्ठ १०० (९२ श्वेत-श्याम ८ पृष्ठ रंगीन)
पठनीय विषय सामग्री/रचनाएँ:-
"मेरा नया स्कूल" चैतन्य जावले, छठवीं पृष्ठ १० "हर चमकने वाली चीज सोना नहीं होती" समाज के प्रत्येक परिप्रेक्ष्य में लेख, मान्या नागी, आठवीं पृष्ठ ११ "जीवन में सत्य का महत्व" आद्या मिश्रा, आठवीं लेख पृष्ठ १३ "कमीज" कविता, गोविंद केला, ग्यारहवीं पृष्ठ २१ "अमीर खुसरो की पहेलियाँ" पृष्ठ ६८- ६९

महान्तः खलु महातामारभ्याः ।। अच्छे उद्यमों की शुरुआत महान लोग ही करते हैं ।

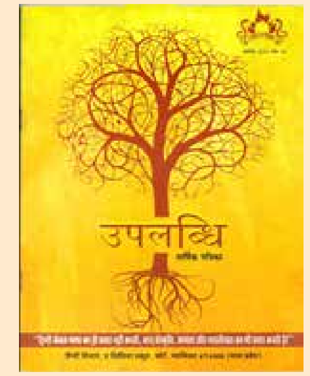

अंक १४ : नवंबर, २०१४

मुख पृष्ठ: नया कलेवर, डिजिटल मुखपृष्ठ (मृगांको घोष)
पत्रिका की विशेष बातें:
विभागाध्यक्ष:
श्री मनोज कुमार मिश्रा
सम्पादक: श्री जगदीश जोशी
प्रधान सम्पादक: आयुष दुबे
रिपोर्टर: आद्या मिश्रा
तकनीकी सहयोग: गैलेक्सी प्रिंटर्स
कुल ६१ रचनाओं का संकलन
कुल पृष्ठ ५६ (३२ श्वेत-श्याम, २४ पृष्ठ रंगीन) श्री वी. एस. सक्सेना को श्रद्धांजलि
पठनीय विषय सामग्री/रचनाएँ: "दंभी" अभिजीत नागपाल (यह कथा "कोर ज्ञान" का बिगड़ा रूप थाय) पृष्ठ १० "मंगल पर उप. लब्धि" आयुष दुबे, कक्षा बारहवीं पृष्ठ १७

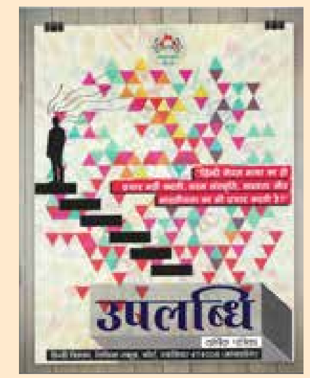

अंक १५ : अक्टूबर, २०१५

मुख पृष्ठ: शीर्ष में गोलाकृति में स्कूल लोगो, डिजिटल (मृगांको घोष एवं सूर्यांश गोयल)
पत्रिका की विशेष बातें:
संरक्षक: डॉ माधव देव सारस्वत
मुख्य सम्पादक: प्रियांश जैन
वरिष्ठ सम्पादक: सार्थक अग्रवाल
रिपोर्टर: आद्या मिश्रा
कुल ६१ रचनाओं का संकलन
कुल पृष्ठ ५६ (३२ श्वेत-श्याम २४ पृष्ठ रंगीन)
पठनीय विषय सामग्री/रचनाएँ:- कविता आकाश फोगाट कक्षा-IX। पृष्ठ ४ श्रीमंत माधवराव सिंधिया की याद में... डॉ ज्ञानराज माणिकप्रभु (पूर्वछात्र१९७४, माधव) पृष्ठ ९ "असाध्य सम्पन्न पर सफर जारी है .. श्रीमती रक्षा सीरिया (रंगीन पृष्ठ)

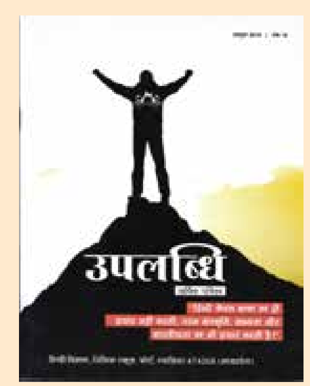

अंक १६ : अक्टूबर, २०१६

मुख पृष्ठ: पहाड़ की चोटी पर सिंधियन, डिजिटल मुखपृष्ठ
पत्रिका की विशेष बातें:
मुख्य सम्पादक: आयुष जैन
वरिष्ठ सम्पादक: सार्थक अग्रवाल
रिपोर्टर: प्रथम अग्रवाल
कुल ६७ रचनाओं का संकलन
कुल पृष्ठ ५६ (३२ श्वेत-श्याम, २४ पृष्ठ रंगीन) "गो गगन गो" पूर्व छात्र गगन खोसला के साहसिक अभियान के चित्र, संगीत जोड़ी एवं पूर्वछात्र मनमीत-हरमीत के स्वागत के चित्र,
पठनीय विषय सामग्री/रचनाएँ: अविस्मरणीय पल - श्रीमती अहिल्या शिंदे, अंतिम पृष्ठ के ठीक पहले: "स्वच्छ सिंधिया, स्वच्छ इंडिया" शीर्षक से श्रमदान के चित्र

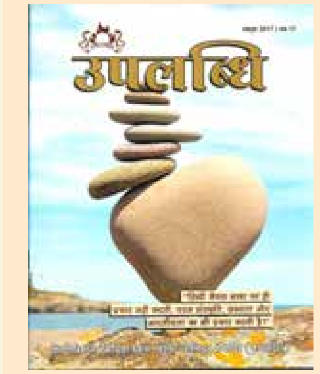

अंक १७ : अक्टूबर, २०१७

मुख पृष्ठ: मुखपृष्ठ अद्यतन/चित्र आधारित लगता है।
पत्रिका की विशेष बातें:
मुख्य सम्पादक: विपिन भगत
वरिष्ठ सम्पादक: प्रथम अग्रवाल
रिपोर्टर: सक्षम बंसल
कुल ८० रचनाओं का संकलन
कुल पृष्ठ ५६ (३२ श्वेत-श्याम २४ पृष्ठ रंगीन)
पठनीय विषय सामग्री/रचनाएँ:-
एवेरैस्ट विजेता डिकी डोलमा से मुलाकात, ऐवरैस्ट विजेता राधा देवी (१९९३) से साक्षात्कार - अदिति जोशी "स्कूल का आखिरी दिन" प्रिंस कुमार, र-इ, दौलत सदन अंतिम पृष्ठ के ठीक पहले: "श्री नितिन मुकेश (गोल्डन जुबली बैच) के स्वागत चित्र

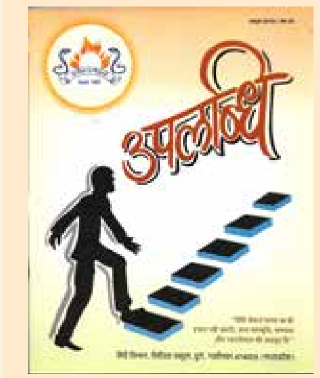

अंक १८ : अक्टूबर, २०१८

मुख पृष्ठ: मुखपृष्ठ डिजिटल (सीढ़ी चढ़ता छात्र) (फतेह वीर सिंह)
पत्रिका की विशेष बातें:-
मुख्य सम्पादक: अभिषेक माहौर
वरिष्ठ सम्पादक: प्रिंस कुमार
सह संपादक: युवराज सोलंकी, उत्सव जैन, संवाददाता: शिवांश बंसल, फोटोग्राफी: ऋत्विक कात्याल, कुल १०० रचनाओं का संकलन, कुल पृष्ठ ५४ (४४ श्वेत-श्याम २० पृष्ठ रंगीन), **पठनीय विषय सामग्री/रचनाएँ:-**माँ का लाड, शौर्य मंथन, पृष्ठ-११ आसमान में उड़ने दो 'फिल्म और रंगमंच का साकार रूप: अनूप' श्री अनूप जोशी जी से साक्षात्कार -सुप्रभा अधिकारी

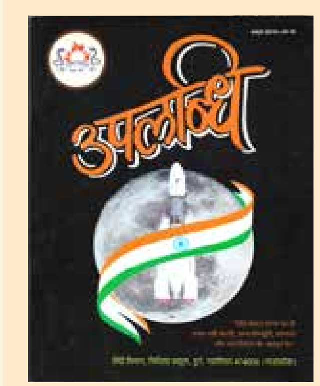

अंक १९ : अक्टूबर, २०१९

मुखपृष्ठ: डिजिटल चंद्रयान
पत्रिका की विशेष बातें:-
मुख्य सम्पादक: ऋत्विक कात्याल
सह संपादक: अथर्व करवा,
प्रशांत अग्रवाल
संवाददाता: हर्ष बंसल,
आयुष गोयल
कुल ५६ रचनाओं का संकलन
कुल पृष्ठ ६४ (४४ श्वेत-श्याम २० पृष्ठ रंगीन)
पठनीय विषय सामग्री/रचनाएँ:-
हमें बीमार कर रही पबजी की लत। अथर्व करवा, कक्षा १० पृष्ठ-१३, मैत्री मैच में फिर छात्र रहे विजयी - पृष्ठ १२ वार्षिक नाटक 'तुगलक' पर एक रिपोर्ट, वो स्कूल के दिन आज भी याद हैं मुझे, पूर्व छात्र, अनिल घई पृष्ठ २५-२७

प्रकृति उत विकृति चयनं कुरु ।। प्रकृति या विकृति, पसंद हमारी है ।

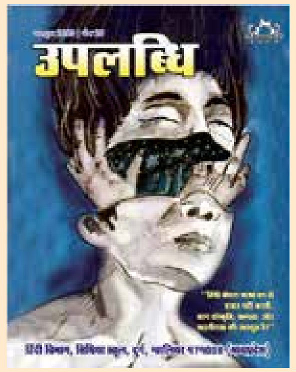

अंक २० : अक्टूबर, २०२०

डिजिटल संस्करण

मुख पृष्ठः बालक अपने हाथों से खुद को अपने में से अपने सिर को ऊपर खींचता हुआ। (सुखयोग सिंह, नैमसंग लिम्बू)

पत्रिका की विशेष बातेंः-

सम्पादक मण्डलः अथर्व करवा और अन्य कुल ३६ रचनाओं का संकलन, कुल पृष्ठ ४८

पठनीय विषय सामग्री/रचनाएँः ''एक इंसान तभी तक ---'' सुखयोग सिंह का लेख पृष्ठ-१३, "ऑन-लाइन क्लास" अर्णव जोशी, पृष्ठ २ गुलमर्ग की सुन्दरता, सुमित माहेश्वरी "बीस साल बीस सवाल" श्री विशेष सहाय से साक्षात्कार पृष्ठ १६-१८ अंतिम पृष्ठः- गोद में शिक्षा, आकल्पन नैमसंग लिम्बू

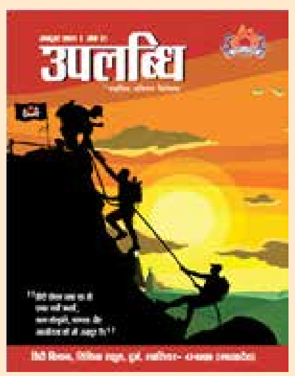

अंक २१ : अक्टूबर, २०२१

डिजिटल संस्करण

मुखपृष्ठः डिजिटल- सुंदर मुखपृष्ठ साहसिक अभियान विशेषांक

पत्रिका की विशेष बातेंः

शुभकामना संदेश- हैड ऑफ अकेडमिक्स, श्री राज कुमार कपूर मुख्य सम्पादकःसत्यम राज वरिष्ठ सम्पादकः आराध्य शिव शुक्ला, कुल ३६ रचनाओं का सं. कलन कुल पृष्ठ ६४

पठनीय विषय सामग्री/रचनाएँः "अभियान में अभियान" धीरेन्द्र शर्मा का लेख पृष्ठ-१३, "जीवन का मकसद समझा गई" श्री जगदीश जोशी पृष्ठ ७ २४-२५ "लद्दाख की सुंदरता" आशुतोष खेमका, ग्यारहवीं, "साहसिक अभियानों में मेरा अनुभव, रुद्राक्ष अग्रवाल, नौवीं

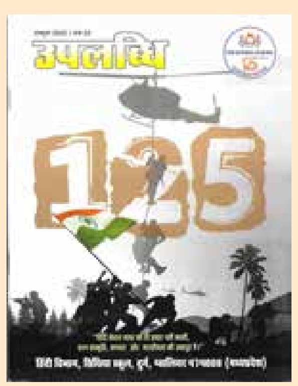

अंक २२ : अक्टूबर, २०२२

मुखपृष्ठः श्री धर्मेन्द्र मौर्य

पत्रिका की विशेष बातेंः

संरक्षकः श्री अजय सिंह

मुख्य सम्पादकः आराध्य शिव शुक्ला, वरिष्ठ सम्पादकः यश जैन

रिपोर्टरः पुलक बगारिया,

धर्मेन्द्र सिंह, कुल ६० रचनाओं का संकलन कुल पृष्ठ ६४ (२० पृष्ठ रंगीन, ४४ श्याम-श्वेत)

पठनीय विषय सामग्री/रचनाएँः- "पहाड़ों की समस्या भी पहाड़ जैसी" श्री जगदीश जोशी का लेख पृष्ठ २, "हमारे विद्यालय का १२५वाँ स्थापना दिवस.." शिवांश पटवारी पृष्ठ ६-७, "विद्यालय में मेरा पहला दिन" यश निठारवाल, कक्षा ८ पृष्ठ २२-२४ "मनभावन सावन" कुमार अभीक्षित नारायण, कक्षा ७

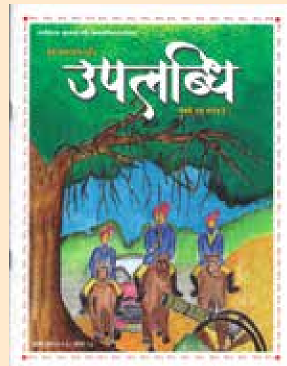

अंक २३ : अक्टूबर, २०23

मुखपृष्ठः मुख्य अतिथि की अगवानी करते सजीले घुड़सवार (श्री सोमनाथ दास, खुश तोड़ी)

पत्रिका की विशेष बातेंः-

कुल ८१ रचनाओं का संकलन

कुल पृष्ठ८४ सभी रंगीन

प्रधान सम्पादकः

श्री गणपत स्वरूप पाठक,

छात्र संपादकः विवेक शर्मा,

छायांकन : अविरल डालमिया,

पूर्णतः रंगीन १२५ वर्ष का उत्सव प्रदर्शित करती प्रत्येक पृष्ठ पर क्रम संख्या के साथ उपलब्धि और वर्ष अंकित **पठनीय विषय सामग्री/रचनाएँः-** निवर्तमान सम्पादक का विशेष लेख- मेरी उपलब्धि, आत्माराम ट्रॉफी की कहानी- श्री संदीप अग्रवाल पृष्ठ ४०-४१

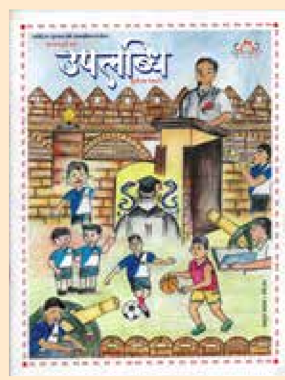

अंक २४ : अक्टूबर, २०२४

मुखपृष्ठः सिंधिया छात्र की विद्यालय में विकास-यात्रा (खुश तोड़ी)

मुख-पृष्ठ के ठीक पीछेः अभ्युदय प्रताप सिंह (दौलत) द्वारा बनाया गया मुखपृष्ठ

पत्रिका की विशेष बातेंः-

कुल ५० रचनाओं का संकलन

कुल पृष्ठ ६० पूर्णतः

छात्र संपादकः विवेक शर्मा

पठनीय विषय सामग्री/रचनाएँः- बच्चों का प्रिय शगलः पेपर मैशे जयवर्धन, नौवीं, दौलत साक्षात्कार यानिस और लिली से- पृथ्वी राजस्वरूप एवं ऋषित शर्मा स्थायी स्तम्भ-हमारे सहायकः हमारे कर्णधार मौलिक कविताएँ- कबीर त्रिपाठी, कृषव अग्रवाल, विख्यात भूटानी, असंख्य सिंह

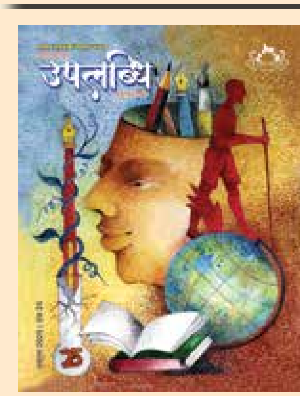

अंक २५ : अक्टूबर, २०२५

मुखपृष्ठः श्री आलोक घोष

मुख-पृष्ठ के ठीक पीछेः उपलब्धि का प्रथम संस्करण

पत्रिका की विशेष बातेंः

छात्र संपादकः रणवीर चौहान

कार्यकारी

सम्पादक- सार्थक अग्रवाल

पठनीय विषय सामग्री/रचनाएँः- उपलब्धि का अब तक का सफ़र, कविता रचना प्रतियोगिता के अंतर्गत कविताएँ, कहानी लेखन प्रतियोगिता के अंतर्गत कहानियाँ, दुर्ग जैव मण्डल, सो रहा है पेड़- गोपाल चतुर्वेदी, बड़े भाई साहब - निधान पवैया, दीया शर्मा, आपकी कहानी : चित्रों की जुबानी - सार्थक अग्रवाल

महान्तः खलु महातामारभ्याः ।। अच्छे उद्यमों की शुरुआत महान लोग ही करते हैं ।

प्रश्न-४ रचनात्मक लेखन

परीक्षा में कक्षा छठवीं के छात्रों से यह प्रश्न किया गया कि अगर बहुत तेज हवा चले और सभी के फोन हवा में उड़ जायें तो क्या होगा? छात्रों ने अपनी कल्पना-शक्ति से बहुत सुंदर और अनूठे उत्तर लिखे। पढ़िये कि किसने क्या लिखा है?

एक लड़के का नाम था गीतेश। उसे मोबाईल बहुत पसंद थे और तो और हवा भी पसंद है। दो-तीन दिन तक, वह 'रौबलौक्स', 'कॉल ऑफ दियुती', 'पॉकिट टांक', 'बीदजीएमआई' आदि खेलता रहा। इक दिन बहुत तेज आँधी आई थी। उस दिन मोबाइल उड़ते-उड़ते बच गया। मगर, अगले दिन उसका भी मोबाइल उड़ गया। फिर उसकी माँ ने उसे नया फोन दिलाया।

विवान उन्हारीया

कक्षा- छठवीं 'ए'

अगर ऐसा हुआ तो दुनिया अभी से ५० प्रतिशत अच्छी हो जायेगी। लोग और काम करने लगेंगे। बिजली का बचाव होगा। दुनिया में हरियाली होगी। मोबाइल टावर के हटने के चलते चिड़िया की समस्या सुलझ जायेगी। लोग एक-दूसरे से मिलना चाहेंगे और चिट्ठी भेजेंगे। सब सुखी रहेंगे।

मेधांश गुप्ता

कक्षा- छठवीं 'ए'

जब मैं और मेरे दोस्त एक दिन घर जा रहे थे, तब अचानक से एक भयंकर बवंडर आया और सबके मोबाइल फोन उड़ गये तो सब लोग चिन्तित हो गये। वे सब उस बवंडर के पीछे भागने लगे, अपने फोन लेने के लिए। कुछ लोगों को तो जमीन पर और कुछ लोगों को अपने फोन रोड पे गिरे पड़े मिल गए। लेकिन और सब लोगों के उड़ गए। मुझे और मेरे दोस्तों को समझ ही नहीं आया कि क्या करें? तो हम लोग भागते-भागते घर पहुँच गए और वहाँ हमारे मम्मी-पापा के पास भी फोन नहीं थे। फिर हमें पता चला कि बिना फोन की जिंदगी कैसी होती है। उस दिन मुझे बहुत मजा आया क्योंकि उस दिन हम सारे दोस्त क्रिकेट खेले। उस दिन बहुत शांति भी थी क्योंकि लोग फोन नहीं चला रहे थे।

दिव्यांश नेवटिया

कक्षा- छठवीं 'ए'

हवा चलने से फोन उड़ने पर सारे लोग आश्चर्य में पड़ जायेंगे कि इतनी तेज हवा कहाँ से आई? हर जगह हंगामा हो जाएगा। लोग पागल होने लगेंगे। जिन लोगों के पास पी.सी. होंगे, वे अपने-अपने पी.सी. को देखेंगे। पूरी दुनिया में कम से कम १० प्रतिशत लोग बहुत नाराज होंगे। फिर रात होते ही सबको अपने फोन मिल जायेंगे तो सभी लोग हमेशा आश्चर्य में रहेंगे कि इतनी तेज हवा कहाँ से आई?'' और सारे फोन वापस कैसे आये?

विवान गुप्ता

कक्षा- छठवीं 'ए'

एक बार की बात है कि एक बार बहुत तेज हवा आई और सारे फोन उड़ गए। इतनी भगदड़ मच गई कि सारे लोग एक-दूसरे का मोबाईल फोन अपना समझ रहे थे। जैसे ही, हवा रुकी सारे लोग शोर मचाने लगे कि यह मेरा मोबाइल है। इसी तरह से सारे लोग लड़ाई करने लगे।

सार्थक अग्रवाल

कक्षा- छठवीं 'ए'

प्रकृति उत विकृति चयनं कुरु ।। प्रकृति या विकृति, पसंद हमारी है ।

हिन्दी साहित्य सभा : गतिविधियाँ

मध्य वर्ग हिंदी वाग्मिता प्रतियोगिता

समय: ६:३० सायं स्थान: सभा-भवन

सदनवार स्थिति:

१. जयाजी २. दौलत संयुक्त माधव ३. जीवाजी

सर्वोत्तम वक्ता:

गद्य खंड	पद्य खंड
१. ऋषभ अग्रवाल	१. स्वराज संतोष महादिक
२. आरव गर्ग	२. अभियोध्या शर्मा

मध्य वर्ग हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता

सदनवार स्थिति:

१. महादजी २. जजाजी ३. जयप्पा

सर्वोत्तम वक्ता:

पूल 'अ'	पूल 'ब'
१. कुमार अभिषेक नारायण	१. नमन जैन
२. कृषिव अग्रवाल	२. आदि देव गोयल

कनिष्ठ वर्ग हिंदी वाग्मिता प्रतियोगिता

सदनवार स्थिति:

१. कनेरखेड़ २. जंकोजी ३. दाताजी

सर्वोत्तम वक्ता:

गद्य खंड	पद्य खंड
१. चिराग राज गोयल	१. स्मयान बत्रा
२. सात्विक मित्तल	२. कृष्णम बाजोरिया

ताराचंद स्मृति निबंध लेखन प्रतियोगिता

समय: ३:१५ सायं स्थान: कक्षा कक्ष

मध्य वर्ग:	वरिष्ठ वर्ग:
१. कृष्णम बाजोरिया	१. कुमार अभिक्षित नारायण
२. अनंत गुप्ता	२. शाश्वत मोदी
३. अर्पित लोहिया	३. मयंक जिंदल

कनिष्ठ वर्ग अंतर्सदनीय वाद-विवाद प्रतियोगिता

(सभा-भवन) कुल अंक:

सदनवार स्थिति:

प्रथम स्थान - कनेरखेड़ सदन (२१०.५ अंक)
तृतीय स्थान - दत्ताजी सदन (२०१ अंक)

सर्वोत्तम वक्ता:

प्रथम: हर्षित अग्रवाल (विपक्ष), कक्षा ८, नीमाजी सदन
द्वितीय: अर्पित लोहिया (पक्ष), कक्षा ८, कनेरखेड़ सदन
तृतीय: विनायक अग्रवाल (समाहार एवं खंडन), कक्षा ८, दत्ताजी सदन

हिंदी वार्षिक नाटक : एक और द्रोणाचार्य

स्थान: शुक्ला मेमोरियल खुला थिएटर

वरिष्ठ वर्ग हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता

सदनवार स्थिति:

प्रथम - जयाजी सदन
द्वितीय - दौलत सदन
तृतीय - महादजी सदन

सर्वोत्तम वक्ता:

१. कुमार अभिक्षित नारायण
२. अर्णव जोशी एवं युवराज सेठिया

वरिष्ठ वर्ग वाग्मिता प्रतियोगिता

सदनवार स्थिति:

प्रथम - दौलत सदन
द्वितीय - जयाजी सदन
तृतीय - जयप्पा सदन

सर्वोत्तम वक्ता:

गद्य खंड	पद्य खंड
१. दिवित देसवाल	१. अथर्व तिवारी
२. आयुष्मान	२. रुशिल राजन
३. सुशील कुमार	

एक रिपोर्ट

जूनियर अंतर्सदनीय वाद-विवाद प्रतियोगिता

विगत १८ जनवरी को, हिन्दी साहित्य सभा के तत्वावधान में, अंतर्सदनीय कनिष्ठ वर्ग हिन्दी वाद- विवाद प्रतियोगिता सम्पन्न हुई। इसमें जनकोजी एवं नीमाजी और कनेरखेड़ एवं दत्ताजी के प्रतिभागियों के मध्य विषय के पक्ष व विपक्ष में आमना-सामना हुआ। विषय था-परीक्षा में प्राप्त अंक छात्र की योग्यता का सही मापदण्ड है।

पहले मुकाबले में विपक्ष में बोलते हुए, जहाँ नीमाजी सदन, जनकोजी सदन पर भारी पड़ा। वहीं दूसरे मुकाबले में, पक्ष में बोलते हुए कनेरखेड़ सदन, दत्ताजी सदन के वक्ताओं पर बढ़त बनाने में कामयाब रहा।

अतुल्य कृष्णा, हर्षित अगरवाल, वेदांग गोयनका, अर्पित लोहिया, रुद्र प्रताप दुबे, मानविक कपूर एवं विनायक अग्रवाल आदि वक्ताओं ने अपने भाषा-कौशल से सभी श्रोताओं को काफी प्रभावित किया।

सभापति श्री स्वरित वार्ष्णेय ने सभागार में बैठे छात्रों को भी अपने विचार प्रकट करने आमंत्रित किया। श्रोताओं में से, अनंत गुप्ता ने विषय के पक्ष में अपने विचार रखे और विपक्ष के वक्ताओं से एक ऐसा सवाल किया कि कोई उसका सही उत्तर नहीं दे सका। बाद में, प्राचार्य महोदय ने उसका सही उत्तर दिया। हिन्दी साहित्य सभा के सचिव श्री युवराज सेठिया ने इन उभरते वक्ताओं को कुछ महत्त्वपूर्ण सुझाव दिए, जिससे कि वे आगे चलकर और बेहतर ढंग से वाद-विवाद में अपना वक्तव्य सटीक प्रस्तुत कर सकें।

प्रतियोगिता के अंत में अपने वक्तव्य में, प्राचार्य महोदय ने सभी प्रतियोगियों की भूरि-भूरि प्रशंसा की और कहा कि वे उनमें सिंधिया स्कूल के भविष्य के प्रखर वक्ताओं को देख रहे हैं। उन्होंने छात्रों को विषय संबंधी कई बातें समझाते हुए कहा कि हम रोज क्या करते हैं, इस पर बहुत कुछ निर्भर करता है। क्या कक्षा में आने से पहले विषयवस्तु को पढ़ा? कक्षा में पढ़ने के उपरांत आगे क्या पढ़ना है- उसकी तैयारी करते हैं? यदि आप सभी छात्र-धर्म का अनुपालन करेंगे तो आपको अंकों की कभी कमी नहीं पड़ेगी। बहाना बनाने के बजाय हमें अवसर तलाश करने चाहिए। इस प्रकार, उन्होंने सभी को शुभकामनाएँ दीं।

प्रतियोगिता में सदनों की स्थिति इस प्रकार रही:-

प्रथम- कनेरखेड़ सदन (२१०.५ अंक)
द्वितीय- नीमाजी सदन (२०६.५ अंक)
तृतीय- दत्ताजी सदन (२०१ अंक)
चौथा- जनकोजी सदन (१९६.५ अंक)

प्राप्त अंकों के आधार पर सर्वोत्तम वक्ताओं को प्राचार्य महोदय ने प्रशस्ति-पत्र प्रदान कर पुरस्कृत किया।

प्रथम पुरस्कारदृ - हर्षित अगरवाल (विपक्ष) कक्षा आठवीं, नीमाजी सदन

द्वितीय पुरस्कार- अर्पित लोहिया (पक्ष) कक्षा आठवीं, कनेरखेड़ सदन

तृतीय पुरस्कार-विनायक अग्रवाल (समाहार एवं खण्डन) कक्षा आठवीं, दत्ताजी सदन

इस अवसर पर, श्री धीरेन्द्र शर्मा, श्री सोमराजन के एस., श्री मुकेश चावला, श्री हसरत अली, श्री राहुल भारद्वाज, श्री सोमनाथ दास आदि अध्यापक उपस्थित थेय इस प्रतियोगिता के निर्णायक थे- श्री जगदीश जी जोशी, श्रीमती रक्षा सीरिया एवं हिन्दी विभागाध्यक्ष श्री मनोज कुमार मिश्रा। प्रतियोगिता के संयोजक थे-श्री गणपत एस. पाठक ।

हिन्दी विभाग

दाएँ छोर से : श्रीमती रक्षा सीरिया, श्री मनोज कुमार मिश्रा (विभागाध्यक्ष), श्री अजय सिंह (प्राचार्य), श्री धीरेन्द्र शर्मा (डीन-कोकरिकुलर), श्री जगदीश जोशी, श्री गणपत स्वरूप पाठक

छात्र संपादक मण्डल

दाएँ छोर से : रणवीर चौहान (मुख्य संपादक), श्रीमती रक्षा सीरिया, श्री आलोक घोष, श्री राज कुमार कपूर (डीन-आई.सी.टी.), श्री अजय सिंह (प्राचार्य), श्री मनोज कुमार मिश्रा (विभागाध्यक्ष), श्री धीरेन्द्र शर्मा (अधिष्ठाता-पाठसह गतिविधि), श्री गणपत स्वरूप पाठक (प्रधान संपादक), श्री जगदीश जोशी

पिछली पंक्ति : अनंत गुप्ता, सहर्ष सिंह, शौर्य अवस्थी, प्रत्यूष अग्रवाल, श्लोक शर्मा, खुश टोड़ी, नैतिक मोर, देवम गर्ग, सार्थक अग्रवाल (कार्यकारी संपादक), गर्वित अग्रवाल

आपकी कहानी चित्रों की जुबानी

दायें से : युवान अग्रवाल, शौर्य अवस्थी, श्री आलोक घोष, श्री अजय सिंह (प्राचार्य), सार्थक अग्रवाल, मानस शर्मा, रुद्रप्रताप दुबे

पिछली पंक्ति : निधान पवैया, अब्दुल कबीर, शौर्य अग्रवाल

नन्हें कलमकार : रजत जयंती वर्ष विशेष

दाएँ छोर से : रणवीर चौहान (मुख्य संपादक), श्री गणपत स्वरूप पाठक (प्रधान संपादक), श्री मनोज कुमार मिश्रा (विभागाध्यक्ष), श्री अजय सिंह (प्राचार्य), श्री धीरेन्द्र शर्मा (अधिष्ठाता-पाठसह गतिविधि), सार्थक अग्रवाल (कार्यकारी संपादक), अर्जुन कोठारी

पिछली पंक्ति में : अभिषेक शिवहरे, अनंत गुप्ता, राहत पनवर, हंशिता मानकर, मानविक नागा, गर्वित अग्रवाल, हर्षप्रीत कौर, भावनी जैन, देवांश भूटानी, छवि चावला

श्री आत्माराम शर्मा चल वैजयन्ती सन् २०२४-२५ के विजेता

स्वरित वार्ष्णेय (जयाजी)

(उपर्युक्त ट्रॉफी, हिन्दी में सर्वाधिक प्रतिभाशाली छात्र को प्रदान की जाती है।)